गूजरात विद्यापीठ ग्रन्थावली — पु० ५८

हिन्दी पाठावली

दूसरी किताब

सम्पादक

गिरिराजकिशोर
नरेन्द्र अंजारिया

गूजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद – १४

प्रकाशकका निवेदन

अपनी परीक्षाओंके लिये हमने पाठों, काव्यों और कहानियोंके संग्रह तैयार करनेका तय किया था। हमने कहानियोंके संग्रह तो अपनी चार परीक्षाओंके लिये तैयार कर दिये हैं; और इस संग्रहसे हम पाठों और काव्योंके संग्रहका काम भी पूरा करते हैं। यह संग्रह —पाठावली भाग २— हमारी तीसरी परीक्षाके लिये है।

ये संग्रह हमारी आवश्यकताओंको तो पूरा करते ही हैं, मगर स्कूलों और दूसरे हिन्दी सीखनेवालोंके लिये भी उपयोगी हैं।

इस संग्रहमें पाठों और काव्योंकी पसन्दगीमें हमने भाषाकी सरलता और उसके चलतेपनका खयाल रखा है।

राष्ट्रभाषाके विकासमें अहिन्दी-भाषी लेखकोंका भी एक विशेष स्थान है। इस बातको खयालमें रखकर हमने इस संग्रहमें अहिन्दी-भाषी लेखकोंकी कृतियाँ भी ली हैं।

जिन साहित्यिकोंने अपनी रचनाएँ लेनेकी हमें मंजूरी दी है उनके हम बड़े आभारी हैं। उनके ऐसे सहकारसे ही यह किताब तैयार हो सकी है।

इस किताबके तैयार करनेमें जिन प्रचारक मित्रोंने सहायता की है उनके भी हम आभारी हैं।

गूजरात विद्यापीठ,
अहमदाबाद – १४
ता० १०-६-'५४

अनुक्रमणिका

पहली बार, प्रति १००००　　दूसरी बार, प्रति १००००

तीसरी बार, प्रति १५०००

कीमत १-४-०　　सितंबर, १९५५

मुद्रक : जीवणजी डाह्याभाई देसाई, नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-१४

प्रकाशक : मगनभाई प्रभुदास देसाई, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-१४

कठोर कृपा

[श्री 'घुमक्कड़']

[काका कालेलकरका नाम तो साहित्यमें दिलचस्पी रखनेवाला हर कोई आदमी जानता होगा। इस पाठके लेखक श्री 'घुमक्कड़' काका कालेलकर ही हैं। 'सबकी बोली' नामकी मासिक पत्रिकामें आप अक्सर इसी उपनामसे लिखा करते थे। यह उपनाम आपके लिये बहुत उचित है। आपको प्रवासका बेहद शौक है। आपने क़रीब क़रीब सारे हिन्दुस्तानकी यात्रा की है। आप पूर्व अफ्रीका और योरप भी हो आये हैं। आप भारतीय संस्कृतिके सच्चे उपासक हैं। मातृभाषा मराठी होते हुए भी गुजराती आपकी मातृभाषा-सी हो गई है और आपने इसमें लिखा भी खूब है। हिन्दीमें भी आप कभी कभी लिखते रहते हैं। आपकी मशहूर किताबें ये हैं — स्मरण-यात्रा, हिमालयका प्रवास, उत्तरकी दीवारें, उस पारके पड़ोसी, जीवनका काव्य, बापूकी झाँकियाँ वगैरा। आजकल आप देशके आदि-वासी लोगोंकी सेवामें लगे हुओ हैं। साथ-साथ गांधी-स्मारकका काम भी कर रहे हैं।]

किसी शहरमें एक अच्छा खानदान रहता था। उसमें चार भाई थे। उनकी जायदाद व धन-दौलत बरबाद हो चुकी थी। चारों भाई हुनरमंद व पढ़े-लिखे थे, फिर भी वे अपनी पुरानी खानदानी इज्ज़तके कारण कहीं कुछ नौकरी-चाकरी या कामधंधा नहीं कर पाते थे। घरमें ग़रीबी दिन-ब-दिन बढ़ रही थी। बीवी-

बच्चोंका सारा जेवर भी छिपे-छिपे कम दामों पर उन्होंने बेच डाला। आखिर एक दिन ऐसा आया कि घरमें कुछ भी न बचा और खाने-पीनेके लाले पड़ने लगे। अब क्या किया जाय?

उनके घरके पास बगीचेमें सहिजन (मुनगा) का एक पेड़ था। मौसमके दिन थे। बड़े बड़े लंबे और हरे-हरे सहिजन लटक रहे थे। जब शाम हो जाती और चारों तरफ़ कुछ सन्नाटा-सा छा जाता, तो उन भाइयोंमें से कोई एक उस पेड़ पर चढ़ जाता और फलियोंको तोड़कर नीचे गिरा देता। कुछ रात बीते एक कुँजड़ी आती और सहिजन खरीद कर ले जाती। उनसे जो थोड़ेसे पैसे मिल जाते उन्हीं पर उस परिवारका गुजर चलता।

दीवालीके बाद, एक दिन, उनका कोई एक रिश्तेदार उनके यहाँ आया। उसे इन लोगोंकी बुरी हालतका पता न था। जब भोजन तैयार हुआ तो बड़े भाईने बहाना लेकर कहा कि आज मेरा सोमवार है, खाना न खाऊँगा। दूसरेने कहा, 'मेरे पेटमें दर्द उठ रहा है, डॉक्टरने खानेको मना किया है।' तीसरे भाईका कहना था कि उसे अपने दोस्तके यहाँ रातको दावतमें जाना है। वह भी शरीक न हुआ। सबसे छोटा भाई घरमें आये हुए नये मेहमानके साथ खाना खाने बैठा। दो थालियाँ सजायी गयीं। जब दोनों खाने बैठे तो बूढ़ी माँ मेहमानसे खानेका खूब आग्रह करती, लेकिन अपने छोटे लड़केको जरा भी न पूछती और परोसनेमें कंजूसी बताती। वह

लड़का भी सधा हुआ था । कोई चीज़ परोसनेसे पहले ही हाथ हिलाकर कह देता—'मुझे नहीं चाहिये ।'

इस तरह दो चार भोजन करने पर मेहमान ताड़ गया कि ये लोग ग़रीबीके शिकार हो रहे हैं । फ़ाक़ा-कशीके मारे घरकी हालत खराब है । खाने-पीनेकी तकलीफ़ बढ़ गयी है, फिर भी इन्हें अपनी कुछ फ़िक्र नहीं है । किसी तरह उस दिन रातका खाना खाकर वह मेहमान बरामदेमें सो गया । सो क्या गया, उसने सोनेका ढोंग रचा । क़रीब दस बजे रात गये कुँजड़ी आयी । बड़े भाईने बड़ी सावधानीसे, बिल्लीकी तरह दबे पैरोंसे, पेड़पर चढ़कर सहिजनकी काफ़ी फलियाँ तोड़ीं । कुँजड़ी जानती थी कि इनकी इस वक़्त ग़रज है, वह जो दाम देगी वही ले लेंगे, ज्यादा पैसा उससे न माँगेंगे ।

जब बड़ा भाई टोकरीमें सहिजन लेकर कुँजड़ीके पास आया, तो उसने दाम कम कर दिया, और कहा: 'आजकल लोग सहिजनकी परवाह ही नहीं करते हैं, मुझे भी बाजारमें मुनाफ़ा नहीं मिलता । अब मैं तुमको पहलेकी तरह ज्यादा क़ीमत नहीं दे सकती । तुम्हारी ग़रज़ हो तो लो, नहीं तो मैं यह चली ।' बड़े भाईने मुँहपर हाथ रखकर कहा, 'तुम जितना देना चाहो दे दो, मगर ज़ोरसे मत बोलो । बरामदेमें हमारे मेहमान सो रहे हैं, जाग पड़ेंगे ।' कुँजड़ीने इस मौक़ेसे लाभ उठाकर उन फलियोंका दाम और भी घटा दिया । लाचार होकर बड़े भाईको उतने ही पैसे लेने पड़े जितने कुँजड़ीने दिये ।

थोड़ी देरमें सारा मामला शान्त हो गया। कुँजड़ी चली गयी। चारपाइयोंपर सब लोगोंके जोर जोरसे खर्राटे सुनायी पड़ने लगे। लेकिन मेहमान तो जाग ही रहा था। वह दूरन्देश तो था ही। उसने सोचा—'यह कितना अच्छा प्रतिष्ठित खानदान है! झूठी और बनावटी इज्ज़तके खयालसे ये नौजवान लड़के खाने-पीनेकी तकलीफ़ बरदाश्त कर रहे हैं, और इस मामूली सहिजनके झाड़के भरोसे अपना गुज़ारा कर रहे हैं।' वह चुपचाप उठा। बरामदेके एक कोनेमें पड़ी हुई कुल्हाड़ी उसने उठा ली। वह बिना किसी आहटके बगीचेमें उस सहिजनके पेड़के पास पहुँचा और पेड़को जड़के पाससे काटकर धरती पर गिरा दिया। 'अब इस घरमें मेरा रहना ठीक नहीं' यह सोचकर पौ फटनेसे पेश्तर अँधेरे-अँधेरे वह मुसाफ़िर मेहमान वहाँसे चल दिया।

सवेरा हुआ। बड़ा भाई उठकर देखता क्या है कि मेहमान बरामदेसे ग़ायब है और बगीचेमें सहिजनका पेड़ कटा हुआ पड़ा है। घरको सहारा देनेवाले किसी बड़े बुज़ुर्गके मरनेसे जो मातम छा जाता है, वैसा ही उस परिवारमें मातम फैल गया। घरकी बुढ़िया कहने लगी, यह नास-मिटेका कहाँसे आया था? यह रिश्तेदार नहीं, मेहमान नहीं, कोई पूरब जनमका हमारा दावेदार दुश्मन था। अगर इसे हमारी बुरी हालत पर तरस आया था, तो चुपचाप हमारे घर आठ-दस मन अनाज भेज दिया होता।

हमारे परिवारका एकमात्र सहारा सहिजनका पेड़ इसने क्यों काट डाला? अब क्या होगा, ईश्वर!

बड़े भाईने बुढ़ियासे कहा — अम्माँ, जब तक हमारा चला, घरकी पुश्तैनी इज़्ज़त बचायी। न किसीकी नौकरी की, न किसीके आगे मददके लिये हाथ फैलाया। मगर अब आगेका गुज़ारा चलना मुश्किल है। कहीं-न-कहीं काम ढूँढ़ना ही पड़ेगा।

उस बस्तीमें चारों भाइयोंकी अच्छी इज़्ज़त थी। अपने खानदान और अपनी ईमानदारीके लिये वे काफ़ी मशहूर थे। जहाँ जाते वहीं लोग उनसे अच्छा बर्ताव करते। एक बड़े धनी-मानी क़दरदाँने बड़े भाईको अपने यहाँ नौकरीमें इज़्ज़तके साथ रख लिया। दूसरे भाई भी कहीं-न-कहीं काम पर लग गये।

एक साल हो गया। चारोंकी हालत अच्छी है। घरका कारबार भी ठीक चल रहा है। घरमें दूध-घीकी कमी नहीं है।

दूसरी दीवाली आयी। वही मेहमान फिरसे उनके यहाँ आया। उसने क़बूल किया कि आँगनका वह पेड़ उसीने कुल्हाड़ीसे काट कर गिरा दिया था। उस कठोर कर्मके पीछे उसके दिलमें नेकनीयती थी। कोई खराब इरादा न था। घरके लोग भी यह अच्छी तरह जान गये थे। उन चारों भाइयोंने बड़े प्रेमसे अपने नेक-क़दम मेहमानकी खासी खातिरदारी की और उसे विदा करते वक़्त कहा — उस दिन आपने हमारा सहिजनका पेड़ नहीं

काटा, मानो हमारी काहिली और बदक़िस्मतीको काटकर फेंक दिया था। अगर आप हमपर तरस खाकर दस-पाँच मन अनाज हमारे घर भेज देते तो हम और भी नीचे गिर जाते, पूरे बुज़दिल बन जाते। आपने हमारे बग़ीचेका यह पेड़ गिराकर हमारी गिरी हुई क़िस्मतको ही ऊँचा उठा दिया। दुनियामें भाई-बन्द हों तो ऐसे हों।

सवाल

(१) ख़ानदानकी दुर्दशाका वर्णन कीजिये।
(२) यह ख़ानदान अपना गुज़ारा कैसे करता था?
(३) मेहमानने साहिबजनके पेड़को क्यों काट डाला?
(४) इस कहानीका आपके मन पर क्या असर पड़ता है?

२

हीरा और कोयला

[श्री रायकृष्णदास]

[आपका जन्म सन् १८९२में काशीमें हुआ। आप हिन्दीके बड़े प्रेमी हैं। आप एक अच्छे गद्यलेखक हैं। आपकी शैली कटाक्ष-मय है। पुरातत्त्वके आप अच्छे अभ्यासी हैं।]

हीरा — मेरे पास तू कैसे?

कोयला — क्यों, तेरा और मेरा तो जनमका साथ है।

हीरा — जनमका साथ है! चल हट, दूर हो यहाँसे।

कोयला — तू मेरी बात झूठ मानता है? अरे, हम सगे भाई हैं।

हीरा—क्या कहता है? चोरी और सीना-जोरी। अभी तक जनमका साथी बनता था, अब भाई बनने लगा। मैं गोरा-चिट्टा, तू काला-कलूटा। भला कौन कहेगा, तू मेरा भाई है?

कोयला—अरे, मैं तेरा सगा ही नहीं, सगा बड़ा भाई हूँ। एक ही पेटसे पहले मेरा जनम होता है, तब तेरा।

हीरा—तभी न हम दोनों एकसे हैं!

कोयला—यह तो ईश्वरीय देन है। क्या देव और दानव भाई नहीं?

हीरा—सोलह आने सच। लेकिन दानव तू ही हुआ, क्योंकि मेरा बड़ा बनता है।

कोयला—कौन दानव है और कौन देव, यह तो कर्मसे विदित होगा। अपने मुँहसे कहनेकी क्या आवश्यकता? फिर देवताओंके अनुयायी ही असुरोंकी इतनी निन्दा करते आये हैं। यदि देखा जाय तो बेचारे असुर सदा ही देवताओंसे छले गये हैं।

हीरा—अच्छा रहने दे अपने पास अपनी दार्शनिकता। आ, हम अपनी अपनी करनी तो देख लें कि तू मेरा भाई होने योग्य है या नहीं।

कोयला—बहुत ठीक, बहुत ठीक, तुझे ही अपनी बड़ाईका बड़ा घमण्ड है। तू ही अपने गुण कह चल।

हीरा—बनता तो है मेरा सहोदर, पर तुझे मेरे गुण तक विदित नहीं। न सही, पर क्या तेरी आँखें फूट गई हैं? पहले तो मेरा रूप ही देख। यदि मुझमें और गुण

न हों तो इतना ही मेरी बड़ाईके लिये बहुत है—जहां रहता हूं, सूरजकी तरह चमकता हूं, रंग-बिरंगी किरणें मुझमें से निकला करती हैं। देखनेवालोंकी आंखें खुल जाती हैं। तबीयत हरी हो जाती है।

कोयला—क्या कहना है! तू तो एक कंकड़ जैसा खानके बाहर आता है। वह तो हीरा-तराश तुझे यह कृत्रिम रूप देता है। तेरा अपना प्रकाश कहां? तू तो समस्त वर्णों और प्रकाशोंसे शून्य है। तुझमें जैसी छाया और आभा पड़ी, वैसा ही बन जाता है—गंगा गये गंगादास; जमुना गये जमुनादास। यदि तू कहीं अंधेरेमें पड़ा रहे तो लोगोंकी ठोकरें . . .।

हीरा—जरा ही में गरम हो गया। पूरी बात तो सुन लेता। सुन—मैं राज-राजेश्वरोंके सिर पर बैठता हूं, देवताओंका मुकुट शोभित करता हूं, सुन्दरियोंका आभूषण बनता हूं।

कोयला—हां, तू अपने कारण सम्राटोंका सिर कटाता है। बड़े-बड़े राज्य तहस-नहस कर डालता है। मनुष्यको इस धोखेमें डालता है कि तुझे देवमुकुटमें लगा कर वह अपने वशमें कर सकता है। सुन्दरियोंकी सहज रमणीयता पर भी अपनी कृत्रिमतासे पानी फेरता है।

हीरा—मैं बड़े-बड़े राजकोषोंमें कितनी रक्षासे रखा जाता हूं। मेरे लिये पहरा चौकी लगती है। तेरे जैसा गलियोंमें मारा-मारा नहीं फिरता। बड़ी-बड़ी निधियोंसे मेरा विनिमय होता है। मैं टकि सेर नहीं बिकता।

कोयला — क्या खूब! नित्य बन्दी बनकर सौ-सौ तालोंमें बन्द होकर सोनेकी काँटेदार बेड़ियोंमें जकड़ा जाकर तू अपनेको बड़ा समझे तो समझ, तेरी बुद्धिकी बलिहारी है। मैं तो स्वतंत्रतापूर्वक दर-दर घूमना ही जीवनकी धन्यता समझता हूँ। और, तेरा मूल्य, तुझे याद है या मैं बताऊँ? तेरा सच्चा मोल पंजाब-केसरी रणजीतसिंहने आँका था पाँच जूतियाँ। सुना तूने?

हीरा — रहने दे, छोटे मुंह बड़ी बात! तू सदा जलनेवाला दूसरेका उत्कर्ष कब देख सकता है?

कोयला — हाँ, मैं जलता हूँ, किन्तु दूसरोंके लिये। मैं अपने कारण दूसरोंको तो नहीं जलाता। मैं जलकर ग़रीबोंकी भी ज़रूरत पूरी करता हूँ। लोगोंको विभूति देता हूँ।

हीरा — हाँ, मेरे ही विनिमयके लिये तू उन्हें धनिक करता है।

कोयला — क्यों, मै तो छोटा भाई समझकर तेरी प्रतिष्ठा ही चाहता हूँ। पर तू ठहरा वज्र। तुझे इसका ध्यान कहाँ!

हीरा — रहने दे अपनी उदारता। मैं इन बातोंमें आकर अपना मार्ग नहीं छोड़नेका।

कोयला — मैं तुझे यही तो चेताना चाहता हूँ — तेरे दिन अब पूरे ही चले। संसार शीघ्र ही वह दिन देखने-वाला है, जब तेरी पूछ न रह जायगी। वह शीघ्र ही कृत्रिम आभूषणोंके बदले सच्चे आभूषण अपनावेगा। वह

गरीबी-अमीरीका ऊबड़-खाबड़ और टेढ़ा-मेढ़ा मार्ग छोड़ कर एक सरल, समतल, सीधे मार्ग पर चलनेवाला है।

हीरा — देखना है कि मनुष्यता कब सच्चे आभूषण अपनाती है। देखना है कि लोकयात्राका वह सीधा मार्ग कब बनता है। यदि वैसा सीधा मार्ग बन भी गया, तो उसके सीधेपनके कारण उसकी लंबाई देखकर ही मानवता हार बठेगी। जो हो।

कोयला — नहीं, वह सीधापन उसका उत्साह दुगुना कर देगा, क्योंकि यात्राका निर्दिष्ट स्थान उसे सामने ही देख पड़ने लगेगा।

हीरा — जब वह समय आयेगा, तब देखा जायगा। मैं बीचमें ही अपना पदत्याग क्यों करूँ? क्या सहज ही मैंने उसे पाया है? तब तकके लिये तुझे इस बिना माँगी सलाहके लिये हृदयसे धन्यवाद।

कोयला — अच्छा मेरे अनुज। मैं जीसे तुझे आशीर्वाद देता हूँ कि ईश्वर तुझे सुबुद्धि दे।

हीरा — आह! क्या दैवगति ऐसी ही है कि मैं तेरा अनुज होऊँ और तू कोयला — मेरा अग्रज!

कोयला — हाँ, यह एक घटना है, जिसे हम मिटा नहीं सकते।

हीरा — तो क्या मनुष्यके पूर्वज बन्दर नहीं?

कोयला — यह तो तेरे जैसे पारदर्शी ही जानें। मैं अन्ध-हृदय इन गूढ़ विषयोंको क्या समझूँ?

हीरा—चाहे जैसे भी हो, तूने अपने हृदयका अन्धकार तो स्वीकार किया। तेरी इस हारके आगे मैं अपना सिर झुकाता हूँ।

कोयला—और मैं भी अपने उसी आन्तरिक अधिकारसे, जो आलोकका कारण है, तुझे फिर असीसता हूँ कि ईश्वर तुझे सुबुद्धि दे।

सवाल

(१) कोयला हीरेका बड़ा भाई कैसे है?
(२) हीरा खुदको कोयलेसे अच्छा क्यों समझता है?
(३) हीरे और कोयलेमें अधिक उपयोगी कौन है? कैसे?
(४) इसी तरहका कोई और संवाद लिखें।

३

दुनिया कामसे चलती है

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

[आप देशभक्त, समाज-सुधारक और राजनीतिज्ञ तो हैं ही, मगर आप ऊँची कोटिके लेखक भी हैं और सारे संसारमें मशहूर हैं। आप अक्सर अंग्रेजीमें लिखते हैं, मगर आपकी पुस्तकें इतने मार्केकी होती हैं कि बड़ी बड़ी भाषाओंमें फौरन उनका अनुवाद हो जाता है। भाषण आम तौर पर आप हिन्दीमें करते हैं। यह लेख आपका एक भाषण ही है। आपकी प्रसिद्ध पुस्तकें ये हैं: विश्व इतिहासकी झलक; मेरी कहानी (आत्मकथा); हिन्दुस्तानकी कहानी; राजनीतिसे दूर; पिताके पत्र पुत्रीके नाम; लड़खड़ाती दुनिया वगैरा।]

गरीबी-अमीरीका ऊबड़-खाबड़ और टेढ़ा-मेढ़ा मार्ग छोड़ कर एक सरल, समतल, सीधे मार्ग पर चलनेवाला है।

हीरा — देखना है कि मनुष्यता कब सच्चे आभूषन अपनाती है। देखना है कि लोकयात्राका वह सीधा मार्ग कब बनता है। यदि वैसा सीधा मार्ग बन भी गया, तो उसके सीधेपनके कारण उसकी लंबाई देखकर ही मानवता हार बठेगी। जो हो।

कोयला — नहीं, वह सीधापन उसका उत्साह दुगुना कर देगा, क्योंकि यात्राका निर्दिष्ट स्थान उसे सामने ही देख पड़ने लगेगा।

हीरा — जब वह समय आयेगा, तब देखा जायगा। मैं बीचमें ही अपना पदत्याग क्यों करूं? क्या सहज ही मैंने उसे पाया है? तब तकके लिये तुझे इस बिना मांगी सलाहके लिये हृदयसे धन्यवाद।

कोयला — अच्छा मेरे अनुज। मैं जीसे तुझे आशीर्वाद देता हूँ कि ईश्वर तुझे सुबुद्धि दे।

हीरा — आह! क्या दैवगति ऐसी ही है कि मैं तेरा अनुज होऊं और तू कोयला — मेरा अग्रज!

कोयला — हाँ, यह एक घटना है, जिसे हम मिटा नहीं सकते।

हीरा — तो क्या मनुष्यके पूर्वज बन्दर नहीं?

कोयला — यह तो तेरे जैसे पारदर्शी ही जानें। मै अन्ध-हृदय इन गूढ़ विषयोंको क्या समझूं?

हीरा—चाहे जैसे भी हो, तूने अपने हृदयका अन्धकार तो स्वीकार किया। तेरी इस हारके आगे मैं अपना सिर झुकाता हूँ।

कोयला—और मैं भी अपने उसी आन्तरिक अधिकारसे, जो आलोकका कारण है, तुझे फिर असीसता हूँ कि ईश्वर तुझे सुबुद्धि दे।

सवाल

(१) कोयला हीरेका बड़ा भाई कैसे है?
(२) हीरा खुदको कोयलेसे अच्छा क्यों समझता है?
(३) हीरे और कोयलेमें अधिक उपयोगी कौन है? कैसे?
(४) इसी तरहका कोई और संवाद लिखें।

३

दुनिया कामसे चलती है

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

[आप देशभक्त, समाज-सुधारक और राजनीतिज्ञ तो हैं ही, मगर आप ऊँची कोटिके लेखक भी हैं और सारे संसारमें मशहूर हैं। आप अक्सर अंग्रेजीमें लिखते हैं, मगर आपकी पुस्तकें इतने मार्केकी होती हैं कि बड़ी बड़ी भाषाओंमें फौरन उनका अनुवाद हो जाता है। भाषण आम तौर पर आप हिन्दीमें करते हैं। यह लेख आपका एक भाषण ही है। आपकी प्रसिद्ध पुस्तकें ये हैं: विश्व इतिहासकी झलक; मेरी कहानी (आत्मकथा); हिन्दुस्तानकी कहानी; राजनीतिसे दूर; पिताके पत्र पुत्रीके नाम; लड़खड़ाती दुनिया वग़ैरा।]

अक्सर यह देखनेमें आता है कि बड़े लोगोंके पास ऐसी चिट्ठियाँ आया करती हैं कि "मैं आपकी सेवा करना चाहता हूँ"। यहाँ बड़े लोगोंसे मेरा मतलब उन राष्ट्रीय नेताओंसे है जो दिन-रात देशके काममें मशगूल रहा करते हैं। चिट्ठियाँ लिखनेवाले अक्सर कालेजोंके छात्र या हाईस्कूलोंके लड़के ही हुआ करते हैं।

मुझे भी बहुतसे लोग चिट्ठियाँ लिखा करते हैं कि हम आपकी सेवामें रहकर काम करना चाहते हैं। मैं उन्हें बहुत कड़े शब्दोंमें जवाब दे दिया करता हूँ कि मुझे आपकी सेवाकी आवश्यकता नहीं है। अगर मुझे सेवा लेनी होगी तो पहले मैं खुद अपने हाथसे अपना काम कर लिया करूँगा। हाँ, यदि मुझे खूब कसकर काम करनेवाला और विश्वासी आदमी मिल जाय, जो कि अपनी बुद्धिसे काम करे और उसे आगे बढ़ावे, तो ऐसे आदमीको मैं खोज-खोजकर अपने पास रख सकता हूँ यानी उसे काम दे सकता हूँ। लेकिन दुर्भाग्य तो यह है कि हिंदुस्तानमें ऐसे काम करनेवाले लोग बहुत ही कम, बड़ी मुश्किलसे मिलते हैं। जो आया उसे कहाँसे काम दें? क्या उनकी तरुणाई, हट्टा-कट्टापन या छैलापन देखकर काम दें?

अक्सर ऐसा होता भी है कि बिना किसी काममें योग्यता पाये उस काममें बहुतसे लोग लग जाते हैं। जिस कामको हम लें, उसे पूरा करें और उसमें अच्छी सफलता हासिल करें। मान लीजिये आपको एक मकान या रास्ता पूरा बनाना है। आपको उसकी विद्या जब तक नहीं आती,

आप कैसे उस कामको कर सकते हैं? वह काम तो बढ़ई और राज ही कर सकता है। पुल बनानेका काम इंजीनियर ही कर सकता है। इसी तरह राजनैतिक कार्यका भी है। जब तक आप उसे अच्छी तरह समझ न लें तब तक उसके अंदर न उतरें। आपके पास दिल है, दिमाग़ है, आप उनसे काम लें। अपने आसपासकी चीज़ोंका बहुत बारीकीसे निरीक्षण करें। आपको ऐसा काम करना चाहिये, जिसे दूसरा कोई आसानीसे न कर सके। जब मैं इंग्लैंडमें पढ़ता था, हमारे कालेजमें एक दिन अमेरिकाके स्वर्गीय प्रेसिडेंट श्री रूज़वेल्टके चाचा आये हुअे थे। उन्होंने लड़कोंसे पूछा, क्या तुम लोगोंमे से कोई ऐसा छात्र है, जो १० सेकंडमें १०० गज दौड सके? अगर कोई लड़का १० सेकंडमें दौड़ जाता, तो उसकी तन्दुरुस्ती और कामकी परख हो जाती। बिना अभ्यासके १० सैकंडमे १०० गज़ दौड़नेवाले बिरले ही होंगे।

आजकल अक्सर यह देखनेमें आता है कि अगर कोई काम किसीको करनेके लिये दिया भी गया, तो वह उसे दूसरे पर छोड़ देता है। दूसरा तीसरे पर, और तीसरा चौथे पर; इस तरह करनेसे वह काम पूरा नहीं हो पाता। छोटे-से-छोटा काम दिया जाता है, फिर भी वह पूरा नहीं पड़ता। छोटे कामोंको भी जो बड़े कामकी तरह समझकर करता है, वही तरक़्क़ी कर सकता है। हमें छोटे-से-छोटे कामकी भी उपेक्षा कभी न करनी चाहिये। उसीसे उस व्यक्तिके तमाम कामोंकी परख हो जाती है।

केवल किताबी शिक्षासे आजकल हमारा काम नहीं चल सकता, और न आगे चल सकेगा। किताबी शिक्षा अलबत्ता हमारे काममें मदद पहुँचाती है; लेकिन आपको तो अपने हाथ, दिल, दिमाग़, लगन और श्रद्धासे काम करना होगा। तभी आपकी क़द्र होगी। काम तो उसीको मिलता है जिसमें बुद्धि है और मेहनत करनेकी जो अपनेमें भरपूर क़ूवत रखता है। उसीकी दुनियामें क़द्र होगी और होती रही है, और काम भी स्वय उस व्यक्तिके पास दौड़कर आयेगा। लेकिन आज हिन्दुस्तानमें यह खूबी नही दीख पड़ती। काम करनेका जोश हममें बहुत ही कम समय तक रहता है और बिना सोचे-समझे ही हम किसी भी काममें कूद पड़ते है। हम इससे बचे। गांधीजीने हमें काम करनेका ढंग सिखाया है। गांधीजीकी शिक्षासे हिन्दुस्तानने आज बहुत उन्नति कर ली है और हम लोग मिलकर, एकसाथ मिलकर, कुछ काम करना भी उन्हींकी बदौलत सीख पाये है। मगर बड़े दुःखकी बात है कि आज देशमें कुछ ऐसे भी लोग है, जो देशकी आज़ादीको पसंद नहीं करते, देशमें फूट पैदा करना चाहते हैं और मिलकर काम नहीं करना चाहते। देशके काम करनेवालोंको इसपर ग़ौर करना चाहिये।

तमाम दुनियाकी हालत बदल रही है। हम कल जो नक़शे देख रहे थे वे आज बदल गये है, और कल सवेरा होते ही बदल जायेंगे। हिन्दुस्तानकी हालतमे भी जल्दी तब्दीली होगी। हम रोज़ अखबारोंमें पढ़ते ही है। लेकिन हमारे

काम करनेके तरीक़ोंमें तब्दीलियाँ नहीं होतीं। सत्ता व हुकूमतमें तब्दीली हुआ ही करती है। सचाई व मेहनतका काम तो हमेशा एकसा ही रहा है। जो उन तरीक़ोंको अपनायेगा, वही काम कर सकता है और वही अपनी तरक़्क़ी भी कर सकता है।

सवाल

(१) इस पाठमें पंडितजीने आजके युवकोंके बारेमें क्या कहा है?
(२) कामको सफल बनानेकी कौनसी चीजें जवाहरलालजीने बतायी है?
(३) शिक्षाके स्वरूपके बारेमें जवाहरलालजीने क्या अभिप्राय दिया है?
(४) हमारे देशकी तरक़्क़ी कैसे हो सकती है?

४

अब्बूख़ाँकी बकरी

[डॉ० ज़ाकिरहुसेन]

[डॉ० ज़ाकिरहुसेन एक मशहूर शिक्षणशास्त्री हैं। आजकल आप अलीगढ़ युनिवर्सिटीके कुलनायक हैं। इससे पहले आप 'जामिया मिलिया' देहलीके आचार्य थे। वर्धा-योजना पर आपकी रिपोर्ट एक मौलिक वस्तु है। आपको लिखनेका समय बहुत ही कम मिलता है, मगर आपने जो भी लिखा है उसकी गिनती अच्छे साहित्यमें हुई है। 'अब्बूख़ाँकी बकरी' हिन्दीकी अच्छी कहानियोंमें मानी जाती है।]

हिमालय पहाड़का नाम तो सुना ही होगा। इससे बड़ा पहाड़ दुनियामें कोई नहीं है। हज़ारों मील

चला गया है। और ऊँचा इतना है कि अभी तक उसकी ऊँची चोटियों पर कोई आदमी नहीं पहुँच पाया।* इस पहाड़के अन्दर बहुतसी बस्तियाँ भी हैं। ऐसी ही एक बस्ती अलमोड़ा भी है।

अलमोड़ामें एक बड़े मियाँ रहते थे। उनका नाम था अब्बूख़ाँ। उन्हें बकरियाँ पालनेका बड़ा शौक था। अकेले आदमी थे, बस एक-दो बकरियाँ रखते, दिनभर उन्हें चराते फिरते, उनके अजीब-अजीब नाम रखते। किसीका कल्लू, किसीका मुँगिया, किसीका गुजरी, किसीका हुकमा। उनसे न जाने क्या क्या बातें करते रहते और शामके वक़्त बकरियोंको लाकर घरमें बाँध देते। अलमोड़ा पहाड़ी जगह है; इसलिये अब्बूख़ाँकी बकरियाँ भी पहाड़ी नस्लकी होती थीं।

अब्बूख़ाँ ग़रीब थे, बड़े बदनसीब। उनकी सारी बकरियाँ कभी-न-कभी रस्सी तुड़ाकर रातको भाग जाती थीं। *पहाड़ी बकरियाँ बँधे-बँधे घबड़ा जाती थीं। ये बकरियाँ* भागकर पहाड़में चली जाती थीं। वहाँ एक भेड़िया रहता था, वह उन्हें खा जाता था; मगर अजीब बात है, न अब्बूख़ाँका प्यार, न शामके दानेका लालच, न भेड़ियेका डर उन बकरियोंको भागनेसे रोकता था। इसकी वजह शायद यह हो कि पहाड़ी जानवरोंके मिज़ाजमें आज़ादीकी बहुत मुहब्बत होती है। वे अपनी आज़ादी किसी दामों देनेको राजी नहीं होते और मुसीबत और ख़तरोंको सहकर

* यह कहानी एवरेस्ट-विजयसे पहले लिखी गई है।

भी आज़ाद रहनेको आराम और आनन्दकी कैदसे अच्छा जानते हैं।

जहाँ कोई बकरी भाग निकली और अब्बूखाँ बेचारे सिर पकड़ कर बैठ गये। उनकी समझमें ही न आता था कि हरी-हरी घास में उन्हें खिलाता हूँ, छिपा छिपा कर पड़ोसियोंके धानके खेतमें में उन्हें छोड़ देता हूँ, शामको दाना देता हूँ; मगर यहाँ कमबख़्त नहीं ठहरतीं और पहाड़में जाकर भेड़ियेको अपना ख़ून पिलाना पसन्द करती हैं।

जब अब्बूखाँकी बहुतसी बकरियाँ यों भाग गईं, तो बेचारे बहुत उदास हुए और कहने लगे — अब बकरी न पालूँगा। जिन्दगीके थोड़े दिन और हैं, बे-बकरियों ही के कट जायेंगे। मगर तनहाई बुरी चीज है। थोड़े दिन तो अब्बूखाँ बे-बकरियोंके रहे, फिर न रहा गया। एक दिन कहींसे बकरी खरीद लाये। यह बकरी अभी बच्चा ही थी, कोई साल सवा सालकी होगी। पहली दफ़ा ब्याई थी। अब्बूखाँने सोचा कि कम-उम्र बकरी लूँगा, तो शायद हिल जाय और उसे जब पहले ही से अच्छे-अच्छे चारे-दानेकी आदत पड़ जायगी, तो फिर वह पहाड़का रुख न करेगी। यह बकरी थी बहुत ख़ूबसूरत, रंग उसका बिल-कुल सफ़ेद था। बाल लम्बे लम्बे थे, छोटे-छोटे काले-काले सींग ऐसे मालूम होते थे कि किसीने आबनूसकी काली लकड़ीमें ख़ूब मेहनतसे तराश कर बनाये हैं। लाल-लाल आँखें तुम देखते तो कहते कि अरे यह बकरी तो हमने

ली होती। यह बकरी देखनेमें ही अच्छी न थी, मिजाजकी भी बहुत अच्छी थी। प्यारसे अब्बूखाँके हाथ चाटती थी। दूध चाहे तो कोई बच्चा दुह ले, न लात मारती थी, न दूधका बरतन गिराती थी। अब्बूखाँ तो बस उसपर आशिक़ से हो गये थे। इसका नाम चाँदनी रखा था और दिनभर उससे बातें करते रहते थे। कभी चचा घसीटखाँका क़िस्सा उसे सुनाते थे, कभी मामू नत्थूका।

अब्बूखाँने यह सोचकर कि बकरियाँ शायद मेरे तंग आँगनमें घबड़ा जाती हैं, अपनी उस बकरी चाँदनीके लिये नया इन्तजाम किया था। घरके बाहर उनका एक छोटासा खेत था। उसके चारों तरफ़ उन्होंने न जाने कहाँ-कहाँसे काँटे जमा करके डाले थे कि कोई उसमें न आ सके। उसके बीचमें चाँदनीको बाँधते थे और रस्सी खूब लम्बी रखी थी कि खूब इधर उधर घूम सके। इस तरह चाँदनीको अब्बूखाँके यहाँ खासा जमाना गुज़र गया। और अब्बूखाँको यकीन हो गया कि आखिरको एक बकरी तो हिल गई, अब यह न भागेगी।

मगर अब्बूखाँ धोखेमें थे। आज़ादीकी ख्वाहिश इतनी आसानीसे दिलसे नहीं मिटती। पहाड़ और जंगलमें रहनेवाले आज़ाद जानवरोंका दम चारदीवारीमें घुटता है, तो काँटोंसे घिरे हुए खेतमें भी उन्हे चैन नसीब नहीं होता। क़ैद क़ैद सब एक-सी। थोड़े दिनके लिये चाहे ध्यान बँट जाय; मगर फिर पहाड़ और जंगल याद आते हैं और

क़ैदी अपनी रस्सी तुड़ानेकी फ़िक्र करता है। अब्बूख़ाँका ख़याल ठीक न था कि चाँदनी पहाड़की हवा भूल गई है।

एक दिन सुबह-सुबह जब सूरज अभी पहाड़के पीछे ही था कि चाँदनीने पहाड़की तरफ़ नज़र की। मुँह जो जुगालीकी वजहसे चल रहा था, रुक गया और चाँदनीने दिलमें कहा—वह पहाड़की चोटियाँ कितनी ख़ूबसूरत हैं। वहाँकी हवा और यहाँकी हवाका क्या मुक़ाबिला? फिर वहाँ उछलना कूदना, ठोकरें खाना, और यहाँ हर वक़्त बँधे रहना। गर्दनमें आठ पहर यह कमबख़्त रस्सी। ऐसे घरोंमें गधे और खच्चर भले ही चुग लें, हम बकरियोंको तो ज़रा बड़ा मैदान चाहिये।

इस ख़यालका आना था और चाँदनी अब वह पहली चाँदनी ही न थी। न उसे हरी-हरी घास अच्छी लगती थी, न पानी मजा देता था, न अब्बूख़ाँकी लम्बी दास्तानें उसे भाती थीं। रोज़-ब-रोज़ दुबली होने लगी। दूध घटने लगा। हर वक़्त मुँह पहाड़की तरफ़ रहता। रस्सीको खींचती और अजब दर्दभरी आवाज़से में-में चिल्लाती। अब्बूख़ाँ समझ गये, हो-न-हो कोई बात ज़रूर है; लेकिन यह समझमें न आता था कि क्या? एक दिन सुबह जब अब्बूख़ाँने दूध दुह लिया तो चाँदनीने उनकी तरफ़ मुँह फेरा और अपनी बकरियोंवाली ज़बानमें कहा—अब्बूख़ाँ मियाँ, में अब तुम्हारे पास रहूँगी, तो मुझे बड़ी बीमारी हो जायगी। मुझे तुम पहाड़ ही में चले जाने दो।

अब्बूख़ाँ बकरियोंकी ज़बान समझने लगे थे। चिल्ला-कर बोले — या अल्लाह! यह भी जानेको कहती है, यह भी! हाथके थरथरानेसे मिट्टीकी लुटिया, जिसमें दूध दुहा था, हाथसे गिरी और चूर-चूर हो गई।

अब्बूख़ाँ वहीं घास पर बकरीके पास बैठ गये और निहायत ग़मगीन आवाज़से पूछा — क्यों बेटी चाँदनी, तू भी मुझे छोड़ना चाहती है?

चाँदनीने जवाब दिया — हाँ अब्बूख़ाँ मियाँ, चाहती तो हूँ।

'अरे, क्या तुझे चारा नहीं मिलता, या दाना पसन्द नहीं? बनियेने घुने दाने मिला दिये हैं? मैं आज ही और दाना ले आऊँगा।'

'नहीं नहीं मियाँ, दानेकी कोई तकलीफ़ नहीं' — चाँदनीने जवाब दिया।

'तो फिर क्या रस्सी छोटी है? मैं और लम्बी कर दूँगा।'

चाँदनीने कहा — 'इससे क्या फ़ायदा?'

'तो आख़िर फिर क्या बात है, तू चाहती क्या है?'

चाँदनीने जवाब दिया — 'कुछ नहीं, बस मुझे तो पहाड़में जाने दो।'

अब्बूख़ाँने कहा — 'अरी कमबख़्त, तुझे यह ख़बर है कि वहाँ भेड़िया रहता है? वह जब आयेगा, तो क्या करेगी?' चाँदनीने जवाब दिया — 'अल्लाहने दो सींग दिये हैं, उनसे उसे मारूँगी।'

'हाँ-हाँ ज़रूर!'—अब्बूखाँ बोले—'भेड़िये पर तेरे सींगों ही का तो असर होगा! वह तो मेरी कई बकरियोंको हड़प कर चुका है। उनके सींग तो तुझसे बहुत बड़े थे। तू तो कल्लूको जानती नहीं, वह यहाँ पिछले साल थी। बकरी काहेको थी, हिरन थी हिरन। काला हिरन!! रातभर सींगोंसे भेड़ियेके साथ लड़ी मगर फिर सुबह होते-होते उसने दबोच ही लिया और खा गया।'

चाँदनीने कहा—अरे-रे-रे! बेचारी कल्लू, मगर ख़ैर। अब्बूखाँ मियाँ, इससे क्या होता है, मुझे तो तुम पहाड़में जाने ही दो।

अब्बूखाँ कुछ झुंझलाए और बोले—या अल्लाह, यह भी जाती है! मेरी एक बकरी और उस कमबख़्त भेड़ियेके पेटमें जाय; मगर नहीं-नहीं, मैं इसे तो ज़रूर बचाऊँगा। कमबख़्त, अहसानफ़रामोश, तेरी मरज़ीके खिलाफ़ तुझे बचाऊँगा। अब तो तेरा इरादा मालूम हो गया है। अच्छा, बस चल तुझे कोठरीमें बाँधा करूँगा; नहीं तो मौका पाकर चल देगी।

अब्बूखाँने आकर चाँदनीको एक कोनेकी कोठरीमें बन्द कर दिया और ऊपरसे जंज़ीर चढ़ा दी; मगर गुस्से और झुंझलाहटमें कोठरीकी खिड़की बन्द करना भूल गये। इधर उन्होंने कुंडी चढ़ाई, उधर चाँदनी खिड़कीमें से उचक कर बाहर! यह जा, वह जा।

चाँदनी पहाड़ पर पहुँची, तो उसकी खुशीका क्या पूछना था! पहाड़ पर पेड़ उसने पहले भी देखे थे,

लेकिन आज उनका और ही रंग था। उसे ऐसा मालूम होता था कि सबके सब खड़े हुए उसे मुबारकबाद दे रहे हैं कि फिर हममें आ मिली। इधर-उधर सेवतीके फूल मारे खुशीके खिल-खिलाकर हँस रहे थे, कहीं ऊँची ऊँची घास उससे गले मिल रही थी। मालूम होता था कि सारा पहाड़ मारे खुशीके मुसकरा रहा है और अपनी बिछुड़ी हुई बच्चीके वापस आने पर फूला नहीं समाता। चाँदनीकी खुशीका हाल कोई क्या बताए। न चारों तरफ काँटोंकी बाड़, न खूँटा, न रस्सी और चारा! वह जड़ी-बूटियाँ कि अब्बूखाँ ग़रीब अपनी सारी मुहब्बत और स्नेहके होते हुए भी न ला सकते।

चाँदनी कभी इधर उछलती, कभी उधर। कभी यहाँसे कूदी, कभी वहाँ फाँदी। कभी चट्टान पर है, कभी खड्डेमें। इधर ज़रा फिसली, फिर सँभली। एक चाँदनीके आनेसे सारे पहाड़में रौनक-सी आ गई थी। ऐसा मालूम होता था कि अब्बूखाँकी दस-बारह बकरियाँ छूटकर यहाँ आ गई हैं।

एक दफ़ा घास पर मुँह मार कर जो ज़रा सिर उठाया, तो चाँदनीकी नज़र अब्बूखाँके मकान और उस काँटोंवाले घेरे पर पड़ी। उन्हें देखकर खूब हँसी, और दिलमें कहने लगी — या खुदा, कोई देखे तो कितना ज़रा-सा मकान है। और कैसा छोटासा घर। या अल्लाह! मैं इतने दिन उसमें कैसे रही? उसमें आखिर समाती

कैसे थी! पहाड़की चोटी परसे उस नन्हीं-सी जानको नीचेकी सारी दुनिया हेच नजर आती थी।

चाँदनीके लिये यह दिन भी अजीब था। दोपहर तक इतनी उछली-कूदी कि शायद सारी उम्रमें इतनी उछली-कूदी न होगी। दोपहर ढले उसे पहाड़ी बकरियोंका एक गल्ला दिखाई दिया। गल्लेकी बकरियोंने उसे खुशी खुशी अपने पास बुलाया और उससे हाल-अहवाल पूछा। गल्लेमें जवान बकरे भी थे, उन्होंने भी चाँदनीकी बड़ी खातिर-तवाजा की; बल्कि उसमें एक बकरा था जरा काले रंगका, जिस पर कुछ सफ़ेद टप्पे थे। वह चाँदनीको भी अच्छा लगा और यह दोनों बहुत देर तक इधर-उधर फिरते रहे। उनमें न जाने क्या क्या बातें हुईं। और कोई था नहीं। एक सोता पानीका बह रहा था, उसने सुनी होंगी। कभी कोई वहाँ जाय और उस सोतेसे पूछे तो शायद कुछ पता लगे और फिर भी क्या खबर, यह सोता भी शायद न बताये!

बकरियोंका गल्ला न मालूम किधर चला गया। वह जवान बकरा भी इधर-उधर घूमकर अपने साथियोंमें जा मिला।

चाँदनीको तो अभी आजादीकी इतनी ख्वाहिश थी कि उसने गल्लेके साथ होकर अभी अपने ऊपर पाबन्दियाँ लेना गवारा न किया और एक तरफ चल दी। शामका वक़्त हुआ। ठण्डी हवा चलने लगी। सारा पहाड़ लाल-सा हो गया और चाँदनीने सोचा, ओह हो, अभीसे शाम?

नीचे अब्बूखाँका घर और वह काँटोंवाला घर दोनों कुहरेमें छिप गये । नीचे कोई चरवाहा अपनी बकरियोंको वाड़ेमें बन्द करनेके लिये जा रहा था, उनकी गर्दनकी घंटियाँ बज रही थीं । चाँदनी उस आवाजको खूब पहचानती थी । उसे सुनकर उदास-सी हो गई । होते होते अँधेरा होने लगा और पहाड़में एक तरफ़से आवाज आई — खू-खू ।

यह आवाज़ सुनकर चाँदनीको भेड़ियेका खयाल आया । दिन भर एक दफ़ा भी उसका ध्यान उधर न गया था । पहाड़के नीचेसे एक सीटी और विगुलकी आवाज आई । यह बेचारे अब्बूखाँ थे, जो आखिरी कोशिश कर रहे थे कि उसे सुनकर चाँदनी फिर लौट आये । इधरसे यह कह रहे थे — 'लौट आ, लौट आ ।' उधरसे दुश्मन-जान भेड़ियेकी आवाज आ रही थी ।

चाँदनीके जीमें कुछ तो आई कि लौट चले; लेकिन उसे खूँटा याद आया, रस्सी याद आई, काँटोंका घर याद आया । और उसने सोचा कि उस ज़िन्दगीसे यहाँकी मौत अच्छी । आखिरको सीटी और विगुलकी आवाज़ बन्द हो गई । पीछेसे पत्तोंकी खड़खड़ाहट सुनाई दी । चाँदनीने मुड़ कर देखा, तो दो कान दिखाई दिये सीधे खड़े हुअे, और दो आँखें जो अँधेरेमें चमक रही थीं । भेड़िया पहुँच गया था ।

भेड़िया जमीन पर बैठा था, नजर बेचारी बकरी पर जमी थी । उसे इतमीनान था, जल्दी न थी । खूब

जानता था कि अब कहाँ जाती है। बकरीने जो उसकी तरफ़ रुख किया, तो वह मुसकराया और बोला — ओह ओ! अब्बूखाँकी बकरी है? खूब खिला-खिलाकर मोटा किया है। यह कह कर उसने अपनी लाल-लाल ज़बान अपने नीले-नीले होठों पर फेरी। चाँदनीको कल्लूका किस्सा याद आया, जो अब्बूखाँने बताया था और उसने सोचा कि मैं क्यों खाहमख्वाह रातभर लड़कर सुबह जान दूं, क्यों न अपनेको सुपुर्द कर दूं? लेकिन फिर ख़याल किया कि नहीं। अपना सिर झुकाया, सींग आगेको किये और पैंतरा बदलकर भेड़ियेके मुक़ाबिले आई। बहादुरोंका यही स्वभाव है। कोई यह न समझे कि चाँदनी अपनी बिसात न जानती थी, और भेड़ियेकी ताक़तका अन्दाज़ा उसे न था। वह ख़ूब जानती थी कि बकरियाँ भेड़ियेको नहीं मार सकतीं। वह तो सिर्फ़ यह चाहती थी कि अपनी बिसातके मुताबिक़ मुक़ाबिला कर ले। जीत-हार पर अपना क़ाबू नहीं, वह अल्लाहके हाथ है, मुक़ाबिला ज़रूरी है। जीमें यह सोचती थी कि देखूं मैं कल्लूकी तरह रातभर मुक़ाबिला कर सकती हूँ या नहीं।

कुछ देर जब गुज़र गई तो भेड़िया बढ़ा। चाँदनीने भी सींग सँभाले और वह हमले किये कि भेड़ियेका ही जी जानता होगा। दसियों मरतबा उसने भेड़ियेको पीछे रेल दिया। सारी रात इसीमें गुज़री। कभी कभी चाँदनी ऊपर आसमानकी तरफ़ देख लेती और सितारोंसे आँखों-आँखोंमें कह देती — ए कहीं इसी तरह सुबह हो जाय।

नीचे अब्बूख़ाँका घर और वह काँटोंवाला घर दोनों कुहरेमें छिप गये । नीचे कोई चरवाहा अपनी बकरियोंको बाड़में बन्द करनेके लिये जा रहा था, उनकी गर्दनकी घंटियाँ बज रही थीं । चाँदनी उस आवाज़को खूब पहचानती थी । उसे सुनकर उदास-सी हो गई । होते होते अँधेरा होने लगा और पहाड़में एक तरफ़से आवाज आई — खू-खू ।

यह आवाज सुनकर चाँदनीको भेड़ियेका ख़याल आया । दिन भर एक दफ़ा भी उसका ध्यान उधर न गया था । पहाड़के नीचेसे एक सीटी और बिगुलकी आवाज आई । यह बेचारे अब्बूख़ाँ थे, जो आखिरी कोशिश कर रहे थे कि उसे सुनकर चाँदनी फिर लौट आये । इधरसे यह कह रहे थे — 'लौट आ, लौट आ ।' उधरसे दुश्मन-जान भेड़ियेकी आवाज आ रही थी ।

चाँदनीके जीमें कुछ तो आई कि लौट चले; लेकिन उसे खूँटा याद आया, रस्सी याद आई, काँटोंका घर याद आया । और उसने सोचा कि उस ज़िन्दगीसे यहाँकी मौत अच्छी । आखिरको सीटी और बिगुलकी आवाज बन्द हो गई । पीछेसे पत्तोंकी खड़खड़ाहट सुनाई दी । चाँदनीने मुड़ कर देखा, तो दो कान दिखाई दिये सीधे खड़े हुए, और दो आँखें जो अँधेरेमें चमक रही थीं । भेड़िया पहुँच गया था ।

भेड़िया जमीन पर बैठा था, नजर बेचारी बकरी पर जमी थी । उसे इतमीनान था, जल्दी न थी । खूब

जानता था कि अब कहाँ जाती है। बकरीने जो उसकी तरफ रुख किया, तो वह मुसकराया और बोला — ओह ओ! अब्बूख़ाँकी बकरी है? खूब खिला-खिलाकर मोटा किया है। यह कह कर उसने अपनी लाल-लाल जबान अपने नीले-नीले होठों पर फेरी। चाँदनीको कल्लूका क़िस्सा याद आया, जो अब्बूख़ाँने बताया था और उसने सोचा कि मैं क्यों खाहमख्वाह रातभर लड़कर सुबह जान दूँ, क्यों न अपनेको सुपुर्द कर दूँ? लेकिन फिर खयाल किया कि नहीं। अपना सिर झुकाया, सींग आगेको किये और पैंतरा बदलकर भेड़ियेके मुक़ाबिले आई। बहादुरोंका यही स्वभाव है। कोई यह न समझे कि चाँदनी अपनी बिसात न जानती थी, और भेड़ियेकी ताक़तका अन्दाजा उसे न था। वह खूब जानती थी कि बकरियाँ भेड़ियेको नहीं मार सकतीं। वह तो सिर्फ़ यह चाहती थी कि अपनी बिसातके मुताबिक़ मुक़ाबिला कर ले। जीत-हार पर अपना क़ाबू नहीं, वह अल्लाहके हाथ है, मुक़ाबिला जरूरी है। जीमें यह सोचती थी कि देखूँ मैं कल्लूकी तरह रातभर मुक़ाबिला कर सकती हूँ या नहीं।

कुछ देर जब गुज़र गई तो भेड़िया बढ़ा। चाँदनीने भी सींग सँभाले और वह हमले किये कि भेड़ियेका ही जी जानना होगा। दसियों मरतबा उसने भेड़ियेको पीछे रेल दिया। सारी रात इसीमें गुज़री। कभी कभी चाँदनी ऊपर आसमानकी तरफ़ देख लेती और सितारोंसे आँखों-आँखोंमें कह देती — ए कहीं इसी तरह सुबह हो जाय।

सितारे एक-एक करके गायब हो गये। चाँदनीने आखिरी वक़्तमें अपना जोर दुगुना कर दिया। भेड़िया भी तंग आ गया था कि दूरसे एक रोशनी-सी दिखाई दी। एक मुर्गेने कहीसे बाँग दी। नीचे बस्तीमें मस्जिदसे अज़ानकी आवाज़ आई। चाँदनीने दिलमें कहा कि अल्लाह, तेरा शुक्र है। मैंने अपने बसभर मुक़ाबिला किया, अब तेरी मरज़ी! मुअज्जन आखिरी दफ़ा अल्लाहो अकबर कह रहा था कि चाँदनी बेदम जमीन पर गिर पड़ी। उसके सफ़ेद बालोंका लिबास खूनसे बिलकुल सुर्ख था। भेड़ियेने उसे दबोच लिया और खा गया। और दरख्तपर चिड़ियाँ बैठी देख रही थीं। उनमें इस पर बहस हो रही थी कि जीत किसकी हुई। बहुत कहती हैं कि भेड़िया जीता। एक बूढ़ी-सी चिड़िया है, वह कहती है चाँदनी जीती!

सवाल

(१) अब्बूखाँ बदनसीब क्यों थे?
(२) बकरियाँ हिल जायें इसलिये अब्बूखाँ क्या किया करते थे?
(३) चाँदनीने पहाड़ पर जानेका क्यों सोचा?
(४) अब्बूखाँ और चाँदनीके बीच क्या वार्तालाप हुआ?
(५) चाँदनीने भेड़ियेका कैसे सामना किया?
(६) चाँदनी हारी या जीती? आपका क्या अभिप्राय है?

५

ज़ेब्रा

[श्री कमलकान्त पाण्डेय]

जो रूप भगवानने इस पशुको दिया है वह और किसी पशुके भाग्यमें नहीं आया। पहाड़ी ज़ेब्राके सफ़ेद शरीर पर चटकीली काली धारियाँ बड़ी ही सुन्दर लगती हैं। ये धारियाँ पीठसे सिर तक और नीचे खुर तक गई होती हैं। इस विचित्र रंगके कारण इसे बाघघोड़ा भी कहते हैं। इसका शरीर काली और सफ़ेद धारियोंसे जैसा सुसज्जित है वैसी ही सुडौल इसकी गठन भी है। यह दक्षिणी अफ्रीकाका पशु है। पहाड़ी ज़ेब्रा केपकालोनीके प्रदेशमें मिलता है। इसकी एक जाति और है। वह पहाड़ों पर नहीं रहती। वह दक्षिणी अफ्रीकामें आरेंज नदीके तट पर मिलती है। इस जातिके ज़ेब्राका शरीर भिन्न-भिन्न रंगोंका होता है। किसीका शरीर श्वेत, किसीका हलका पीला अथवा भूरा होता है और उनके शरीरकी धारियाँ भी किसीकी काली और किसीकी भूरी होती हैं।

यह उन्हीं घने वनोंमें रहते हैं जिनमें शेर या बाघ रहते हैं। इस कारण प्रकृतिने इनके शरीरका रंग पार्श्ववर्ती पदार्थोंके रंगसे विचित्र रूपसे मिला दिया है, जिससे ये पासकी चीज़ोंमें इस प्रकार मिल जायें कि सहसा उनसे

भिन्न न समझे जायँ। यह प्रकृतिकी बड़ी भारी विलक्षणता है कि वह छोटे-छोटे जीवोंमें पार्श्ववर्ती पदार्थोंके सदृश रंग दे देती है। इससे दो लाभ होते हैं। एक तो शत्रुओंसे रक्षा होती है, क्योंकि पासके पदार्थोंमें वे ऐसे छिप जाते हैं कि उनके शत्रु सहसा उन्हें पहचान नहीं पाते, दूसरे उनको भोजन या शिकार सुभीतेसे प्राप्त हो जाता है। कारण यह है कि उनके शिकारको उनके पास पहुँचनेकी सूचना भी मुश्किलसे मिलती है। तुमने घने जंगल न देखे होंगे। इस कारण शायद यह बात समझनेमें कुछ कठिन मालूम होती हो। घने जंगलोंमें अन्धकार बहुत होता है और सब कुछ काला ही दिखाई पड़ता है। पत्तियोंसे छन-छन कर सूर्यकी किरणें उस काले रंगमें धारियाँ उत्पन्न कर देती हैं। इस कारण वहाँका रंग काली और श्वेत धारियों युक्त हो जाता है। घनी जगहोंमें रहनेवाले पशुओंके शरीरका रंग उसी प्राकृतिक रंगमें मिल जाता है। और उनका शरीर भी काली और श्वेत धारियोंवाला हो जाता है। तुम अपने घरोंके पास भी प्रकृतिके इस नियमको देख सकते हो। बरसातके दिनोंमें जब चारों ओर घास बढ़ जाती है और हरी-हरी भूमिके अतिरिक्त और कुछ नहीं दिखाई पड़ता, तब उसमें उत्पन्न होनेवाले कीड़े और भुनगे भी हरे रंगके होते हैं। गरमीके दिनोंमें जब सारी घास जल जाती है और भूरी-भूरी मिट्टी ही दिखाई पड़ती है, तब कीड़े और भुनगे भूरे रंगके हो जाते हैं। यह प्राकृतिक नियम है। इस नियमका

जितना प्रभाव ज़ेब्रा पर पड़ता है, सम्भवतः अन्य किसी पशु पर नहीं पड़ता ।

यह समूहमें रहता है । इसका दलका दल धूपमें चरा करता है । इनको धूप प्यारी लगती है । इस कारण ये धूपसे वचनेके लिये कभी पेड़की छायामें जाना पसन्द नहीं करते । इनका रूप-रंग और क़द सब कुछ घोड़ेसे मिलता है । ये खच्चरसे वहुत अधिक समता रखते हैं । ये मनुष्यके वड़े कामके हो सकते हैं, यदि ये घोड़ेकी भाँति पालतू वनाये जा सकें । किन्तु खेद है कि अभी तक मनुष्य इस उपयोगी पशुको पालतू न वना सका । इसका कारण यह नही है कि मनुष्यका ध्यान इस वातकी ओर अभी तक नहीं गया, वल्कि इनकी प्रकृति वहुत स्वतन्त्र और आज़ाद होती है । इसी प्रकृतिके कारण अभी तक यह पशु पालतू नहीं वनाया जा सका । यदि किसीने एक ज़ेब्रा पकड़कर पाल लिया तो वह खाना-पीना छोड़ देता है और मर जाता है । वह दूसरोके बन्धनमें जीना पसन्द ही नही करता ।

इनका खुर चौड़ा होता है, इस कारण ये पर्वतीय प्रदेशोंमें आसानीसे चलते-फिरते हैं । भूमिपर तो चलनेमें कोई वात ही नहीं । यदि ये सिखलाये जायँ तो वड़े उपयोगी सेवक सिद्ध होंगे । जिस स्थान पर घोड़े नहीं पहुँच सकते वहाँ भी ये अपने सवारको पहुँचा सकेंगे । तेज़ी तो इनमें गज़वकी होती है । उस तेजीके कारण ही ये अपनी रक्षा भी कर सकते हैं । यदि शेर इन पर धावा मारता है तो

वह भी आसानीसे इन्हें नहीं पकड़ पाता। सारा दिन उन्हींके पीछे दौड़ना पड़ता है फिर भी यह निश्चय नहीं रहता कि वे हाथ लग ही जायँगे।

जब ये दल-के-दल धूपमें चरते रहते हैं तब अपनेमें से एकको चौकीदार नियुक्त कर देते हैं। वह चारों ओर देखा करता है। जहाँ उसे कहीं कोई आता दिखाई पड़ा कि वह बोलकर अपने साथियोंको चौकन्ना कर देता है। फिर तो ये ऐसे भागते हैं कि देखते ही बनता है। ये शिकारियोंके मार्गमें सबसे अधिक रुकावट डालते हैं। जहाँ ये शिकारीको देखते हैं, भाग खड़े होते हैं। उनको भागते देख जंगलके सभी पशु सावधान और चौकन्ने हो जाते हैं। उन्हें पता लग जाता है कि पास ही कोई खतरा अवश्य है। शिकारीके कैंपके पास भी कभी-कभी कौतूहलवश ये चले जाते हैं और चौकन्ने होकर देखते हैं। जहाँ किसीने इनकी ओर आँख उठाई कि ये तुरन्त भागते हैं।

इनका स्वभाव बहुत ही सीधा होता है। ये कभी किसी पशुको हानि नहीं पहुँचाते। किन्तु जब ये पकड़े जाते हैं और पालतू बनानेके लिये सिखलाये जाने लगते हैं तब इनमें काटनेकी आदत पड़ जाती है। अफ्रीकाके पहाड़ी जेब्राकी संख्या अत्यन्त घट गई है। वहाँकी सरकार इस बातकी चेष्टा कर रही है कि यह अद्‌भुत सुन्दर प्राणी संसारसे उठ न जाय। इस कारण इनकी रक्षाका उपाय किया जा रहा है। इनका मांस खानेमें बहुत

स्वादिष्ठ होता है। शिकारी इस पशुका शिकार भरसक नहीं करते। जब उन्हें खानेको कुछ नहीं मिलता और बिना भोजनके काम नहीं चलता तब इनका मांस प्राप्त करनेके लिये ही इन्हें मारते हैं।

एक बार एक जेब्रा अपने दलसे छूट गया। उसने देखा कि पास ही. खच्चर झुंड-के-झुंड चर रहे हैं। उनमें मिलनेके लिये वह वहीं आ गया। खच्चरोंने देखा यह कौन अपरिचित बिना बुलाये हमारे दलमें घुस गया। एक खच्चरने क्रोधमें आकर जेब्राकी गर्दन पकड़ ली। बेचारा बड़ी आफ़तमें फँसा। उसे अपनी गर्दन छुड़ाना कठिन हो गया। इतनेमें खच्चरोंका मालिक पास पहुँच गया। उसने जेब्राको बाँध लिया और खच्चरको डंडे मारकर हटाया। उसने उसे सभ्य बनानेका प्रयास किया। किन्तु वह स्वतन्त्रता-प्रेमी जीव इस जीवनको पसन्द न करता था। उसे तो एक ही धुन थी, यदि जीना है तो स्वतन्त्र रहकर ही अथवा इस निस्सार जीवनकी आशा छोड़ो। परतन्त्रताका जीवन निन्दित है, यह सोचकर उसने खाना-पीना छोड़ दिया और कुछ दिनोंमें इस संसारसे चल बसा। उसका मृत शरीर म्यूज़ियम (अजायबघर) में भेज दिया गया।

सवाल

(१) जेब्राके रूप-रंगका वर्णन करिये।

(२) जेब्राको विशिष्ट प्रकारका रंग देनेके पीछे कुदरतका क्या हेतु है?

(३) जेब्राके स्वभावकी विशेषतायें बतायें।
(४) शिकारी जानवरोंसे जेब्रा अपना रक्षण कैसे करता है?
(५) इस पाठमें जिसका उदाहरण दिया गया है उस जेब्राने अपना जीवन क्यों और कैसे समाप्त किया?
(६) किसी एक मानव-उपयोगी प्राणीके बारेमें लिखें।

६

करमसदसे लंदन

[श्री नानुभाई बारोट]

[गुजरातमें हिन्दी प्रचारके कामका श्रीगणेश करनेवालोंमें से आप एक हैं। आप वसो, जिला खेड़ाके रहनेवाले हैं। वरसोंसे आप सक्रिय रूपसे हिन्दीकी सेवा कर रहे हैं। आप स्वभावसे शिक्षक हैं। इसीलिये क़ानूनकी उपाधि रखते हुए भी आपने शिक्षाका क्षेत्र ही पसन्द किया है। आजकल आप गूजरात विद्यापीठमें काम कर रहे हैं।]

यह न तो किसी लंबे सफ़रका वर्णन है, न कोई मनगढ़ंत कहानी है। ये हैं हमारे लोकप्रिय सरदारके विद्याकालके कुछ संस्मरण। वल्लभभाई एक मामूली किसानसे किस तरह देशके प्रिय 'सरदार' बने, इसकी झाँकी हमें इन सस्मरणोंसे मिलती है।

वल्लभभाईका जन्म करमसद, जिला खेड़ामें ३१ अक्टूबर १८७५ को हुआ। इनके पिताका नाम झवेरभाई था। वे खेती करते थे और बालक वल्लभभाईको अपने साथ खेतमें ले जाया करते थे। आते जाते वे वल्लभभाईको पहाड़े याद कराते थे।

प्राथमिक शालाके वल्लभभाईके एक शिक्षक अजीब प्रकृतिके थे । जब कोई लड़का उनसे कुछ मुश्किल पूछने जाता तो पहले तो वे उसका गालीसे स्वागत करते। और फिर फ़रमाते, 'मुझसे क्या पूछता है? आपस आपसमें मिलकर पढ़ो ।' 'इस आपस आपसमें मिलकर पढ़ो' के गुरुमंत्रकी गाँठ सरदारने अपने पल्लेमें बाँध ली । और अपना जीवन इसके अनुसार बनाने लगे ।

करमसदमें सात दरजे तकका स्कूल था । वहाँकी पढ़ाई पूरी हुई तो सवाल हुआ कि अब क्या किया जाय । उनके एक शिक्षकने उनको शिक्षक बननेकी सलाह दी, मगर यह सलाह वल्लभभाईको पसंद न आयी । बड़े भाई, विट्ठलभाई, नड़ियादमें मामाके पास रहकर पढ़ रहे थे । झवेरभाईने वल्लभभाईको वहाँ भेजना उचित न समझा, और घरसे दूर छात्रालयमें रखकर पढ़ाना उनकी शक्तिके बाहर बात थी । इस उधेड़बुनमें कुछ मास इसी तरहसे बीत गए । इस अरसेमें करमसदमें अंग्रेज़ी तीन दरजे तकका स्कूल शुरू हो गया और वल्लभभाई उसमें भरती हो गये ।

ये तीन साल भी पूरे हो गये, मगर पढ़ाईकी भूख पूरी न हुई । पेटलाद, जहाँ अंग्रेज़ी पाँच दरजे तकका स्कूल था, जानेके सिवा कुछ चारा न था । मगर वहाँ रहने-सहनेका कोई प्रबंध न था । चतुर वल्लभभाईने 'आपस आपसमें मिलकर पढ़ो' के गुरुमंत्र पर अमल किया और कुछ लड़के जमाकर एक मकान किराये पर

ले लिया, और व्यवस्थाकी सारी ज़िम्मेदारी अपने पर लेकर और सब साथियोंको काम बाँटकर रहने लगे, और पेटलादकी पढ़ाई पूरी की ।

अब नड़ियाद जानेके सिवाय और कुछ चारा न था। मगर उन्होंने मामाके घर रहना पसंद न किया। अपने कुछ साथियोंको लेकर पेटलादकी तरह एक मकान किराये पर लेकर रहने लगे । वल्लभभाईका अंग्रेज़ी भाषा पर क़ाबू बढ़ता जाता था और उनका अंग्रेजीका शौक़ भी बढ़ता गया । वे पैरेके पैरे ज़बानी याद कर लेते थे; और कभी कभी लड़कोंको जमा करके अंग्रेज़ीमें भाषण भी देते थे ।

वल्लभभाईकी शक्तिका नड़ियादमें खूब विकास हुआ । उनके स्कूलके एक पारसी शिक्षक बड़े तेज़ थे। ज़रा ज़रासी बात पर लड़कों पर सोटी उठा लेते थे। एक बार उन्होंने एक विद्यार्थी पर जुर्माना कर दिया। उसने जुर्माना नहीं दिया, इस पर शिक्षकने उसको क्लाससे निकाल दिया। वल्लभभाईको यह ठीक न लगा। यह ख़बर पाते ही अपनी क्लासके लड़कोंके साथ वे बाहर आ गये । और दोपहरकी छुट्टीमें सारे स्कूलके लड़कोंको जमा किया, और सारे स्कूलकी हड़ताल करनेका तय किया। सारा स्कूल बंद हो गया । वल्लभभाईको इतनेसे ही तसल्ली नहीं हुई । उन्होंने लड़कोंकी मददसे ऐसा प्रबंध किया कि कोई विद्यार्थी स्कूलमें न जाने पावे । तीन दिन तक हड़ताल जारी रही । आख़िरकार हेडमास्टरको वचन देना पड़ा कि फिर कभी किसी विद्यार्थीको इस

तरहकी सज़ा नहीं दी जायगी। तिस पर चौथे दिन हड़ताल पूरी हुई और स्कूल खुला।

इसी कालमें एक और घटना हुई, जिससे विद्यार्थी वल्लभभाईकी कार्यशक्ति बढ़ी। नड़ियादकी म्युनिसिपैलिटीका चुनाव था। चुनावमें नड़ियादके देसाई खानदानके एक सज्जन खड़े हुए। उनके सामने महानंद नामके वल्लभभाईके एक शिक्षक भी खड़े हो गये। बेचारे शिक्षककी क्या हैसियत कि किसी देसाईका मुक़ाबला करे? अभिमानी देसाईने चुनौती दी — अगर मैं चुनावमें हार जाऊँ तो मूँछें मुँड़वा दूँगा। वल्लभभाईको भी इसका पता चला। उन्होंने लड़कोंकी एक सेना तैयार की और महानंद शिक्षककी तरफ़से लोगोंमें खूब काम किया। महानंद बाजी मार गये। इसका नतीजा और क्या हो सकता था? वल्लभभाई लड़कोंका जुलूस बना एक नाईको साथ लिये देसाईके घर पहुँचे और देसाईकी मिट्टी खूब पलीद हुई।

बड़ोदामें अंग्रेज़ीकी पढ़ाई अच्छी होती थी, इसलिये मैंट्रिक क्लासमें बड़ोदा चले गये। वहाँ छोटालाल नामके एक शिक्षकके साथ झगड़ा हो गया और दो मास रहकर वापस चले आये। मैंट्रिकमें एक साल फेल हुए। आखिर बाईस सालकी उम्रमें मैंट्रिक हो गये।

मैंट्रिक तो हो गये मगर अब क्या करना यह एक पेचीदा सवाल था। इनके मामाने अहमदाबाद म्युनिसिपैल्टीमें मुकादमकी जगह दिलानेका इन्हें लालच दिया।

मगर वे तो कोई ऐसा धंधा चाहते थे कि जिसमें पैसे भी अच्छे मिल जायें और नाम भी पा सकें। वकालतका पेशा एक ऐसा था कि जिसमें उनकी मुरादें बर आ सकती थीं। मगर एल-एल. बी. होनेमें छः साल लगते थे, और कालिजके शाही ख़र्चके लिये पैसे भी कहाँ थे। इसके अलावा उम्र भी ज्यादा हो गई थी और शादी भी हो चुकी थी। सभी पहलुओंसे सोच-साचकर 'डिस्ट्रिक्ट प्लीडर' बननकी ठानी। घर बैठे-बैठे आदमी डिस्ट्रिक्ट प्लीडर हो सकता था। इधर उधरसे क़ानूनकी किताबें जमा कर लीं और तीन साल बाद सन् १९०० में वकील बन गये।

पैसे कमाकर विलायत जानेकी इनको बहुत इच्छा थी। इसलिये नये सामानकी बजाय कबाड़ियोंसे घरका सामान क़र्ज करके खरीद लिया। कर्ज़ इसलिये कि घरवालों पर अपना एक पाईका भी बोझ न डालना चाहते थे। गोधरामें घर बसाया। वकालत जमी और खूब जमी। दो साल बाद बोरसद चले आये और वकालत शुरू की। वे फ़ौजदारीके केस ही लेते थे। और क़रीब सभी केसोंमें सफल होते थे। कचहरीमें वल्लभभाईकी धाक जम गई। तिस पर भी लोग वल्लभभाईको 'डिस्ट्रिक्ट प्लीडर' यानी छोटा वकील ही समझते थे और अहमदाबादके बैरिस्टरको ज्यादा फ़ीस पर बुलाते थे। वल्लभभाईको यह बात बहुत खटकती थी। मगर कोई चारा न था। इस बदनामीको मिटानेके लिये बैरिस्टर बनना उन्होंने तय किया। पैसे तो आपने कमा लिये थे, इसलिये विलायत जानेकी तैयारी

करने लगे और पासपोर्ट आ गया। विट्ठलभाईने पासपोर्ट देखा। अंग्रेजीमें वी० जे० पटेल तो इनको भी लागू होता था। इसलिये बड़े भाईने छोटे भाईसे कहा, "मैं तुमसे बड़ा हूं। इस पासपोर्ट पर मुझे जाने दो। मेरे आनेके बाद तुमको अवसर मिल सकता है। मेरे वास्ते तो यही मौक़ा है। अगर यही अब निकल गया तो फिर अवसर न मिलेगा।" छोटेभाईने बात मान ली, इतना ही नहीं विट्ठलभाईका विलायतका खर्च भी अपने ऊपर ले लिया।

सन् १९०८ में विट्ठलभाई बैरिस्टर बनकर आ गये। इतनेमें वल्लभभाईकी पत्नी झवेरबा बीमार हो गई। बंबईमें इलाज करवाया मगर बेकार रहा। दो छोटे छोटे बच्चोंको छोड़कर सन् १९०९ में झवेरबा चल बसी। तैंतीस सालकी आयुमें विधुर हुए वल्लभभाईने फिर कभी घर न बसाया। अपने दोनों बच्चोंको एक अंग्रेज बाईके पास छोड़कर सन् १९१० में विलायत चले गये।

हाईस्कूलके उद्दण्ड और शरारती वल्लभभाई विलायतमें शांत होकर अभ्यासमें जुट गये। बैरिस्टर होकर देश जानेकी इन्हें जल्दी थी। मासूम भोलेभाले बच्चोंको पराई स्त्रीको सौंप आये थे। उम्र भी बड़ी थी और जीवनमें अनुभव भी पा लिये थे। इसलिये बाहरी चीजोंमें मन फँसाये बिना अभ्यासमें दत्तचित्त हुए। इनके अभ्यासकी लगन देखकर लोग दाँतों तले उँगलियाँ दबा लेते थे। क़ानूनकी कितावें इनके पास ज्यादा न थीं। इसलिये पढ़नेके लिये कालिजके पुस्तकालयमें रोज़ जाते

थे। इनके मकानसे वह पुस्तकालय ग्यारह-मील दूर था। वहाँ पैदल जाते, दोपहरका नाश्ता भी वहीं करते और ठीक छः बजे तक पढ़ाईमें लीन रहते। पुस्तकालयका चपरासी जब आकर विनती करता कि 'साहब, सब चले गये,' तब आप काम बंद करके पैदल घर वापस आते।

विलायतमें इनके पाँवमें नहरुवा निकल आया। डॉक्टरने कहा कि ऑपरेशन किया जायगा। साथ साथ यह भी कहा कि ऑपरेशन तब सफल होगा जब वे क्लोरोफॉर्म न लें। सरदारने बिना क्लोरोफॉर्म लिये ऑपरेशन करवाया और उफ़ तक न की।

बैरिस्टर होकर १९१३ में हिन्दुस्तान वापस आये और अहमदाबादमें वकालत शुरू कर दी और सामाजिक कामोंमें भाग लेने लगे। इस प्रकार एक किसानका लड़का अपने आत्मबल, महत्त्वाकांक्षा, निडरता, सहनशीलता, आग्रह, दृढ़ता, बुद्धिमानी और सेवाभावसे हिन्दुस्तानका एक बड़ा महापुरुष बन गया।

सवाल

(१) किस गुरुमंत्रके आधार पर वल्लभभाईने अपना जीवन बनाया?

(२) अंग्रेजी तीन दरजेके बाद वल्लभभाईने मैट्रिक तकका अभ्यास कैसे किया?

(३) वल्लभभाईकी शक्तिकी पहली झाँकी कहाँ होती है? और आगे इसका विकास कैसे हुआ?

(४) वल्लभभाई बैरिस्टर क्यों हुए?

(५) विलायतमें वल्लभभाईने किस तरह अभ्यास किया?
(६) वल्लभभाईके धीरज और सहनशीलताके जो प्रसंग इस पाठमें आते हैं, उनका वर्णन करें।

७

बया

[श्री पारसनाथसिंह]

अचरज बँगला एक बनाया,
ऊपर नींव तले पर छाया,
बाँस न बल्ली बंधन घने —
कह 'खुसरो' घर कैसे बने?

ढाकेकी मलमल मशहूर है। उसे बुननेवाले जुलाहे बड़े ही अच्छे कारीगर होंगे। किसी जमानेमें यूरोपके धनी समाजमें भी इस मलमलकी बड़ी खपत थी, और लोग इसकी खूबियाँ देखकर आश्चर्य करते थे, कि यहाँके जुलाहोंने कैसी उँगलियाँ पाई हैं। पर ऐसे कुछ कारीगर पक्षियोंके समाजमें भी पाये जाते हैं। वे उँगलियोंकी जगह अपनी चोंचोंसे काम लेते हैं, फिर भी बुननेमें कमाल कर दिखाते हैं। उनके घोंसलोंका ताना-बाना, देखकर आप दंग रह जायेंगे और आपके मनसे यह धारणा दूर हो जायेगी कि हुनर और कारीगरी मनुष्यके ही हिस्से पड़ी थी। पक्षियोंमें भी दर्जी और जुलाहे हैं और उनकी कला-कुशलता ऐसी है कि साधन-हीन होते हुए भी कितनी

ही बातोंमें वे मनुष्यसे बाज़ी मार ले जाते हैं। यहाँ हम एक ऐसे ही पक्षीका परिचय देंगे।

इसका नाम बया है। अंग्रेजीमें इसे जुलाहा कहते हैं और बहुत ठीक कहते हैं। यह अपना घोंसला और पक्षियोंकी तरह नहीं बनाता। घास-फूस जुटाकर यह उससे सूतका काम लेता है और अपनी करामाती चोंचसे अपना घोंसला बुन डालता है। ताड़के पत्तेके सिरेसे लटके हुए किसी घोंसलेकी याद कीजिये। वही बयाका मकान और इसकी कारीगरीका नमूना है।

पहला प्रश्न शायद आप यह करेंगे कि ऐसी जगह यह घोंसला क्यों बनाता है? पक्षी साधारणतः अपने घोंसलोंको सबकी आँखोंसे ओझल रखना चाहते हैं। फिर बयाको क्या पड़ी है कि वह इस तरह आसमानमें अपना झूला लगाता है और अपने दुश्मनोंकी नजर बचाना तो दरकिनार, उन्हें चिढ़ाता है, चुनौती देता है और उनके सामने झूलता है? इस प्रश्नका उत्तर यह है कि और पक्षी न तो बुननेकी कला जानते हैं, न बयाकी तरह "औघट घाटी" में अपना मकान बना सकते हैं। बयाका घोंसला सबकी आँखोंके सामने जरूर रहता है, पर लाख कोशिश करने पर भी कोई दुश्मन वहाँ पहुँच नहीं सकता। न डालका सहारा है, न टहनीका! ताड़के पत्तोंका जहाँ अन्त होता है वहाँसे बयाका घोंसला शुरू होता है। उस पर भी तुर्रा यह कि घोंसलेका दरवाजा ऊपर न होकर नीचे होता है। कौन दूसरा पक्षी माईका लाल है जो

उसके उस विचित्र घोंसलेमें घुस सके? यही कारण है कि बया किसीकी दृष्टिमें पड़नेकी परवाह नहीं करता। गहरी-से-गहरी परिखाओं या खाइयोंसे घिरा हुआ कोई क़िला उतना सुरक्षित नहीं है जितना पत्तेके सिरेसे लटका हुआ बयाका घोंसला।

बरसात आते ही नर और मादा घोंसला बनाने या बुननेके काममें हाथ लगा देते हैं। पुराना घोंसला रहा तो उसकी मरम्मत करके रहने लायक बना लेते हैं, नहीं तो नयेकी तैयारी की जाती है। घास-फूस और पत्तोंसे ही अपना महल उठाते हैं। मोटी या चौड़ी सींकोंको पहले चोंचसे चीर-चीरकर कई टुकड़े करते हैं। और उनमें से कुछ ताड़के पत्ते या बबूलकी पतली टहनीके सिरेसे जोड़ देते हैं। जोड़नेके लिये जो 'डोर' काममें लाते हैं वह प्राय. पाँच इंच लम्बी होती है— पर कभी कभी बारह इंच तक। उसी डोरको नीचेकी ओर बढ़ाते बढ़ाते घोंसलेका रूप प्रदान कर देते हैं। आरम्भमें नर और मादा दोनों ही सामान जुटाते और बुननेका काम करते हैं। फिर कुछ हिस्सा बन जाने पर भीतरका 'चार्ज' मादा ले लेती है और नरका काम रह जाता है, मसाला जुटाना और बाहरसे बुननमें सहायता पहुँचाना। यों तो दोनोंके ही लिये यह काम बड़ा दिलचस्प है, पर नरको इसमें कुछ विशेष आनन्द मिलता है। वह घास-फूस लाता है और अपनी ख़ुशी जाहिर करता है। बुनते बुनते आवेशमें आ जाता है और 'तराने' भरने लगता है।

घोंसला देखनेमें कुछ-कुछ बोतलकी शक्लका होता है। टहनी या पत्तेके सिरेसे वह इस मज़बूतीसे बँधा हुआ होता है कि आँधी-तूफ़ानमें भी उसके गिरनेका डर नहीं रहता। भीतर दो हिस्से होते हैं। एक तो वह कमरा या कोठरी जिसमें अण्डे दिये जाते हैं, दूसरा वह सुरंग या रास्ता जो नीचेकी ओर खुलता है और जिससे ये आते-जाते हैं। इस घोंसलेमें प्रवेश करना ज़रा टेढ़ी खीर है, पर अभ्यास होनेके कारण बयाको कोई कठिनाई नहीं होती। एक तो यही देखिये कि दरवाज़ा नीचे है और रहनेका कमरा ऊपर। फिर दरवाज़ेके पास घोंसला इतना ढीला-ढाला होता है कि अगर कोई दुश्मन वहाँ तक पहुंच भी जाय तो कहीं उसके पैर-ही नहीं जम सकते। बया खुद उड़ता हुआ आता है और अपने परोंको समेटकर उसी सुरंगसे सीधे अपने कमरेमें पहुँच जाता है। सुरंगकी चौडाई प्रायः दो इंच और लंबाई छः इंच होती है। कभी-कभी ऐसा होता है कि कमरा तैयार होते ही मादा उसमें चली जाती है और अण्डे देकर सेने लगती है। इधर नर अकेला बाकी हिस्सेको पूरा करता है। मादा एक वारमें प्रायः दो अण्डे देती है। कभी-कभी तीन और चार भी। इनका रंग सफ़ेद होता है। बच्चोंके निकलने पर उनको बाहरसे भोजन पहुँचानेके लिये उस कमरेमें कुछ सूराख कर दिये जाते हैं।

आकारमें बड़ा होते हुए भी बयाका घोंसला बहुत हलका होता है। इसलिये हवामें प्रायः हिलता-डुलता

रहता है। उसका वजन भारी करनेके लिये बया उसमे थोड़ी मिट्टी लाकर रख देता है। कुछ लोगोंका कहना है कि बया रातको अन्धकारमें रहना पसन्द नहीं करता, इसलिये जुगनूको पकड़ लाता है और उसी मिट्टीमें उसको चिपका देता है। अर्थात् जुगनूसे 'शमा' का काम लेता है और उस मिट्टीके छोटेसे लोंदेसे शमादानका। मालूम नहीं असलियत क्या है, पर कुछ लेखकोंको अभी इसकी सत्यतामें सन्देह है। जब तक कोओी पक्का सबूत नहीं मिलता तब तक यही मान लेना ठीक जंचता है कि हवाके झोंकेसे रक्षा करनेके लिये ही बया अपने घोंसलेमें मिट्टी लाकर रख देता है, और उसमें भारीपन ले आता है। बयाके कितने ही जोड़े प्रायः एक वृक्ष पर ही घोंसले बनाते हैं। जो घोंसला अधूरा रह जाता है, उसे झूला कहते हैं। कुछ लोगोंका खयाल है कि जिस समय मादा घोंसला बनाती रहती है उस समय नर, उसी झूले पर बैठ, उसके मनोरंजनार्थ गीत गाता रहता है। मालूम नहीं बात क्या है। हो सकता है कि घोंसलेका कुछ हिस्सा तैयार हो जाने पर मादाको उससे संतोष नहीं होता, इसलिये उसे अधूरा छोड़ देती है। यह भी संभव है कि घोंसला पूरा-का-पूरा तैयार हो जाने पर, नर आमोद-प्रमोदके लिये ऐसा झूला तैयार कर लेता है।

बयाको बुननेकी ऐसी आदत होती है कि अगर आप उसे पिंजरेमें रखें और उसे कुछ घास-फूस दे दें तो वह घोंसला बुनना शुरू कर देगा। अगर बचपनमें पकड़ा जाये

तो यह बड़ी आसानीसे पाला-पोसा जा सकता है। इसकी वुद्धि बड़ी तीक्ष्ण होती है, इसलिये इसे तरह-तरहके खेल भी — जैसे हलकी हलकी चीजें किसी स्थानसे ले आना, मालिकके मुँहके पास उड़कर आना और उसके ओठोंके बीचसे अनाजके दाने निकाल लाना, पानी भरना, खिलौनेकी बन्दूकसे फ़ायर करना इत्यादि — आसानीसे सिखाये जा सकते हैं।

नर और मादा दोनों ही रंग और आकारमें गौरैयाके समान होते हैं। पर बरसात शुरू होते ही नरका रंग बदल जाता है। छाती, गरदन, और सिर तीनों सुनहले हो जाते हैं और ठोड़ी स्याह-सी दीखने लगती है। दाना चुगनेवाली चिड़ियोंकी तरह बयाकी चोंच कुछ मोटी होती है। दानकी भूसी अलग करनेके लिये इस प्रकारकी चोंच विशेष उपयोगी होती होगी।

सवाल

(१) बयाके घोंसलेको हम कैसे पहचान सकते हैं?
(२) बया अपना घोंसला खुलेमें क्यों और कैसे बनाता है?
(३) दुश्मनसे बयाके घोंसलेको क्यों नुक़सान नहीं पहुँचता?
(४) बयाके घोंसलेका वर्णन कीजिये और बताइये कि उसमें मिट्टी क्यों होती है?
(५) बयाके दाम्पत्य-जीवनका बयान करें।
(६) किसी और पक्षीका घोंसला और उसे बनानेकी रीतिका वर्णन करें।

लुहारकी एक

[श्री अन्नपूर्णानन्द]

पौ फटनेकी खुशीमें संसारके सारे मुरग़े अपना गला फाड़कर चुप हो चुके थे। अब छोटी चिड़ियोंकी बारी थी। वे खुली हुई खिड़कियोंसे झाँककर सोनेवालोंको धिक्कार रही थीं।

जागनेकी कोशिशमें राधेने भी कुछ करवटें बदल डालीं। पर दो करवटोंके बीचमें उसकी आँखें एक बार फिर ज़रा लग गयीं। इस समय उसने स्वप्नमें क्या देखा कि ब्रह्मा अपने कमंडलमें हिमालय पर्वतको रखकर हिला रहे हैं। वह उठ बैठा। उसने देखा कि उसके कमरेका दरवाज़ा हाथोंसे, लकड़ियोंसे, जूतोंसे पीटा जा रहा है।

उसने घबराकर कमरा खोल दिया। बाहर बोर्डिंगके छटे हुए शैतानोंका एक दल खड़ा था। उनमेंसे एकने कहा—"अजी, तुम अभी सो रहे हो? आज हम लोगोंकी पिकनिक पार्टी है। चलो, तुम्हें भी चलना होगा।"

अपने दुर्भाग्यसे उसने 'नहीं' कहना नहीं सीखा था। यही उसकी कमी और कचाई थी। अपनी बुद्धिके बार-बार मना करने पर भी उसने हामी भर दी।

पिकनिकके लिये जो स्थान नियत हुआ था वह ठीक नदीके किनारे शहरसे ५-६ मीलके फ़ासले पर था। रास्ता पगडंडियोंका था। पैदल चलकर वहाँ पहुँचना था।

सात बजे तक वे सब रवाना हो गये। उनकी संख्या दर्जनके पार ही थी। 'जिमि दसनन महँ जीभ बिचारी'—वह भी उनके साथ चला।

पिकनिकका थोड़ा आनंद तो उसे चलनेके पहले ही प्राप्त हो गया, जब प्रायः सभीने उसे अपनी एक-न-एक चीज़ हवाले की, और कहा कि इसे लिये चलो। मुरारीने अपना ओवरकोट उसके कंधेपर डाल दिया कि संध्या समय जरूरत पड़ेगी तो ले लूँगा। मोहनने दो मोटे उपन्यास उसकी बग़लमें दबा दिये कि इच्छा होगी तो वहीं लेटकर पढ़ूँगा। माधो आज नदीके किनारे खुली हवामें कसरत करनेवाला था। उसने अपने डंबल उसे पकड़ा दिये कि वहाँ पहुँचकर तुमसे ले लूँगा।

मालगाड़ी-सा लदा हुआ और इंजिन-सा हाँफता हुआ वह निर्दिष्ट स्थानपर पहुँचा। दोपहर तक खाना तैयार हुआ और लोग खाने बैठे।

खानेके पहले वह हाथ-पाँव धोने नदी-किनारे गया था। लौटकर देखता है कि उसकी पत्तलसे चूरमेके लड्डू ग़ायब हैं और दही-बड़ोंके नामपर सकोरेमें थोड़ा मट्ठा बच रहा है!

उसने एक लम्बी साँस ली और खाने बैठ गया। खानेके बाद लोगोंने उसकी कमीज़से, जो उसने उतार कर टाँग दी थी, हाथ पोंछे। वह लेटा था कि उसकी नाकपर सुँघनी भुरकी जाने लगी। अपनी नाराजगी प्रगट करनेके लिये वह उनकी ओर पीठ फेरकर बैठा तो उसकी पीठपर तबला बजाया जाने लगा।

वह सबसे अलग एक पत्थरपर जा बैठा। उसका मन खट्टा हो गया था। उसकी आज तककी आप-बीती उसकी आँखोंके सामने एक-एक करके गुज़रने लगी। बोर्डिंगमें उसका पहला दिन भी खैरियतसे न बीता था। उसने अपने बादामी जूतोंपर काली पालिश पोती हुई पायी थी।

फिर तो वह रोज़ ही ऐसी हरकतोंका शिकार बनता। बाहरसे साँकल चढ़ाकर वह घंटों अपने कमरेमें क़ैद कर दिया जाता। बोर्डिंग भरमें जितने केले और संतरे खर्च होते, उनके छिलके उसके दरवाज़े पर फेंके जाते!

एक बार उसका आधा टिन घी गायब हो गया और उसके स्थानपर उसे चावलका मांड भरा मिला। एक रोज़ पानी पीनेके लिये वह मुँहके पास लोटा ले जा रहा था कि उसमेंसे एक जीता-जागता मेंढक उछल पड़ा, जिसे—पीछे मालूम हुआ—मुरारीने कहींसे पकड़कर उसमें बन्द कर दिया था। लोटा हाथसे छूटकर उसके पैरके अँगूठेपर गिरा और वह अरसे तक लँगड़ाता रहा।

एक समय आता है जब चन्दन भी आग फेंक देता है। कितना सहूँ, कैसे सहूँ और कब तक सहूँ — ये ही प्रश्न उसके दिलमें उठते थे और विलीन होते थे। आफ़त एक तरफ़से हो और एक तरहकी हो तो कोई बरदाश्त भी कर ले। यहाँ तो सारा बोर्डिंग एक विशाल कारखाना था, जहाँ नित्य कोई नयी शैतानी गढ़-छीलकर तैयार होती और जिसकी आजमाइश उसीके ऊपर की जाती।

खैर, किसी तरह शाम हुई और दोस्तोंने चलनेकी तैयारी की। वह भी उनके साथ चला। पर होनहारको कौन जानता था?

वह दस क़दम भी न चला होगा कि चीख उठा। जब तक लोग उसके पास दौड़ आवें तब तक वह लड़खड़ाकर गिर पड़ा। चारों ओरसे 'क्या है, क्या है' आवाज आने लगी। उसने हाय भरकर कहा कि मुझे साँपने काट खाया!

यह सुनना था कि सबको जैसे काठ मार गया। यह कैसा रंगमें भंग! शहरसे सात मीलका फ़ासला और पगडंडियोंका रास्ता। कोई होशियार डॉक्टर मिले तो बेचारेकी जान बच जाय। लेकिन डॉक्टर बिना शहर गये कहाँ मिलेंगे?

मुरारीके भी हाथपाँव फूल गये थे, पर उसने शीघ्र अपनेको सँभाला। पासमें एक गाँव था। वहीं किसी किसानसे उसने दो रुपयोंमें एक खाट मोल ली।

इसी खाट पर उसे लिटाकर चार लड़कोंने अपने सिर पर उठा लिया और शहरकी ओर ले दौड़े। बाक़ी १०-१२ लड़के साथ साथ दौड़ चले। पहली चौकड़ीके थक जाने पर दूसरी चौकड़ी खाटको उठा लेती थी। यों कंधे बदलते आगे चले जा रहे थे।

उसका वजन कम नहीं था। जो उसे खाट समेत उठाकर दौड़ रहे थे उन्हींका दिल जानता था। दौड़ते दौड़ते उनका बुरा हाल था। पसीनेसे तर तो सभी हो रहे थे। कुछ लड़के अपना पेट पकड़कर हाँफ रहे थे,

पर तब भी दौड़ते चले जा रहे थे। रास्तेमें जो मिलता वही उन्हें और तेज़ दौड़नेकी सलाह दे रहा था। और वह भी बेहोश होता जाता था। ये लोग उसकी हालत देखकर घोड़ोंकी तरह दौड़ रहे थे।

खैर, घंटे-भरकी सरपट दौड़के बाद शहरकी बिजलियाँ दिखाई पड़ने लगीं। शहरमें घुसते ही बोर्डिंग था और पास ही सिविल सर्जनका बँगला था।

लड़कोंने सिविल सर्जनके बँगले पर उसकी खाट उतारी। घोर श्रान्तिके कारण वे मृतप्राय हो रहे थे। जिसे जहाँ जगह मिली वह वहीं गिरकर बैठ रहा। उनकी साँस धौंकनीकी तरह चल रही थी, मुँहसे सीधे बात न निकलती थी।

खैर, साहबको खबर हुई। खाना खा रहे थे। छोड़कर बाहर आये। उन्हें देखकर राधे उठ बैठा। साहबने पूछा — "तुम्हें साँपने कहाँ पर काटा है?" उसने निहायत सादगी और सीधेपनसे कहा — "कैसा साँप?"

"तुम्हें साँपने काटा है न?"

"नहीं तो, कौन कहता है?"

साहबने उसके साथियोंकी ओर इशारा किया। उसने कहा, "ये सब शैतान हैं। आपको बेवक़ूफ़ बना रहे हैं। मुझे साँप क्यों काटने लगा? मैं तो थककर इस खाटपर सो गया था। ये सब शरारतन् मुझे ले भागे!"

इस समय उन शैतानोंकी दशा देखने योग्य थी। जान पड़ता था कि किसीने तेजाबमें डालकर उन्हें पकाया है। साहब अपनी आँखोसे उन्हें खा डालनेकी कोशिश कर रहे थे।

उसका ठहरना अब बेकार था। वह चलता हुआ। यार लोग साहबसे निबटते रहे।

सवाल

(१) बोर्डिंगमें राधेका पहला दिन कैसे गुजरा?
(२) राधेको लड़के किस किस रीतिसे तंग करते थे?
(३) राधेने शरारतियोंसे अपना पीछा कैसे छुड़ाया?

९

खुशामद

[स्व० श्री प्रतापनारायण मिश्र]

[आप विनोदपूर्ण शैलीके इने-गिने लेखकोंमें से थे। आपके विचार गहरे होते थे। मगर आपका लिखनेका ढंग विनोदपूर्ण था। आप बोलचालकी मुहावरेदार भाषा लिखते थे।

'कलि कौतुक', 'हठी हमीर', 'भारत दुर्दशा', 'मनकी लहर' वगैरा आपकी प्रसिद्ध रचनायें हैं।]

यद्यपि यह शब्द फ़ारसीका है, पर हमारी भाषामें ऐसा घुलमिल गया है कि इसके ठीक भावका बोधक, कोई हिन्दी शब्द ढूंढ़ लावे तो हम उसे बड़ा मर्द गिनें। 'मिथ्या प्रशंसा', 'ठकुर सुहाती' इत्यादि शब्द गढ़े हुए हैं।

इनमें वह बात नहीं पाई जाती जो इस मोहिनी-मंत्रमें है। कारण इसका यह जान पड़ता है कि हमारे पुराने लोग सीधे, सच्चे, निष्कपट होते रहे हैं। उन्हें इसका काम ही बहुत कम पड़ा था। फिर ऐसे शब्दके व्यवहारका प्रयोजन क्या? जबसे गुलाबका फूल, उर्दूकी शीरीं जबान इत्यादिका प्रचार हुआ तभीसे इस करामाती लटकेका भी जोर खुला। आहाहा!! क्या कहना है। हुजूर खुश हो जायँ और बन्देकी भी आमद हो। यारोंके गुलछर्रे उड़ें। फिर इसके बराबर सिद्धि और काहेमें है। आप चाहे कैसे कड़े मिज़ाज हों, रुक्खड़ हों, मक्खीचूस हों, जहाँ हम चार दिन झुक-झुक कर सलाम करेंगे, दौड़-दौड़ कर आपके पास आवेंगे, आपकी हाँ में हाँ मिलावेंगे, आपको इन्द्र, वरुण, हातिम, कर्ण, सूर्य, चन्द्र, लैली, शीरीं इत्यादि बनावेंगे, आपको जमीन परसे उठाकर झंडे पर चढ़ावेंगे, फिर बतलाइए तो आप कब तक राह पर न आवेंगे? हम चाहे जैसे निर्बुद्धि, निकम्मे, अविद्वान, अकुलीन क्यों न हों, पर यदि हम लोकलज्जा, परलोक-भय सबको तिलांजलि देकर आप ही को अपना पिता, राजा, गुरु, पति, अन्नदाता कहते रहेंगे तो इसमें कुछ मीनमेष नहीं है कि आप हमें अपनायेंगे और हमारे दुःख-दारिद्रय मिटावेंगे।

अजी साहब, आप तो आप ही हैं। हम दीनानाथ, दीनबंधु, पतितपावन कह कहकर ईश्वर तकको फुसला लेनेका दावा रखते हैं। तो दूसरे किस खेतकी मूली हैं? खुशामद वह चीज है कि पत्थरको मोम बनाती है,

बैलको दुहके दूध निकालती है। विशेषतः दुनियादा
स्वार्थपरायण, उदरभर लोगोंके लिये इससे बढ़कर व
रसायन ही नहीं है। जिसे यह चतुराक्षरी मंत्र न आ
उसकी चतुरतापर छार है, विद्या पर धिक्कार है अ
गुणोंपर फटकार है! कोई कैसा ही सज्जन, सुशी
सहृदय, निर्दोष, न्यायशील, नम्र-स्वभाव, उदार, सद्गुणागा
साक्षात् सतयुगका औतार क्यों न हो, पर यदि खुशाम
न जानता हो तो इस जमानेमें तो उसकी मट्टी ख्वार
मरनेके पीछे चाहे भले ही ध्रुवजीके मुकुटका मणि बना
जाय। और जो खुशामदसे रीझता न हो उसे भी ह
मनुष्य तो नहीं कह सकते, पत्थरका टुकड़ा, सूखे काठ
कुन्दा या परम योगी, महावैरागी कहेंगे। एक कवि
वाक्य है कि —

'वार पचै, माछी पचै, पाथर हू पचि जाय
जाहि खुशामद पचि गई ताते कछु न बसाय।'

सच है खुशामदी लोगोंकी बातें और घातें ही ऐ
होती हैं कि बड़ों-बड़ोंको लुभा लेती हैं। सब जानते
कि यह अपने मतलबकी कह रहा है, पर लच्छेदार बातों
मायाजालमें फँस बहुधा सभी जाते हैं। क्यों नहीं? ए
लेखे पूछो तो खुशामदी भी एक प्रकारके ऋषि-मुनि होते हैं
अभी हमसे कोई जरा-सा नखरा करे तो हम उरदके आटेव
भाँति ऐंठ जायँ। हमारे एक उजड्ड साथीका कथन है कि

'वरं हलाहलपानं सद्यः प्राणहरं विषम्।
न हि दुष्टधनाढ्यस्य भ्रूभंगकुटिलाननः॥'

—शीघ्र प्राण हरनेवाला विष पीना अच्छा है, किसी कुटिल मुखवाले धनाढ्यका क्रोध सहना अच्छा नहीं । पर हमारे खुशामदाचार्य महानुभाव सब तरहकी झिड़की, निन्दा, कुबातें सहने पर भी हाथ जोड़ते रहते हैं । भला ऐसे मनके जीतने-वालोंके मनोरथ क्यों न फलें ? यद्यपि एक न एक रीतिसे सभी सबकी खुशामद करते हैं, यहाँ तक कि जिन्होंने 'सब तज हर भज' का सहारा करके वनवास अंगीकार किया है, कंद-मूलसे पेट भरते हैं, भोजपत्रादिसे काया ढँकते हैं, उन्हें भी गृहस्थाश्रमकी प्रशंसा करनी पड़ती है । फिर साधारण लोग किस मुंहसे कह सकते हैं कि हम खुशामद नहीं करते । परंतु यह कहना कि हमें खुशामद करनी नहीं आती आला दरजेकी खुशामद है । जब आप अपने चेलेको, नौकरको, पुत्रको, स्त्रीको, खुशामदीको नाराज देखते हैं और उसे राजी न रखनेमें धन, मान, सुख, प्रतिष्ठादिकी हानि देखते हैं, तब कहते हैं 'क्यों ? अभी सिरसे भूत उतरा है कि नहीं !' यह भी उलटे शब्दोंमें खुशामद है । सारांश यह कि खुशामदसे खाली कोई नहीं है । पर खुशामद करनेकी तमीज हरएकको नहीं आती । इतने बड़े हिन्दुस्तानमें केवल चार छः आदमी खुशामदीकी पदवी ग्रहण कर सकेंगे । हम अभी पाठकोंको सलाह देते हैं कि यदि अपनी उन्नति चाहते हों तो नित्य थोड़ा थोड़ा खुशामदका अभ्यास करते रहें । देशोन्नतिके पागलपनमें न पड़ें, नहीं तो हमारी ही तरह कठमुल्ला बने रहेंगे ।

सवाल

(१) खुशामदी आदमी दूसरोंकी किस प्रकार खुशामद करते हैं?
(२) खुशामदका क्या प्रभाव है?
(३) खुशामद न करनेवालोंके बारेमें लेखकका क्या अभिप्राय है?
(४) इस पाठका व्यंग्यार्थ क्या है?

१०

स्वमानी — कबा गांधी

[श्री प्रभुदास गांधी]

[महात्मा गांधीके आप भतीजे हैं। बचपनसे ही आप गांधीजीके पास रहे हैं। आपने बाक़ायदा स्कूली तालीम नहीं पायी है, मगर जीवनकी आपने शिक्षा पायी है। आप गुजरातीके मशहूर लेखक हैं। हिन्दीमें भी कभी कभी लिखते हैं। आपको "जीवननुं परोढ" पुस्तक पर अभी अभी सुवर्णचंद्रक मिला है। आपकी शैली चोटदार और चमत्कारक है।]

नोट: —

कबा गांधी गांधीजीके पिता थे। उनका पूरा नाम करमचन्द उत्तमचन्द गांधी था, मगर वे कबा गांधीके नामसे ही मशहूर हो गये थे। गांधीजीमें सत्यनिष्ठा, प्रतिज्ञापालन, वचनपालन वगैरा जो गुण थे उनका मूल हमें कबा गांधीके यहाँ दिये हुए जीवन-प्रसंगमें मिलता है।

कबाकाकाकी आयु जैसे-जैसे बढ़ती गई, वैसे-वैसे उनके पौरुष और धर्मपालनके आग्रहमें भी वृद्धि होती गई। उन्होंने अपने जीवनके अन्तिम वर्षोंमें ग़रीबीको जानबूझकर अपनाया।

साधारणतया खर्चके बढ़नेके साथ-साथ मनुष्यका रुपये-पैसेसे मोह बढ़ता है, अपनी और अपने परिवारकी सुख-सुविधा प्राप्त करनेके लिये मन अधिक ललचाता है तथा व्यावहारिकताकी तुलनामें सिद्धांत-निष्ठा गौण हो जाती है। परन्तु कवाकाका उन थोड़ेसे विवेकशील और कर्तव्य-निष्ठ व्यक्तियोंमें थे, जिनका सांसारिक अनुभव बढ़नेके साथ-साथ जीवनके नित्य व्यवहारमें सिद्धांतको प्राथमिकता देनेका आग्रह बढ़ता जाता है और व्यवहार-पटुताको ही सर्वोपरि माननेकी वृत्ति कम हो जाती है। इस बातका प्रत्यक्ष उदाहरण हमें कबाकाकाके वांकानेर राज्यके एक स्मरणीय प्रसंगसे मिलता है।

राजकोटसे क़रीब तीन स्टेशन उत्तरकी ओर बढ़ने पर वांकानेर जंक्शन आता है, जहाँसे रेलवेकी एक शाखा मोरवी शहरको जाती है। दो-तीन सौ फ़ुटकी ऊँचाईवाली एक समतल-सी पहाड़ी पर वांकानेर शहरके कुछ सुन्दर मकान बने हैं और इसी पहाड़ीकी तराईमें वह छोटासा शहर बसा है। शहरसे लगकर ही एक छोटीसी नदी बहती है, इसलिये वहाँका दृश्य बड़ा चित्ताकर्षक है।

यह वांकानेर भी राजकोटकी तरह सौराष्ट्रका एक द्वितीय श्रेणीका राज्य था। वह विस्तार तथा आयमें राजकोटसे अधिक और आबादीमें उससे कम था। लेकिन वहाँका शासन-प्रबंध अच्छा न था। वहाँका राजा अपनी रियासतके बारेमें बहुत चिन्तित हो उठा था। भ्रष्टाचारके कारण उसका अनुशासन ढीला पड़ गया था। साथ-साथ

कार्यदक्षताका भी कर्मचारियोंमें अभाव था। किसी सज्जनने राजासाहबको परामर्श दिया कि यदि राजकोटसे गांधीको बुलाकर उसके हाथमें वांकानेर राज्यकी बागडोर दी जाय तो रियासत बर्बादीसे बच जाएगी और कर्मचारी शीघ्र ही ठिकाने पर आ जाएँगे। राजासाहबको यह सलाह पसन्द आ गई और उन्होंने कबाकाकाके साथ बातचीत शुरू कर दी। कबाकाकाने राजासाहबसे कुछ शर्तें कर लीं कि जिससे उन्हें राज्यके प्रबन्धमें मुश्किल न पड़े और उन्होंने कमसे कम पाँच सालके लिये वांकानेर रहना तय कर लिया। राजासाहबने यह भी मंजूर किया कि उनके हस्तक्षेपके कारण अगर कबाकाकाको नौकरी छोड़नेकी नौबत आये तो उनको पाँच वर्षका पूरा वेतन वे चुका देंगे।

राजासाहबने वांकानेरके चार बड़े व्यापारियोंके पास प्रति मास ६०० रुपयोंके हिसाबसे पाँच वर्षका कुल वेतन, अर्थात् छत्तीस हजार रुपये जमा कर दिये। ये रुपये वांकानेर राज्यके बाहर राजकोट जैसी अन्य रियासतमें जमा नहीं किये गये। वे राजकोटकी नौकरीसे त्यागपत्र देकर वांकानेर गये। और उन्होंने वहाँके राज्य-प्रबन्धका काम अपने हाथमें ले लिया।

सबसे पहले उन्होंने वांकानेर राज्यके चालू काम-काजका गहरा अध्ययन किया; कुछ समय बाद रियासतके आंतरिक प्रबन्धमें आवश्यक परिवर्तन करना शुरू कर दिया। किंतु उनके कुछ परिवर्तन राजासाहबको पसन्द नहीं आये। वे अप्रसन्न हो गये और वचनबद्ध होने पर

भी अपनेको रोक नहीं पाये। उन्होंने कवाकाकाके प्रबंधमें हस्तक्षेप कर ही दिया । एक बार एक पत्र भेजकर राजासाहबने कवाकाकाको सूचित किया कि अमुक परिवर्तन ठीक नहीं है; उसे पूर्ववत् कर दिया जाए। कवाकाकाको यह पत्र बुरा लगा; परन्तु उस समय उन्होंने धैर्यसे काम लिया। इस घटनाको पूरे दो महीने भी न बीते होंगे कि राजासाहबके पाससे उन्हें दूसरा पत्र मिला, जिसमें कर्मचारियोंके छोटे-मोटे परिवर्तनोंके बारेमें उलाहना दिया गया था । इस पत्रके उत्तरमें कवाकाकाने धैर्य व शांतिके साथ राजासाहबको संक्षिप्त उत्तर भेजा कि "मैंने जो किया है, सोच-समझकर किया है और राज्यके हितके लिये ही किया है।"

इस उत्तरसे राजासाहब कुछ अवधिके लिये ठंडे पड़ गये; परन्तु थोड़े समय बाद उन्होंने कवाकाकाके निर्णयको उलटनेके लिये ऐसा प्रत्यक्ष हस्तक्षेप किया जो कवाकाकाके लिये सर्वथा असह्य था।

ज़मीन महसूलके रूपमें राज्यके पास जो ग़ल्ला इकट्ठा हो जाता था उसे नीलाम करके व्यापारियोंको बेच दिया जाता था और वह धन राजकोषमें जमा कर दिया जाता था। कवाकाकाने पुरानी प्रथाके अनुसार ग़ल्लेको नीलाम करनेका तय किया। और राजासाहबकी सम्मतिके बिना ऊँचीसे ऊँची बोलीवालेको गल्ला देना मंजूर कर लिया और नीलाम समाप्त कर दिया ।

कुछ असन्तुष्ट कर्मचारियोंने राजासाहबके पास कबाकाकाकी शिकायत पहुँचाई कि कबा गांधीने बिलकुल मनमाना काम किया है और ऐसी महत्त्वपूर्ण बातमें भी राजाका परामर्श नहीं लिया। राज्यके प्रति यह गम्भीर अपराध किया है।

शिकायत सुनकर राजासाहब संतप्त हो उठे और उन्होंने उसी समय कबाकाकाको अपने सामने बुलाकर पूछा — नीलाममे गल्लेका हमें क्या भाव मिला?

कबाकाकाने उत्तर दिया कि राजकोट और मोरवीके राज्योंमें जो भाव मिला है उससे अधिक भाव पर हमारा माल नीलाम हुआ है।

इस उत्तरसे राजासाहब सन्तुष्ट नहीं हुए और बोले — "कुछ भी हो, नीलामके लिये आये हुअे व्यापारियोंको आप लौटने मत दीजिए। उनको मेरे पास दरबारगढ़में बुलाइए। मैं फिरसे बोली बुलवाकर देखूंगा।" कबाकाकाने कहा — आप बीचमे दखल नही दे सकते, हमारी यह शर्त है।

राजासाहबने जवाब दिया — यह तो राज्यकी आयका प्रश्न है। राज्यकोषमें वृद्धि होती हो तो यह क्यों न की जाय?

कबाकाका बोले — क्षमा करें, मैं वचनबद्ध हो चुका हूँ। जब मैंने नीलामकी समाप्ति कर डाली तब मैं उस मालको उसी भाव पर देनेके लिये बाध्य हूँ। अतः आपकी इस आज्ञाका पालन करना मेरे लिये असंभव है।

यह कहकर कबाकाका राजासाहबके पाससे लौट गये।

राजासाहबने फिर भी अपनी बात नहीं छोड़ी और अपना आदमी भेजकर नीलामवाले सभी व्यापारियोंको दरबारगढ़में बुलवा लिया। राजासाहबके प्रश्नके उत्तरमें व्यापारियोंने उनसे नम्रतापूर्वक कहा कि ग़ल्लेका जो भाव राज्यको मिला है वह अच्छा है और जब गांधीने अन्तिम बोली मान ली है, तब हममे से कोई दुबारा बोली नहीं बोल सकता। जिस व्यापारीको गांधीने माल देना स्वीकार कर लिया उसीका अब वह हो गया।

इस प्रकार जब व्यापारी लोग ही कबाकाकाकी बातको बदलनेको तैयार नही हुए तो राजासाहब और कर ही क्या सकते थे? उनको मन मारकर रह जाना पड़ा।

परन्तु कबाकाकाके लिये अब वांकानेरमें ठहरना कठिन हो गया। राजकोटसे जब उनको आमन्त्रित किया गया था तब राजासाहबके साथ बातचीतमें मध्यस्थता करनेवाले जो नवलशंकरभाई थे उनके पास उन्होंने पत्र द्वारा संदेश भेज दिया कि करारका प्रत्यक्ष भंग किया गया है। अब में इस राज्यमे अधिक समय रुकना नहीं चाहता। मुझे तुरन्त ही राजकोट लौट जाना है। आप मेरे लिये सवारीका प्रबन्ध तुरन्त करा दें। जब तक सवारीका प्रबन्ध नही होता, मैं भूखा-प्यासा रहूँगा। इस राज्यकी सीमासे बाहर न निकल जाऊँगा तब तक पानीकी एक घूंट भी लेना मेरे लिये हराम है।

वांकानेरके महाजनोंने और राजासाहबके प्रतिनिधियोंने कबाकाकाको मनानेकी बड़ी कोशिश की, परंतु कबाकाका नहीं माने। कबाकाकाका उग्र क्रोध लोगोंमें मशहूर था, इसलिये उनसे अधिक चर्चा करनेका साहस किसीको नहीं हुआ और उनको राजकोट पहुँचानेके लिये दो बैलोंकी एक सिकरम भेज दी गई। सौराष्ट्रमें तब तक रेलगाड़ी शुरू नहीं हुई थी।

दो सप्ताह बीत जाने पर राजासाहबका एक पत्र कबाकाकाके पास आया। उसमें क्षमा चाही गई थी और वांकानेरका मंत्रित्व पुनः स्वीकार करनेके लिये उनसे अनुरोध किया गया था। कबाकाकाने उस पत्रको ध्यानसे पढ़ा और उसमें उनको पश्चात्तापकी झलक दीख पड़ी। वे राजासाहबका अनुरोध स्वीकार करके दुबारा वांकानेर चले गये; परंतु वहाँ मुलाक़ातमें जो थोड़ीसी बातचीत हुई उससे उन्हें सन्तोष नहीं हुआ। उन्होंने परख लिया कि नित्यके काममें भी राजासाहब अपना हस्तक्षेप छोड़ना नहीं चाहते और पूरा उत्तरदायित्व सौंपनेके लिये दिलसे तैयार नहीं हैं। इसलिये पुनः वांकानेरके दीवानपदका बोझ उठाना कबाकाकाने उचित नहीं समझा और राजासाहबसे नम्र निवेदन किया कि मुझे क्षमा किया जाय; अब और आगे चलनेमें मैं असमर्थ हूँ। कृपया आप मेरा हिसाब चुका दें।

उन दिनों सभी रियासतोंमें राज्यके कर्मचारियोंका वेतन हर महीने नहीं चुकाया जाता था। पाँच-सात महीने

या वर्ष-डेढ़ वर्ष बाद राजा लोग अपनी सुविधाके अनुसार इकट्ठा वेतन चुकाया करते थे। राजकर्मचारियोंको बनियोंके यहाँ खाता खोलनेकी सुविधा कर दी जाती थी, ताकि राजसेवकोंका घर-खर्च चलता रहे।

इस प्रणालीके अनुसार कवाकाकाको भी अपनी वांकानेरकी नौकरीका कुछ भी वेतन तब तक नही मिला था। जब राजाने देखा कि कवाकाका माननेवाले नहीं हैं, तब उन्होंने उनसे लिखित त्यागपत्रकी माँग की। कवाकाकाने तत्काल अपना त्यागपत्र लिख दिया और उसमें स्पष्ट किया कि "चूंकि आपने दो बार मुझे धोखा दिया है, मेरे प्रबन्धमें आपको जहाँ कुछ भी हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये वहाँ हस्तक्षेप किया और इस प्रकार हमारी शर्तका भंग किया है, इसलिये मैं आपके मन्त्रीपदसे त्यागपत्र देता हूँ व शर्तके अनुसार अपना पूरा वेतन चाहता हूँ।"

राजासाहबको त्यागपत्रकी भाषा बुरी लगी और उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया। उन्होंने सूचित किया कि धोखा देनेकी बातका और शर्त-भंगका उल्लेख छोड़कर केवल सीधा-सादा त्यागपत्र लिख दिया जाय। परन्तु कवाकाकाने ऐसा करनेसे इनकार कर दिया।

कवाकाकाने साफ़ साफ़ कहा कि "जो वास्तविक बात नहीं है, वह क्यों लिखूं? मेरे लिये यहांसे जानेका दूसरा कारण ही क्या है?"

राजासाहबने घुमा-फिराकर कवाकाकासे त्यागपत्र बदलवानेका प्रयास किया और न बदलने पर पूराका

पूरा वेतन न देनेकी धमकी भी दे डाली। किंतु कवाकाका अविचलित रहे। सत्यको छिपाकर खुशामद करनेकी बात पर उन्होंने तीव्र विरोध व्यक्त किया।

अन्तमें राजासाहबने अधिक बहस करना छोड़कर कहा: "खैर! आप त्यागपत्र लिखिए ही मत; आपने आज तक राज्यकी जो सेवा की है उसको ध्यानमें रखकर मैं आपको दस हजार रुपये देता हूँ। उन्हें ले लीजिए और झगड़ा समाप्त कीजिये।"

कवाकाका इसके लिये भी राजी नही हुए और उन्हे लेनेसे इनकार करते हुए उन्होंने कहा:

"अगर आपको देना है तो बाकायदा मेरा त्यागपत्र स्वीकार करके शर्तके अनुसार पूरा पूरा वेतन दे दीजिए, नहीं तो मुझे एक फूटी कौडी भी नही चाहिये।"

राजाने कहा — "सोच-समझ लीजिए। बिना लिखा-पढ़ीके कोई ऐसी भारी रकम सहजमें नहीं दे देता। सुना है, आप अपने पुत्रको पढ़नेके लिये विलायत भेजनेका विचार कर रहे हैं। उस समय यह रकम काम दे जाएगी। अपने लिये नहीं तो अपने बच्चोंके लिये ही सही, आप इसे ले लीजिए।"

कवाकाकाने राजासाहबकी बातका दो टूक उत्तर दिया: "आपके समान कृपालु राजा-महाराजा अनेक मिल जायेंगे, जो अंजलि भर भरकर देनेवाले होंगे; परन्तु मेरे समान राजसेवक विरला ही मिलेगा, जो सचाई पर पर्दा डालनेसे इनकार करे और इतनी बड़ी रकमको हाथसे जाने दे।"

राजासाहब और कबाकाकाके बीच जब यह बातचीत चल रही थी, तब उन दोनोंकी जान-पहचानके और बीच-बचाव करनेवाले एक और भी सज्जन वहाँ उपस्थित थे। उन्होंने कबाकाकाको समझानेकी कोशिश की और कहा: "राजाके रूठनेका क्या नतीजा होता है यह आप तो जानते हैं। फिर जब राजा अपनी इच्छासे आपको दस हज़ार रुपये दे रहे हैं, तो उनको स्वीकार कर लीजिए। यह रक़म कोई थोड़ी नहीं है।"

ऐसा कहकर कबाकाकाको उत्तर देनेका मौक़ा दिए बिना ही उन्होंने वहाँ पर तैयार पड़ी हुई रुपयोंकी थैलियाँ उठाकर कबाकाकाकी सिकरममें रख दीं। यह देख कबाकाका फ़ौरन् उठ खड़े हुए और उन्होंने स्वयं थैलियोंको सिकरमसे उतारकर फाटकके पासवाले चबूतरे पर रख दिया। इसके बाद वे सिकरम पर सवार होकर राजकोट चल दिए। यदि कबाकाका थोड़ा-सा भी झुक गये होते तो दस हज़ार ही क्या, शायद पूरे छत्तीस हज़ार रुपये पा सकते थे। परन्तु वे उन लोगोंमें नहीं थे, जो अपनी टेकको छोड़कर रुपयोंके सामने सिर झुका देते हैं। उन्होंने अपनी टेक निभाई; अपना सर ऊँचा रखा और वे खाली हाथ घर लौट आये।

सवाल

(१) कबा गांधीको वांकानेरका मंत्रीपद क्यों सौंपा गया?

(२) कबा गांधीके मार्गमें राजासाहबकी ओरसे सबसे पहली रुकावट कौनसी आयी और उन्हें वांकानेर क्यों छोड़ना पड़ा?

(३) कवाकाका फिरसे वांकानेरके मंत्री बननेके लिये क्यों तैयार हुए? बादमें वे मंत्री क्यों नहीं हुए?
(४) उन दिनों वेतन चुकानेकी क्या प्रणाली थी?
(५) कबाकाकाने अपने त्यागपत्रमें क्या लिखा? वे उनमें फेर करना क्यों नहीं चाहते थे?
(६) कबा गांधीने दस हजार रुपये लेनेसे क्यों इनकार कर दिया?
(७) गांधीजीमें कबाकाकाके गुण उतरे थे, यह बात गांधीजीके जीवनमें से कुछ दृष्टांत देकर सिद्ध करें।

११

सुखवाद

[श्री जनक दवे]

[आपको गुजरातके हिन्दी प्रचारके कामकी 'नींवकी ईंट' कह सकते हैं। आप सूरतके रहनेवाले हैं। भाषा और तत्त्वज्ञान आपके प्रिय विषय हैं। हिन्दी भाषा और साहित्यके आप अभ्यासी हैं। आप गंभीर विचार-प्रधान लेख लिखते हैं। 'सुखवाद' आपका एक ऐसा ही लेख है। आजकल आप नवसारी हाईस्कूलमें काम कर रहे हैं।]

आजकल जिसे देखो वह सुखकी ओर दौड़ रहा है। मगर सब एक ही वस्तुकी प्राप्तिमें सुख नहीं मानते। हरएक अपने अपने ढंगसे अपनी प्रिय वस्तुको पाना चाहता है। नीतिज्ञ लोग हमें बताते हैं कि सारी मानव-प्रवृत्तिका परम लक्ष्य सुख ही है। मानव-प्रवृत्तिका ही क्यों, प्राणीमात्रकी प्रवृत्तिका ध्येय सुखकी प्राप्ति और दुःखसे मुक्ति है। पर नीतिवान जिस सुखकी बात

करते हैं, उसमें और सुखवादियोंके सुखमें वड़ा फ़र्क़ है। नीतिशास्त्रने मनुष्यके लिये जिस सुखकी साधनाको वताया है उसकी दो मर्यादायें हैं — एक सत्यकी और दूसरी समभाव यानी औरोंके लिये सुखके खयालकी। सुखवादीका सुख निजी और तात्कालिक होता है। वह दूसरोंके सुख-दु:खका खयाल नहीं करता। तात्कालिक होनेके कारण उसे सच और झूठ दोनों समान हैं। ऐसे सुखकी नीव उत्तेजना है।

इस सुखकी खोजका असर यह है कि हम हमेशा उत्तेजनाकी ही खोजमें रहते हैं। हम जरा अपने पर निगाह डालें। हमें ताजी और आरोग्य देनेवाली खुराक पसंद नहीं आती — मसालेदार और चटपटी चीजें ही भाती हैं। शरीरको स्वस्थ और सुन्दर वनानेके साधनोंको देखें तो व्यायाम या प्राणायामका तो हम मजाक़ उड़ाते हैं और इनकी वजाय क्रीम, स्नो, पाउडर आदिकी सराहना करते हैं।

हमारी आमोद-प्रमोदकी प्रवृत्तियोंका भी यही हाल है। फिल्में मनोरंजनका एक बड़ा साधन हैं। अगर हम इनका अभ्यास करें तो पता चलेगा कि वही फिल्में सफल समझी जाती हैं जो उत्तेजनासे ही भरी हों। फिर चाहे वह उत्तेजना जातीय हो या किसी और प्रकारकी। इससे समाजकी अभिरुचिका पता चलता है।

प्राकृतिक सौन्दर्य — प्रभात, संध्या और नदी-तट इत्यादि हमारा मनोरंजन नहीं कर सकते, हमें चाहिये शहरोंकी भीड़-भाड़ और तड़क-भड़क।

यह सुखवाद हमें कर्तव्य-विमुख भी बना रहा है। अपने सुखके लिये भी हम काम करना नहीं चाहते। खुद रसोई बनाकर खानेका आनंद हमें नहीं चाहिये। मगर हमें चाहिये होटलका ऐसा-वैसा खाना। हमारे अभ्यासका भी यही हाल है। हम खुद दिमाग़ लगाकर चीज़ोंको समझना नहीं चाहते। बल्कि मार्गदर्शिकाओं और पथप्रदर्शनियोंकी हम शरण लेते हैं। यहाँ तक कि अपने खेलकूदको छोड़कर दूसरोंके खेल देखनेमें आनंद पाते हैं।

पर सुख एक अजीब चीज है। सुख या खुशी आदमीकी छाया जैसी है। जब आदमी उसका पीछा करता है तो वह दूर भागती है। और जिस सुखकी नींव उत्तेजना पर खड़ी है वह सुख तो बहुत ही अल्पजीवी है। उत्तेजना कब तक टिक सकती है? इसे तो समाप्त ही होना है और जब यह समाप्त हो जाती है, तो एक ऐसे अभावका भाव, खालीपनका भाव, छोड़ जाती है कि जिससे जीवन भी बोझ-सा लगने लगता है।

सुखके इतने साधनोंके होते हुए भी मनुष्यको चैन नहीं मिलता और जीवनमें उत्साह और उमंग नहीं रहती। तवारीख़ हमें बताती है कि जब किसी प्रजाने सुख-प्राप्तिको ही अपना ध्येय बनाया है तब उसका पतन ही हुआ है और न तो उसे सुख हासिल हुआ है, न कोई और पुरुषार्थ। यादवोंका विनाश, ग्रीसका पतन और रोमके साम्राज्यका अंत इसी सत्यके दृष्टांत हैं। इसकी वजह यह है कि सुखवादका स्वभाव ही है कि एक हदके

बाद वह खुदकुशी — आत्महत्या — कर लेता है। इससे पता चलता है कि सुखवादको व्यवहारमें लाया नहीं जा सकता। ईसाई पुराणकथाके अनुसार खुदाने मनुष्यको यह अभिशाप दिया है कि "तू अपने पसीनेसे ही अपनी रोटी कमा सकेगा।" यह अभिशाप सिर्फ रोटीके लिये ही नहीं है — सुखमात्रके लिये है। मगर सुख-प्राप्तिके लिये सिर्फ़ पसीना बहानेसे काम नहीं चल सकता। असल बात यह है कि दुनियाकी इस भूलभुलैयामें जिस रास्तेका नाम 'सुख' है, उस पर चलनेसे अत्यंताभाव पर ही हम पहुँचते हैं। मगर जिस रास्तेका नाम है 'कर्तव्यपथ' या 'कर्ममार्ग', उस पर चलते हुए न जाने कहाँसे आकर सुख हमारा साथी बन जाता है। सचमुच सुख कर्तव्यकी ही उपज है।

सवाल

(१) नीतिशास्त्रके बताये हुए सुखमें और सुखवादीके सुखमें क्या फर्क है?

(२) सुखके बहुतसे साधनोंके होते हुए भी हमें सन्तोष क्यों नहीं होता है?

(३) सच्चा सुख कैसे प्राप्त किया जा सकता है?

उसके ऊपरका तारा और नीचेका तारा — ये तीनों तारे मिलकर ज्येष्ठा नक्षत्र बनाते हैं। इस नक्षत्रके ऊपरकी ओरके वृश्चिकके मुंहके तारे अनुराधा नक्षत्र हैं। जब कि बिच्छूका बाक़ी सारा नीचेका हिस्सा मूल नक्षत्र है।

सुमन — तो पिताजी, ज्योतिषी लोग जो धनु, मकर वग़ैरा गिनते हैं वृश्चिक उनमें से ही है क्या?

पिताजी — दूरकी सोचनेकी ज़रूरत ही नहीं। बिच्छूके डंकसे ज़रा पूरबकी ओर देख। क्या दिखता है? एक-सरीखे तेजवाले आठ दस तारे दिखते हैं न? वही है तेरी धनु राशि और उसके आगे है मकर राशि। मगर वह अभी कुहरेमें छिपी हुई है।

सुमन — और दूर दक्षिणमें नीचेकी ओर ये कौनसे तारे चमकते हैं? उनके नाम क्या हैं?

पिताजी — वे नराश्व मंडलके 'जय' और 'विजय' हैं। पूरबकी ओरका 'जय' है और पश्चिमकी ओरका 'विजय'। दोनोंमें 'जय' ज़्यादा तेजस्वी दिखता है।

सुमन — और पिताजी, यह सफ़ेद दूध जैसी पट्टी क्या है? जय-विजयसे शुरू होकर, बिच्छू और धनुमें फैलती हुई वह ठेठ आगे उत्तर तक पहुँच गई है।

पिताजी — वह आकाशगंगा है। उसे स्वर्गंगा या मंदाकिनी भी कहते हैं। आकाशगंगामें अनेक छोटे छोटे तारे एक-दूसरेसे सटकर बैठे हैं। कोरी आँखसे इन

तारोंको देखना मुश्किल है। आकाशगंगामें बादल-सा जो दिखाई देता है वह ऐसे तारोंके इकट्ठे रहनेके बावजूद है। कहीं तारोंकी खासी भीड़ है तो कहीं कम। और इसी कारण आकाशगंगा कहीं ज्यादा चमकीली है तो कहीं धुंधली।

सुमन — आपकी बात ठीक है। धनु राशिमें की आकाशगंगा सबसे ज्यादा तेजस्वी मालूम होती है। मगर पिताजी, आप सप्तर्षिकी बात कहते थे वह भूल ही गये क्या?

पिताजी — भूल तो नही गया बेटी। मैं बातकी शुरुआत सप्तर्षिसे ही करना चाहता था, लेकिन तेरी नज़र दक्षिणमे थी इसलिये वहाँसे ही श्रीगणेश हुआ। अब मुड़कर उत्तरकी तरफ़ देख। उन सात चमकीले तारोंका बड़ा मंडल कैसे नीचे उतरता दिखाई पड़ता है! वही है सप्तर्षि मडल।

सुमन — बिच्छूकी तरह सप्तर्षि मंडल भी बड़ा शानदार और सुन्दर है। उसे देखकर दिल कैसा खुश होता है? मगर पिताजी, उनमें वशिष्ठ मुनि कौनसे हैं? और अरुंधतीका तारा कहाँ है?

पिताजी — सप्तर्षि मंडलका ऊपरसे दूसरा तारा वशिष्ठका है और उससे सटा हुआ वशिष्ठके तेजमें अपनेको चुपकेसे ज़ाहिर करता अरुंधतीका तारा है। दिख गया कि नहीं?
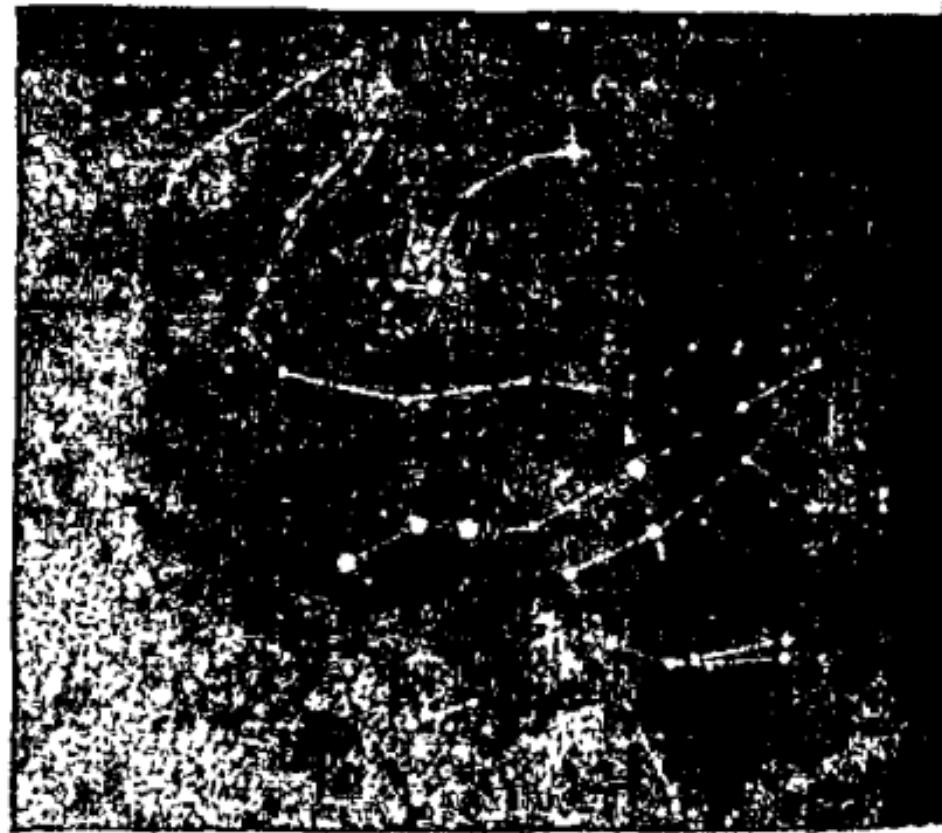
सुमन — हाँ, देख लिया। सतीके दर्शन युगलमें थोड़े ही होते हैं? अब कहिये कि ठीक उत्तरमें तुरहीके आकारका सात तारोंवाला वह कौनसा तारामंडल है? छोटे सप्तर्षि हैं क्या?

पिताजी — हाँ, वह छोटा सप्तर्षि मंडल है। उसको ध्रुव-मत्स्य कहते हैं। उसके सबसे नीचेके चमकीले तारेका नाम है ध्रुवतारा। ध्रुवका मतलब है, न चलनेवाला। आकाशके सभी तारे घूमते रहते हैं मगर ध्रुवतारा अपना स्थान नहीं छोड़ता। ध्रुवतारेको कुतुब भी कहते हैं। योरपके लोग ध्रुव मंडलको छोटा भालू और सप्तर्षिको

बड़ा भालू कहते हैं। हम उनको लघु ऋक्ष और गुरु ऋक्ष कह सकते हैं। ऋक्षका अर्थ ऋषि भी है और भालू भी।

सुमन — क़ुदरतके ये आकाशी फूल कैसे अच्छे फबते हैं! लेकिन यह क्या? तारोंको अपने अंचलमें छिपानेवाले ये बादल कहाँसे आ गये? बेचारे तारे कैसे दबते जा रहे हैं? यह लो, अब तो बादलोंने अपने पैर जमाकर बिजलीको भी न्योता। सारा मज़ा किरकिरा हो गया।

पिताजी — हूँ। और अब मुझे नींद भी सता रही है। चलो जल्दी कमरेमें घुस जायँ, नहीं तो बातकी बातमें ये बादल हम पर अपना स्नेह प्रकट कर देंगे।

सवाल

(१) आकाशी बिच्छू आसमानमें किस जगह होता है? आकाशी बिच्छूका वर्णन करें।
(२) पारिजातके ऊपरके और नीचेके तारोंके क्या नाम हैं?
(३) आकाशी बिच्छूके पूरबकी ओर क्या दिखाई देता है?
(४) आसमानमें दूधकी पट्टी जैसा क्या होता है? उसकी बाबत जानकारी दें।
(५) सप्तर्षि मंडलके बारेमें लिखें।

१३

हिमालयके पार ब्रह्मपुत्राका मूल ढूंढ़ने

[श्री इन्द्र वसावड़ा]

[आप सौराष्ट्रके रहनेवाले हैं। शुरूसे ही आपको लिखनेका शौक है। हिन्दीमें आप काफ़ी अरसेसे लिख रहे हैं और आप उपन्यास, कहानियाँ, लेख वगैरा लिखते रहते हैं। आजकल आप अहमदाबादके सरकारी कॉमर्स हाईस्कूलके मुख्य आचार्य हैं।]

अनेक कष्टोंको झेलता, तिब्बतके बरफ़ीले मैदानों और सरोवरोंको पार करता, ट्रांस हिमालयके शिखरों और घाटोंको तय करता स्वेन हेडिन बमुश्किल शिगत्से शहरमें आ पहुँचा। शिगत्सेके नजदीक ताशीलंपो नामका मठ था जिसमें ताशीलामा रहते थे। इस स्थल पर हेडिनने ताशीलामासे मुलाक़ात की, बौद्ध भिक्षुओंके दर्शन किए और आसपासके दृश्योंका रसपान किया।

उसने सोचा — "मैं अनेक कष्टोंको झेलकर यहाँ आ पहुँचा हूँ। अंग्रेज सरकारकी मनाही होते हुए भी मैं सबकी आँखोंमें धूल झोंककर तिब्बतमें घुस आया हूँ। तिब्बत सरकारके अफ़सर मुझे अब आगे बढ़नेकी इजाज़त नहीं दे रहे हैं, पर अगर मैं ब्रह्मपुत्राके उद्गम-स्थान तक न पहुँच सका तो मेरा तिब्बतमें आना फिजूल रहेगा। येन केन प्रकारेण मुझे पवित्र ब्रह्मपुत्रा नदीका मूल ढूंढ़ना

होगा। और यह कार्य करते-करते अगर मुझे अपने प्राणोंकी आहुति देनी पड़े तो भी मैं न झिझकूंगा।"

यह दृढ़ निश्चय करके हेडिनने ताशीलंपो और शिगत्से शहरको छोड़ा और धीरे धीरे आगे बढ़ने लगा। वह लिंगागोंपा मठ पहुँचा।

एक पहाड़के ऊपर यह मठ स्थित था। पहाड़की चोटीके पास एक विचित्र गुफा थी। चारों ओरसे उस गुफाको बन्द कर दिया गया था। सिर्फ़ नीचेके हिस्सेमें एक छोटासा छेद था।

इसी छेदके ज़रिये, गुफामें रहते लामाको प्रतिदिन प्रातःकाल एक बरतनमें खाद्य सामग्री पहुँचाई जाती थी। चूंकि गुफा चारों ओरसे बन्द थी, उसमें प्रकाशका नाम तक न था। हवा भी अगर अंदर पहुँचती तो इस छेदके ज़रिये ही। गुफाके अन्दर एक छोटासा झरना बहता था। और अुसी झरनेके पानीसे गुफास्थित साधु लामा अपनी प्यास बुझाता था। वह संसारके बन्धनोंसे दूर, अकेला इस गुफामें रहकर प्रार्थना करता, निर्वाण-पदकी प्राप्तिके लिये ध्यानमग्न रहता।

लिंगागोंपा मठके एक साधुको लेकर हेडिन इस गुफाको देखनेके लिये ऊपर पहुँचा। साधुके हाथमें खाद्य सामग्री भरा एक कटोरा था।

"क्या है इसमें?" हेडिनने पूछा।

"खाद्य सामग्री। थुक्पा।"

"क्या होगा इसका?"

सरदीके दिनोंमें वह शीतसे रक्षण कर सके। प्रतिदिन सुबह कटोरेमें साधुको खाना पहुँचाया जाता है। अगर कटोरा अन्दर खिसका लिया गया तो समझा जाता है कि साधु जीवित है। ६–७ दिन तक कटोरा उसी तरह पड़ा रहा तो समझा जाता है कि साधु निर्वाण-पदको पहुँच गया। तब गुफाका ऊपरी द्वार फिरसे खोला जाता है, और मृत लामाकी उत्तरक्रिया की जाती है।"

"तुमने मुझे मौन रखनेको क्यों कहा था?" हेडिनने पूछा।

"साधुके साथ बातचीत करना शास्त्रनिषिद्ध है। जो बात करनेकी कोशिश करता है उसे महापातकका भोगी बनना पड़ता है, इसीलिये कटोरा देते वक्त मौन रखनेकी आवश्यकता है।"

जब हेडिन अपने तंबू पर पहुँचा तब उसके मनमें गुफा-अन्तर्हित साधुके ही विचार चल रहे थे। कैसा विचित्र प्रदेश है यह तिब्बत! ठौर ठौर मठ हैं, जिनमें बुद्ध भगवान्के अनुयायी लामा रहते हैं। पर ऐसे स्वार्थ-त्यागकी, संसारसे इतनी विरक्तिकी कहानी तो उसने अब तक कहीं न सुनी थी। उस छोटीसी गुफाके अंधकारमें साधु 'ॐ मणि पद्मे हुम्' मंत्रका जाप जपता, संसारके बंधनोंसे परे, एकान्तमें किस प्रकार रहता होगा? उस अंधकारमें दिन और रात उसके लिये समान होगा, धीरे धीरे उसके नेत्रोंकी ज्योति हीन होते होते नितांत चली जाती होगी! ओह!

इस मठसे उसने आगे कूच प्रारंभ की । तिब्बतके ऊँचे-नीचे मैदानोंको तय करता वह चाँगला पोड़ाला नामक घाटके ऊपर आ पहुँचा । यह घाट समुद्रकी सतहसे १८२७० फुटकी ऊँचाई पर है। कुछ दिन बाद वह टारगो गांगरी पर्वतके नज़दीक जा पहुँचा । उसकी इच्छा थी कि वह जंगरायुगत्सो सरोवरके दर्शन करे और उसकी गहराई इत्यादि जाने; पर इस स्थलके गोवा (अफ़सर) ने उसे आगे बढ़ने न दिया ।

उसी समय एक दुर्घटना हुई । हेडिनके क़ाफ़िलेका नेता महमद ईसा बीमार पड़ा और कुछ ही घंटोंमें उसके प्राण-पखेरू उड़ गये। हेडिनको बड़ा सदमा पहुँचा। महमद ईसा बड़ा नमकहलाल सेवक था और उसके नेतृत्वमें क़ाफ़िलेके सब लोग अपने अपने काममें मुस्तैद रहा करते थे । तिब्बतके बरफ़ीले पहाड़ों और घाटोंको तय करता वह यहाँ तक आया था और उसने अपने प्राण अपने मालिककी सेवा करते करते ही होम दिये थे।

बड़े ठाठसे महमद ईसाका जनाजा क़ब्र तक ले जाया गया और बड़ी शानसे उसे क़ब्रमें लेटाया गया । तख़्ती पर हेडिनने प्रशंसासूचक शब्द लिखे और अंतमें तिब्बतियोंका पवित्र मंत्र लिखा,— ' ॐ मणि पद्मे हुम् ।'

व्यथित हृदयसे महमद ईसाकी क़ब्रके पास आ सर झुका स्वेन हेडिन तीन लद्दाखियोंको साथ ले कूबी गांगरी पर्वतकी दिशाकी ओर चल दिया । उसी पर्वतमें से ब्रह्म-पुत्राका उद्भव होता है । अनेक सरोवरों और ऊबड़-

खावड़ मैदानोंको तय करता, हेडिन हिमाच्छादित कूबी गांगरीके नजदीक आ पहुँचा ।

अहा हा ! कितना स्वर्गीय दृश्य दिखाई दे रहा है ? वह खड़ा है भव्य नगाधिराज ! पर्वतकी चोटियाँ श्वेत हिमसे ढँकी हुई हैं। दूरसे भी हिमनदियाँ साफ़ साफ़ दृष्टिगोचर होती हैं। आकाशका नीला रंग इन श्वेत शिखरोंके ऊपर कितना अलौकिक लगता है !

ज्यों ज्यों वे ऊपर चढ़ने लगे त्यों त्यों कूबी गांगरी पर्वतके नौ शिखर मानों अपनी गरदन ऊँची कर उनका आह्वान करने लगे ।

लो संध्याका सुहावना समय है । डूबते सूर्यकी किरणोंमें श्वेत शिखर कितने स्वर्गीय बनते हैं ? यह क्या? आकाशमें एकाएक बिजली कौंधने लगी । सूर्य डूब गया। इस अंधकारमें बिजलीका प्रकाश कितना भव्य लगता है! और ज्यों ही बिजली कौंधती है कि श्वेत शिखर एकाएक भासमान होने लगते हैं और फिर गाढ़ स्याह रंग-से बन जाते हैं। अपूर्व अलौकिक यह नजारा था ।

ब्रह्मपुत्रा ! यही पवित्र पर्वत है तेरा उद्भव-स्थान! पवित्र नदी, तू पर्वतमें से एक पतली धाराके रूपमें हिम-सी ठंडी प्रगट होती है और फिर दक्षिण तिब्बतके आरपार बहती, हिमालयके शिखरोंको भेदती आसामके घने जंगलोंमें दौड़ती चली जाती है, और वहांके खेतोंको पोसती, आगे बढ़ती, भीषणकाय बनती, अंतमें सहचरी गंगासे जा मिलती है ।

१३ जुलाई १९०७ के दिन वह उस उच्च शिखर पर पहुँचा, जहाँके हिमक्षेत्रसे पवित्र ब्रह्मपुत्रा जन्म लेती है। इस स्थलकी ऊँचाई १५०९५ फुट है।

इस स्थल पर बैठ हेडिन गहन विचारोंमें तल्लीन हो गया। इस स्थलको ढूंढ़नेका मान उसे मिला है, यह उसका सौभाग्य है। उसने साहसी वीर ज्ञानसिंह और राइडरको याद किया। वे दोनों वीर तिब्बतमें आये थे और उन्होंने यहाँकी भौगोलिक जानकारी हासिल की थी। उन्होंने ब्रह्मपुत्राके उद्भव-स्थानके बारेमें सुना था, पर वे इस स्थल तक न आ सके थे। धन्यभाग्य है उसका कि वह ब्रह्मपुत्राके उद्भव-स्थानको ढूंढ़नेमें प्रथम रहा!

सवाल

(१) ब्रह्मपुत्राके मूल तक पहुँचनेके लिये हेडिनको कैसे प्रेरणा हुई?
(२) विचित्र गुफा और साधुके बारेमें लिखें।
(३) टारगो गाँगरी पर्वतके पास कौनसी दुर्घटना हुई?
(४) महमद ईसा कौन था? उसका जनाजा कैसे निकाला गया? उसकी क़ब्र पर क्या लिखा गया?
(५) ब्रह्मपुत्राका मूल देखकर हेडिनके मनमें क्या भाव उठे?

१४

समुद्र और उसकी मछलियां

[श्री कनुभाई ना० पटेल]

[आप गूजरात विद्यापीठके स्नातक हैं। हिन्दीके प्रचार-कार्यमें आप पिछले पाँचेक सालसे हाथ बँटा रहे हैं। आप एक उत्साही नौजवान हैं। आजकल आप गूजरात विद्यापीठमें काम कर रहे हैं।]

ग्रह और सितारे जो हमसे बहुत दूर हैं, उनके बारेमें हमारी जानकारी खूब है और दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। मगर समुद्र जो हमारे पड़ोसी हैं, उनकी बाबत हमारा ज्ञान बहुत ही कम है। पृथ्वीको चारों ओरसे समुद्रोंने घेर रखा है और इनका विस्तार जमीनके विस्तारसे तिगुना है। इनकी गहराई कहीं कहीं साढ़े छः मीलसे भी ज्यादा है। यानी दुनियाका सबसे ऊँचा पहाड़ हिमालय भी इनमें आसानीसे समा सकता है और फिर भी उसके ऊपर आधा मील पानी रहेगा। समुद्रोंकी गहराईकी थाह लेनेके लिये आज तक वैज्ञानिकोंने खूब प्रयत्न किये हैं। लेकिन उन्हें अभी तक कामयाबी नहीं मिली है। ज्यादासे ज्यादा ४५०० फुट नीचे पहुँचा जा सका है, जो औसत गहराईका एक तिहाई और ज्यादासे ज्यादा गहराईका आठवाँ हिस्सा है।

जिस तरह जमीन पर ऊँचे ऊँचे पहाड़, लंबी लंबी नदियाँ, बड़े बड़े रेगिस्तान और घने जंगल हैं, उसी

तरह इन सागरोंके नीचे भी ये सब चीजें मौजूद हैं। इन जंगलोंमें ऐसे खूंखार और विचित्र प्रकारके प्राणी रहते हैं कि जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। इन समुद्रोंमें छोटे मोटे इतने जीव-जंतु रहते हैं, और इनमें दूसरे पदार्थ भी इतने भरे पड़े हैं कि हम इन्हें संसारका सबसे बड़ा संग्रहस्थान कहें तो इसमें कोई अतिशयोक्ति न होगी।

सागरके अन्य जीव-जन्तुओंको छोड़ दें और सिर्फ़ मछलियोंको लें तो इनकी भी लगभग २०००० क़िस्में हैं। और हर साल नई नई क़िस्में मालूम होती जा रही हैं।

आम तौर पर मछलियोंके फेफड़े नहीं होते। और इसीलिये मछलियाँ पानीके बाहर जिन्दा नही रह सकतीं। लेकिन कुछ मछलियाँ ऐसी भी हैं कि जो खुश्की पर भी कई दिनों तक रह सकती हैं। 'लंगफिश' नामकी फेफड़ेवाली मछली इस तरह हफ़्तों तक ज़मीन पर रह सकती है। अफ्रीकामें 'कीच मत्स्य' (मड स्कीपर) नामकी मछलियोंकी एक जाति है, जो अपनी दुमका थोड़ासा हिस्सा पानीमें रखकर आसानीसे खुश्की पर रह सकती है। इसके फेफड़े नहीं होते मगर यह अपनी दुमसे पानीमेंसे प्राणवायु लेकर ज़िन्दा रहती है।

आकारमें भी सब मछलियाँ एकसी नहीं होतीं। दरियाई 'अश्व मत्स्य' (सी हॉर्स) नामकी मछलियोंका आकार कुछ 'घड़ियाल-सा होता है, और वे हमेशा खड़ी तैरती हैं। 'स्ट्रींग रे' नामकी मछलियोंके लंबी दुम

होती है और 'सूर्य मत्स्य' नामकी मछलियोंके दुम बिल्कुल नहीं होती। 'ईल' नामकी मछलियोंका आकार सांप जैसा होता है। 'तारक मत्स्य' नामकी मछलियोंका आकार पांच कोनेवाले सितारे जैसा होता है। और कुछ मछलियां बिच्छूके आकारकी होती हैं।

सभी मछलियां रहती तो पानीमें ही हैं, लेकिन इससे हमें यह नहीं समझना चाहिये कि सब मछलियां एकसे पानीमें रह सकती हैं। सागरकी मछलियां खारे पानीमें ही रह सकती हैं। इन मछलियोंको अगर मीठे पानीकी झीलमें छोड़ दिया जाय तो वे जिन्दा नहीं रह सकतीं। कुछ मछलियां किनारेके पास छिछले पानीमें ही रह सकती हैं, तो कुछ ऐसी होती हैं जो गहरे पानीके बिना जिन्दा ही नहीं रह सकतीं। गहरे पानीमें रहनेवाली मछलियोंके शरीरकी रचना ऐसी होती है कि वे पानीके भारी दबावको बरदाश्त कर सकें। ऐसी मछलियां जब कारणवश ऊपर आ जाती हैं तो वे मर जाती हैं, क्योंकि सतह पर पानीका दबाव उनके शरीरके भीतरी दबावसे कम होता है। कुछ मछलियां सागरके प्रवाहमें रहना ही पसंद करती हैं, तो कुछ स्थिर पानीमें। सामान्यतया मछलियां इतने गहरे पानीमें रहती हैं कि जहां सूर्यका प्रकाश पहुँच सकता हो। लेकिन कुछ मछलियां बिलकुल अँधेरेको पसंद करती हैं।

जैसे सब मछलियोंकी बनावट एकसी नहीं होती, और सब मछलियां एक ही प्रकारके पानीमें नहीं रह सकतीं, उसी तरह सब मछलियोंकी खुराक भी एकसी नहीं होती।

कुछ मछलियां संपूर्ण शाकाहारी होती हैं और कुछ बिलकुल मांसाहारी। शाकाहारी मछलियाँ समुद्रमें पैदा होनेवाली वनस्पतिसे अपना पेट भरती हैं और मांसाहारी मछलियाँ अन्य जीव-जन्तु और अपनेसे छोटी मछलियों पर रहती हैं।

कई मछलियाँ ऐसी भी होती हैं जिन्हें एक जगह स्थिर होकर रहना नहीं भाता। ऐसी मछलियाँ लंबे-लंबे प्रवास करती हैं। प्रवास करनेवाली मछलियाँ एक ही हेतुसे प्रवास करती हों यह भी नहीं है। कुछ अंडे रखनेके लिये सुरक्षित और अनुकूल स्थानकी खोजमें लंबे-लंबे प्रवास करती हैं, तो कुछ अपनी मनपसंद खुराक प्राप्त करनेके लिये और कुछ ठंडसे बचनेके लिये।

मछलियोंमें कुछ ऐसी भी हैं जो वास्तवमें मछलियाँ न होते हुए भी मछलियाँ कहलाती हैं। प्राणिशास्त्रियोंके मतानुसार ऐसे जलचर प्राणियोंको ही मछलियोंके वर्गमें रखा जा सकता है, जिनके हाथपाँव न हों, और झालर, पक्ष तथा पीठकी हड्डी अवश्य हों। इस कसौटीको ध्यानमें रखते हुए जेली फिश, तारक मत्स्य और श्रे फिश आदि मछलियोंको हमें मछलियाँ नहीं कहना चाहिये, क्योंकि जेली फिशके न तो पक्ष हैं, न झालर, न पीठकी हड्डी। तारक मत्स्योंके पक्ष होते हैं, लेकिन झालर और पीठकी हड्डी नहीं होती। श्रे फिशके पक्ष और दुमके झालर होती है, लेकिन पीठकी हड्डी नहीं होती।

इस तरह सुवर्ण मत्स्य जैसी अति सुंदर और लुभावनी मछलियोंसे लेकर व्हेल और शार्क जैसी विराट-काय

और अति भयंकर मछलियाँ समुद्रमें पाई जाती हैं। इनमें से जानने योग्य कुछ मछलियोंके बारेमें हम यहाँ देखेंगे।

समुद्रकी मछलियोंमें विराट-काय व्हेल नामकी मछली बहुत मशहूर है। इसकी लंबाई आम तौर पर ६० से ८० फुट तक होती है। कभी कभी ९० से १०० फुट तक लंबी व्हेल भी मिल जाती है। इसका वजन ४२०० मनके क़रीब होता है। कभी-कभी तो इससे भी भारी मछली पाई गई है। उसका जबड़ा क़रीब १६ फुट लंबा और ७ फुट चौड़ा होता है। ऐसा विशाल जबड़ा जब वह खोलती है, तब उसका मुंह एक गुफाके समान दिखाई देता है। व्हेलकी सारी शक्ति उसकी दुममें होती है। अपनी दुमके दो तीन प्रहारोंसे वह बड़े-से-बड़े जहाज़ोंको उलट देती है। यह मनुष्यके लिये बहुत उपयोगी है। इसके शरीरमें से ८००० गॅलनके क़रीब तेल तथा कई मन चरबी और मांस मिलता है। मशीनोंको तेल देनेमें और साबुन बनानेमें व्हेलके तेलका उपयोग होता है। उसके मुंहके गलफेकी हड्डी, जिसे 'व्हेल-बोन' कहते हैं, बहुत मूल्यवान समझी जाती है। उनका उपयोग छोटी मशीनोंको साफ़ करनेके ब्रश, खास प्रकारकी पोशाकें और सैनिकोंके टोप बनानेमें किया जाता है। व्हेल-बोनकी कीमत आजकल फ़ी टन क़रीब तीन हज़ार रुपये गिनी जाती है। केवल एक व्हेलसे प्राप्त होनेवाली इन सब वस्तुओंकी क़ीमत लगभग ४५००० रुपये होती है। इन्हीं चीज़ोंको पानेके लिये व्हेलका शिकार किया

जाता है। लेकिन इसका शिकार करना कोई खेल नहीं। इसमें प्राणोंकी बाज़ी लगानी पड़ती है। इसके शिकारके लिये खास प्रकारके जहाज़ होते हैं और शिकार नोकदार भालोंसे किया जाता है। अगर शिकारी इसके शिकारमें पूरी एहतियात न बरतें तो व्हेल जहाजके जहाज़को लौटा देती है। शिकारी समुद्रकी तहमें चले जाते हैं।

इसी प्रकारकी एक और विराट-काय मछली होती है जिसे 'शार्क' कहते हैं। शार्कके कलेजेका तेल बड़ा पौष्टिक माना जाता है। उसकी खालको कमानेसे मजबूत चमड़ा बनता है। शार्क मछलीके एक छोटे बच्चेका शिकार किया गया था। उसके कलेजेका ही वज़न ६०० पौंड था और उसके एक एक जबड़ेमें तीन तीन हजार दाँत थे। जब बच्चेका यह हाल है तो बड़ी शार्कका क्या कहना!

ओक्टोपस नामकी एक भयंकर मछली लाल सागर और भूमध्य सागरमें पाई जाती है। उसके लंबे आठ बड़े बड़े पंजे होते हैं। उसके पंजे इतने लंबे और बलवान होते हैं कि वह एकसाथ सात आठ मनुष्योंको अपने पंजोंमें दबोच सकती है।

यह तो विराट-काय मछलियोंकी बात हुई। ईल नामकी एक सर्पाकार मछली है, जिसके शरीरमें एक प्रकारकी बिजली-शक्ति होती है। उसके शरीरके स्पर्श मात्रसे ही एक प्रकारका झटका लगता है; और अधिक समय तक मनुष्य उसका स्पर्श करे तो उसे अपने प्राणोंसे ही शायद हाथ धोने पड़ें।

दक्षिण अमेरिकाके समुद्रमें 'केरीब' नामकी एक बड़ी क्रूर मछली होती है। उसका पूरा जबड़ा एक ही दाँतका होता है। मुँहमें जिस तरह एक एक दाँत अलग होता है वैसे अलग अलग दाँत उसके नहीं होते। उसके जबड़ेमें सभी दाँत एक-दूसरेसे जुड़े होते हैं। इस मछलीका जबड़ा इतना मजबूत होता है कि वह लोहेके तार या साँकलको आसानीसे काट सकती है।

हिन्द महासागरके पूर्वी हिस्सेमें 'शिला मत्स्य' और प्रशांत महासागरमें 'बिच्छू मछली' ये दोनों काले नाग जैसी जहरीली होती हैं। इनमें से कोई भी अगर मनुष्यको काट ले तो मनुष्य फ़ौरन् ही मर जाता है।

एक मछली ऐसी होती है कि जो पानीसे दस पंद्रह फुट ऊँची उठ सकती है। ऐसी मछलियाँ उड़ उड़कर काफ़ी संख्यामें जहाजोंमें आ पड़ती हैं। ये मछलियाँ खायी जा सकती हैं। इससे जहाजमें काम करनेवालोंको बिना मेहनत ही अच्छी पौष्टिक खुराक मिल जाती है।

इस तरह अनेक प्रकारकी मछलियाँ समुद्रमें पाई जाती हैं, जिनमें से अधिकांश मनुष्यके लिये किसी न किसी रूपमें उपयोगी सिद्ध होती हैं। मछलियोंके रूपमें समुद्रमें इतनी खाद्य सामग्री भरी पड़ी है कि अगर हम उसका पूरा उपयोग कर सकें तो सारी पृथ्वीकी सम्मिलित उपज सागरके एक हिस्सेकी उपजका भी मुकाबला न कर सके।

(१) समुद्रके गर्भमें क्या क्या होता है?
(२) मछलियोंकी कितनी क़िस्में हैं? दो-चार मुख्य मुख्य मछलियोंके जीवनके बारेमें लिखें।
(३) व्हेलकी और शार्ककी उपयोगिता क्या है?
(४) कुछ मछलियोंकी मनोरंजक विचित्रताओंके बारेमें लिखें।

१५

एक महान वैज्ञानिक

[श्री दिलखुशराय पो० व्यास]

[आप विज्ञानके अभ्यासी हैं। हिन्दी आपका शौक़का विषय है। आप बड़े उत्साही और कार्यदक्ष हैं। आजकल आप राजपीपला हाईस्कूलके हेडमास्टर हैं।]

जड़ और चेतनका भेद हम जानते हैं। हम मानते हैं कि सुख और दुःख, हर्ष और शोक, गर्मी और सर्दी इत्यादि संवेदनाओंके अनुभव जड़ पदार्थोंको नहीं होते, परंतु चेतन पदार्थ ही उनका अनुभव कर सकते हैं। हम यह भी मानते हैं कि बाह्य उत्तेजनाका असर मात्र चेतन पदार्थ पर ही होता है। तो प्रश्न उठता है, क्या जड़ पदार्थों पर बाह्य उत्तेजनाका असर कुछ भी नहीं होता? क्या वनस्पतिमें चेतना है? यदि है तो बाह्य उत्तेजनाका असर उस पर कैसा होता है? इस पर हम बहुतसी कल्पनाएँ कर सकते हैं, परंतु वैज्ञानिक दृष्टिसे हमें अपने

सिद्धांतोंके लिये प्रत्यक्ष सबूत देने चाहिये। इस बारेमें डॉक्टर जगदीशचंद्र बोसने मौलिक आविष्कार किये और वर्षोंके अथाह परिश्रमके बाद अपने आविष्कारोंसे संसारको आश्चर्यचकित कर दिया।

समग्र संसारके वैज्ञानिक क्षेत्रमें भारतको कीर्ति दिलानेवाले मौलिक और अद्भुत आविष्कारोंके संशोधक डॉक्टर जगदीशचंद्र बोसका जन्म सन् १८५८ में ढाकाके राढ़ाखाल गाँवमें हुआ। कलकत्तेके सेंट जेवियर कालेजसे उन्होंने बी. ए. का इम्तिहान पास किया। अधिक अभ्यासके लिये वे इंग्लैंड गये और वहाँ उन्होंने केम्ब्रिजकी बी. ए. और लंडनकी बी. एससी. परीक्षायें पास कीं। वहाँसे भारत लौटने पर सन् १८८५ में कलकत्तेके प्रेसिडेन्सी कालेजमें वे भौतिक विज्ञानके प्रोफेसर हो गये। यहाँ स्थिर होते ही उन्होंने अपने जीवनका ध्येय तय कर लिया।

प्रथम आविष्कार उन्होंने बिजलीकी अदृश्य किरणोंके विकीरणके बारेमें किया। प्रख्यात विज्ञानशास्त्री केलविनने डॉक्टर बोसके इस आविष्कारको महान बताया और खूब प्रशंसा की। इससे दुनियाके विद्युत् विषयक ज्ञानमें वृद्धि हुई; इतना ही नहीं, परंतु और आविष्कारोंमें आगे बढ़नेमें मदद मिली। डॉक्टर बोसके डिटेक्टर नामक यंत्रसे वायरलेसका उपयोग जहाजोंमें होने लगा। एडीसन जैक्सनने इस बातको स्वीकार करते हुए कहा कि डॉक्टर बोसकी मदद बगैर मुझे इस मुश्किल कार्यमें कामयाबी मिलनी कठिन थी।

सामान्यतः मनुष्य शुरूमें उत्साहसे काम करता है। परंतु बादमें उसका उत्साह मंद पड़ जाता है, और खासकर जब मार्गमें विघ्न आते हैं। ऐसे मनुष्य जीवनमें कोई महान वस्तु सिद्ध नहीं कर सकते। मुश्किल परिस्थितिमें भी दृढ़तासे जो अपने ध्येयकी साधनामें लगा रहता है, वही विजयी होता है। डॉक्टर जगदीशचंद्र बोस ऐसी विरल विभूतियोंमें से एक थे। उनके मार्गमें अनेक रुकावटें आईं, फिर भी वे अपने काममें लगे रहे। अनेक अद्भुत यंत्रोंका आविष्कार उन्होंने किया। इन यंत्रोंकी प्रचंड शक्तिको देखकर पश्चिमके विज्ञानशास्त्री डॉ० बोस पर मुग्ध हो गये। इन यंत्रोंकी मददसे जड़ और चेतनकी गूढ़ समस्या पर प्रकाश डालनेमें वे समर्थ हुए।

जड़ और चेतनकी समस्याका सूक्ष्म अभ्यास उन्होंने किया और अनेक प्रयोगोंके बाद बताया कि:—

१. चेतन पदार्थोंकी तरह जड़ पदार्थोंमें बाह्य उत्तेजनाका प्रत्युत्तर मिलता है।

२. अधिक उत्तेजक द्रव्योंसे प्रत्युत्तर-शक्ति बढ़ती है।

३. चेतन पदार्थोंकी तरह अधिक उत्तेजनासे जड़ पदार्थ भी थक जाते हैं।

४. विश्रामके बाद जड़ पदार्थोंकी थकान दूर होती है और वे अपने असली स्वरूप पर आ जाते हैं।

५. जहरी द्रव्योंसे, चेतन पदार्थोंकी तरह, निर्जीव पदार्थोंकी प्रत्युत्तर-शक्ति बंद हो जाती है।

इन तथ्योंसे सिद्ध होता है कि जड़ और चेतनकी प्रतिक्रियाओंमें सादृश्य अधिक है ।

१९०० ई. में डॉक्टर जगदीशचंद्र बोस पेरिस गये और वहाँ आंतरराष्ट्रीय भौतिक विज्ञान परिषदमें शामिल हुए । इस परिषदमें उन्होंने जड़ और चेतन पदार्थों पर विद्युत् द्वारा अणु विषयक प्रतिक्रियाओंके सादृश्यके बारेमें एक सुंदर निबंध पढ़ा और अपने प्रयोगोंके परिणाम बताये । प्रचलित मान्यताओंमें क्रांतिकारक तब्दीलियोंको स्वीकार करनेके लिये बहुतसे विज्ञानशास्त्री तैयार नहीं थे; इसलिये रॉयल सोसायटीने डॉक्टर बोसका लेख प्रकाशित नहीं किया ।

इसके बाद डॉक्टर जगदीशचंद्र बोसने अपना ध्यान वनस्पतिके कोषों पर बाह्य उत्तेजनाओंकी प्रतिक्रिया पर केन्द्रित किया, और प्राणियोंके कोषों पर उत्तेजनाकी प्रतिक्रियाओंके साथ उनका सादृश्य सिद्ध किया । इस बारेमें अपने प्रयोगोंके परिणामके साथ अनेक निबंध तैयार करके रॉयल सोसायटीको भेजे, परंतु वे तब भी उन तथ्योंको स्वीकार करनेमें हिचकिचाने लगे । उन्होंने कहा कि अगर पौधे स्वयं अपना जीवन कहें तो वे उन बातोंको माननेके लिये तैयार हो सकते हैं वरना नहीं ।

अतः डॉक्टर बोसने ऐसे अद्भुत यंत्रोंका आविष्कार किया कि जिनकी मददसे पौधे [illegible]
बनकर स्वयं आलेखित [illegible]
शास्त्री ऐसे चमत्कारि[illegible]

है, यह देख दुनियाके विज्ञानशास्त्रियोंने दाँतों तले उँगलियाँ दबा लीं।

सन् १९११में उन्होंने 'रेसोनन्ट रेकार्डर' नामक यंत्र बनाया, जिससे तंतुओंमें १/१००० सेकन्डमें होनेवाली गति विषयक संवेदना स्वयं ही अंकित हो सके।

सन् १९१७में 'संयुक्त-उच्चालन क्रेस्टोग्राफ' नामक यंत्र उन्होंने बनाया, जो किसी गतिको ५००० गुना बढ़ाकर अंकित कर सके। इससे भी संतुष्ट न होकर उन्होंने 'चुंबकीय क्रेस्टोग्राफ' बनाया, जो किसी गतिको १० लाख गुना बढ़ा सके।

रॉयल सोसायटीके नामांकित ग्यारह विज्ञानशास्त्रियोंने इस यंत्रकी संपूर्ण जाँच की और बताया कि यह अद्‌भुत यंत्र सचमुच किसी गतिको १० लाख गुना बढ़ा सकता है।

इन यंत्रोंकी सहायतासे डॉक्टर बोसने बताया कि जैसे जंतुओंमें संचालनशीलता, संकुचन और प्रसरण, स्पंदन-शीलता और रक्तसंचारकी क्रियाएँ होती हैं, वैसे ही पौधोंमें भी ये सब क्रियाएँ होती हैं।

सन् १९१५में डॉक्टर बोसने पेन्शन ले ली और उन्होंने प्रेसिडेन्सी कालेज छोड़ दिया। सन् १९१७में उन्होंने बोस विज्ञान मंदिरकी स्थापना की और वहाँ उन्होंने अपना कार्य जारी रखा।

सन् १९२८में उन्होंने योरपके विश्वविद्यालय देखे, और वहाँ व्याख्यान और प्रयोगों द्वारा अपने संशोधनोंके परिणाम बताये। इनसे प्रभावित होकर विएनाके मशहूर

अध्यापक मोलिश इनके विज्ञान मंदिरमें छः मास ठहरे और वहाँसे जाने पर उन्होंने 'नेचर' नामक पत्रमें लिखा:-

"बोस विज्ञान मंदिरमें मैंने देखा कि पौधे स्वयं अपने वायुरूप खुराककी पाचनगतिको अंकित करते हैं। मैंने यह भी देखा कि 'रेसोनन्ट रेकार्डर' द्वारा गतिशीलता १/१००० सेकन्डमें स्वयं अंकित होती है। ये सब बातें विचित्र-सी लगती हैं, परंतु मैंने यह सब आँखों देखा है, और जिसे भी यह देखनेका मौक़ा मिलेगा वह इन प्रयोगोंको देखकर आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रहेगा।"

डॉक्टर बोसके प्रयोगोंसे यह बात सिद्ध होती है कि संसारकी वस्तुओंके अणुओंमें एक प्रकारकी चेतना है। जिसको हम जड़-निर्जीव कहते हैं उसमें भी सुप्तावस्थामें चेतना है। विशिष्ट संयोगों द्वारा उस चेतनाको जाग्रत कर सकनेकी शक्यता है। वनस्पतिमें जीवन है यह हम मानते हैं, परंतु डॉक्टर बोसने यह साबित किया कि जंतुओं और प्राणियोंमें जीवन-व्यापार चलानेकी जैसी व्यवस्था है, बिलकुल वैसी ही व्यवस्था वनस्पतिमें भी है।

डॉक्टर बोसका जीवन एकांगी नहीं था। बहुतसी प्रवृत्तियोंमें उन्हें रस था। अपने जीवनके शुरू शुरूके वर्षोंमें प्रकृति-सौंदर्यका उनको बहुत शौक़ था, और एक बड़ा केमेरा लेकर छुट्टियोंमें वे प्रकृति-सौंदर्यके धामोंकी यात्रा करते थे।

बंगला साहित्यमें उनके गद्यकी बहुत प्रतिष्ठा है। कविवर रवीन्द्रनाथ टागोर उनके परम मित्र थे।

डॉक्टर बोसके वैज्ञानिक संशोधनों पर भारतीय संस्कृति और विचारधाराका असर पड़ा है। सच्चे अर्थमें वे भारतीय विज्ञानशास्त्री थे। १९३७ में उन्नासी वरसकी उमर पाकर, उन्होंने अपनी जीवनयात्रा पूरी की। सर माइकेल सेडलरने उनको अंजलि देते हुए योग्य ही कहा था कि वे जीवशास्त्रियोंमें एक कवि थे।

निर्जीव पदार्थ, वनस्पति और प्राणियोंके अंदर एक अलौकिक सादृश्यके दर्शनसे हमारे मनकी संकुचितता दूर होती है और किसी महान शक्तिकी अनुभूतिसे हमारा हृदय प्रफुल्लित हो जाता है। इस सत्यका दर्शन डॉ० बोसने हमें कराया।

सवाल

(१) डॉ० जगदीशचंद्र बोसके जन्म और शिक्षाके बारेमें बताइये।

(२) डॉ० बोसने सबसे पहले कौनसी खोज की? इससे क्या फायदा हुआ?

(३) जड़-चेतनके अभ्यासके बाद जगदीशचन्द्र कौनसे नतीजे पर पहुँचे?

(४) डॉ० बोसकी सबसे बडी खोज कौनसी है? वे उसमें कैसे सफल हुए?

(५) 'डॉ० बोस जीवशास्त्रियोंमें एक कवि थे'—समझाइये।

१६

ज्वालामुखीके गर्भमें

[श्री श्यामनारायण कपूर]

[आपका जन्म सन् १९०८में हुआ है। कानपुरकी साहित्य-निकेतन प्रकाशन संस्थाके आप स्थापक हैं। वैज्ञानिक और बाल-साहित्यके आप प्रसिद्ध लेखक हैं। आजकल आप हिन्दीके बालसाहित्यकी तरक्कीमें लगे हुए हैं।

'जीवटकी कहानियाँ', 'विज्ञानकी कहानियाँ', 'भारतीय वैज्ञानिक', 'जहाजकी कहानियाँ' वग़ैरा आपकी मशहूर कृतियाँ हैं।]

वैज्ञानिक मनुष्य-समाजकी ज्ञानवृद्धिके लिये स्वयं मौतके मुँहमें प्रवेश करनेसे भी नहीं चूकते। चार वर्ष पूर्व फ्रेंच वैज्ञानिक आर्पा किरनरने इस कथनको प्रत्यक्ष सिद्ध कर दिखाया। जिस समय ज्वालमुखी पर्वत अग्नि उगलना शुरू करते हैं उस समय क्या होता है, यह जाननेके लिये अनेक वैज्ञानिक प्रयत्न कर चुके थे। परन्तु किसीने भी ज्वालामुखीके गर्भमें उतरकर इस बातको जाननेकी चेष्टा नहीं की। परन्तु आर्पा किरनर ज्वालामुखी पर्वतके रहस्यका उद्‌घाटन करनेके लिये योरपके एक अत्यंत भीषण और जलते हुए ज्वालामुखीके गर्भमें उतरे और उन्होंने उसके अन्दर ८००० फुटकी गहराई तक जानेमें सफलता प्राप्त की। वहाँसे वे उसके अन्दरके चित्र, वहाँ पाई जानेवाली गैसोंके नमूने आदि भी लानेमें सफल हुए।

भूमध्यसागरमें इटलीके समुद्र-तटके पास सिसली द्वीपमें स्ट्राम्बोली नामक ज्वालामुखी है। इसे भूमध्य सागरका 'प्रकाश-स्तम्भ' भी कहा जा सकता है। मि० किरनर इसी ज्वालामुखीके गर्भमें उतरे थे। विगत कई वर्षोंसे वे उसके अन्दर उतरनेकी चेष्टा कर रहे थे। पर सम्पूर्ण आयोजनोंका ठीक ठीक प्रबंध न हो सकनेके कारण निराश हो जाते थे। फिर भी वे चुपचाप बैठनेवाले आदमी न थे। निरन्तर प्रयत्न करते रहे, और अन्तमें उन्होंने इस महाभीषण कार्यमें अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की।

जिस समय उन्होंने ज्वालामुखीमें प्रवेश किया था, वह अपने पूरे वेगसे अग्नि और लावा उगल रहा था। हमारे और आप जैसे व्यक्तियोंकी तो उसके पास फटकने तककी हिम्मत नहीं हो सकती थी, उसके अन्दर जाना तो बहुत दूरकी बात है। जिस बातके अनुमानमात्रसे हम और आप सिहर उठते हैं, वह विज्ञानकी करामातसे सम्भव हो गई है। प्रज्वलित अग्नि और अग्निके भण्डार ज्वालामुखीमें प्रवेश करना भी इसी विज्ञानकी करामातसे ही सम्भव हुआ।

वैज्ञानिकोंने 'एस्बेस्टस' नामक एक पदार्थ ढूंढ़ निकाला है। यह बहुत ही मजबूत और आगमें न जलने-वाला पदार्थ होता है। इसकी सहायतासे आपों किरनर महोदयने ज्वालामुखीके अन्दर प्रवेश किया। एस्बेस्टसका एक ८०० फुट लम्बा रस्सा तैयार किया गया था। इसी

रस्सेकी सहायतासे वे ज्वालामुखीके गर्भमें उतारे गये थे। ऊपरकी ओर उड़ते हुए पत्थर आदिके टुकड़ोंसे रक्षा पानेके लिये 'इस्पात'का शिरस्त्राण लगा लिया था। आपके कपड़े, जूते, दस्ताने और शरीर परकी अन्य सभी चीजें भी एस्बेस्टसकी बनी हुई थीं। आपकी पीठ पर काफ़ी मात्रामें ऑक्सीजन (oxygen) गैस लाद दी गई थी, जिससे आप ज्वालामुखीकी विषैली और प्राणनाशक गैसोंमें भी सुगमतापूर्वक साँस ले सकते थे।

इसके लिये आप कई वर्षोंसे प्रबंध कर रहे थे। आपके मित्रोंने आपकी योजना सुनकर 'पागल' कहा था; परन्तु आपने किसी आपत्ति अथवा विरोधकी तनिक भी परवाह नहीं की और अग्नि उगलते हुए ज्वालामुखीके अन्दर प्रवेश करने और वहाँ पर प्रकृतिकी लीला तथा उसके चरित्र देखने तथा ज्वालामुखीके गर्भके चित्र आदि लेनेका निश्चय कर लिया। इससे पूर्व जिन लोगोंने ज्वालामुखी पहाड़ोंका अध्ययन और निरीक्षण किया था वे उसके अन्दर प्रवेश करनेका साहस नहीं कर सके थे। उन्होंने ज्वालामुखी शान्त होनेके समय अटना और विसूवियस जैसे पर्वतके मुख तक यात्रा करके ही अपने आपको सन्तुष्ट कर लिया था। उसके अन्दर प्रवेश करना तो एक ओर रहा, वे उसके प्रज्वलित होनेके समय उसके पास तक जानेका साहस न कर सके थे। आपने किरनर कैसे स्ट्राम्बोलीके गर्भमें गये इसका रोमांचक वर्णन हम उन्हींके शब्दोंमें अब पढ़ें :—

"आवश्यक सामग्रीको स्ट्राम्बोलीकी चोटी तक पहुँचानेमें बड़ी बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा। स्ट्राम्बोली पहाड़ समुद्रमें जलके बीचोंबीच सिर उठाये खड़ा है। उसके आसपास ढाल या अच्छा किनारा भी नहीं है। फिर भी पहले से ही निश्चित स्थान पर समस्त सामग्री पहुँचाई गई। गिर्रीकी सहायतासे पर्वतके अन्दर उतरनेका प्रबंध किया गया। अन्दरसे बाहरकी ओर सन्देश भेजनेके लिये मैं अपने हाथमें बिजलीका एक लैम्प ले गया था। बिजलीके तार मुझ तक एस्बेस्टसके रस्सेके सहारे पहुँचाये गये थे।

"ज्यों-ज्यों मैं उस भीषण अग्नि उगलनेवाले पर्वतके भीतर उतारा जाने लगा, त्यों-त्यों अपने कार्यकी भीषणता और अपने जीवनके खतरेका अनुभव करने लगा। मैं यह भी अच्छी तरहसे जानता था कि मेरे जिन्दा वापस आनेमें भी सन्देह है। मेरी समस्त सामग्रियाँ अपर्याप्त सिद्ध हो सकती हैं। मेरा हृदय और फेफड़े गैसोंकी गर्मी और उसके प्रभावको शायद न सहन कर सकें।

"मैं ज्वालामुखीके गर्भमें लटका हुआ था, उस समय यह नहीं जानता था कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। मैं यह भी नहीं जानता था कि मुझे कहाँ पर अपना पैर रखनेको मिलेगा। ज्वालामुखीके नीचे पहुँच जाने पर मेरी क्या दशा होगी, मुझे वहाँ पर क्या मिलेगा, मैं यह सब कुछ भी नहीं जानता था। वहाँ मुझे ठोस चट्टान मिलेगी

था उबलता हुआ लावा या चारों ओर प्रज्वलित अग्निकी लपटें, सो मैं कुछ भी नहीं कह सकता था।

"ज्यों-ज्यों मैं नीचेकी ओर उतरता जाता था, मुझे प्रतिक्षण यही मालूम होता था कि अब रस्सा टूटा और अब मैं सदाके लिये इस विकराल पर्वतके पेटमें अदृश्य हुआ। परन्तु मैं अपने चारों ओरकी चीज़ोंको अच्छी तरहसे देखता जाता था। कभी मेरे आसपासकी पहाड़ी दीवार बिलकुल काली दिखाई देती थी और कभी-कभी लाल और पीली। कभी-कभी इस दीवारमें सैकड़ों छोटे-बड़े छिद्र दिखाई देते थे, जिनसे गंधककी लपटें निकल रही थीं। मुझे अपने नीचे कई स्थान फटे दिखाई दिये। वे सब धुएँसे आच्छादित थे। जब मैंने अपनी आँखोंको ऊपरकी ओर किया तब मुझे गहराईका कुछ खयाल आया। उस समय मैंने अपने आपसे प्रश्न किया कि क्या यह रस्सा समस्त बोझ और दबावको सहन कर सकेगा? क्या वे लोग मुझे ऊपर खींच लेनेमें समर्थ होंगे?

"एकाएक मैंने अनुभव किया कि मैं बिलकुल नीचे आ गया हूँ। मैं पहाड़की चोटीसे ८०० फुट नीचे था। चट्टान बहुत ज्यादा गर्म थी पर काफ़ी सख्त भी थी। मैं खड़ा हो सकता था। मैंने चट्टानका तापक्रम नापा। मुझे मालूम हुआ कि कहीं-कहीं उसकी गर्मी २१२ डिग्री फारेनहाईट तक पहुँच जाती है। मेरे आसपासकी वायुकी हरारत भी १५० डिग्री थी। हवामें विषैला गंधकका धुआँ भरा था, पर अपनी ऑक्सीजन गैसकी सहायतासे मैं भली-

भाँति साँस लेनेमें समर्थ था। आखिर मैंने अपने आसपासकी चट्टानों पर अन्य चीज़ोंका निरीक्षण आरम्भ किया।

"मैंने अपने आपको रस्सेसे अलग कर लिया और चारों ओर घूमकर निरीक्षण करने लगा। यहाँ पर मुझे और भी गहरे गड्ढे दिखाई पड़े। गड्ढे क्या थे अच्छे ख़ासे कुएँ थे जिनके व्यास १० से ३० फुट तक थे। थोड़ी थोड़ी देर वाद इन गड्ढोंसे बड़े वेगके साथ लावा आदि निकलता था। इन गड्ढोंका ढाल ऐसा था जिससे लावा निकलकर सदैव एक ही ओर जमा होता था। इनके अग्नि उगलनेके समयका ठीक-ठीक हिसाब लगाकर मैंने क्रमसे इनके मुखोंका निरीक्षण किया और कुछके अन्दर तो इस तरह झांककर भी देखा जैसे कुएँमें झांककर देखा करते हैं।

"मैंने वहाँ क्या देखा? घना धुआँ और रंग-विरंगी गैसें और इन सबके नीचे खौलते हुए लावाका समुद्र। ऐसा मालूम होता था मानो नीचे तरल अग्निका विक्षुब्ध सागर गर्जना कर रहा हो। जिस समय मैं एक कुएँका निरीक्षण कर रहा था, उसमें एक ज़बरदस्त तूफान-सा आया और ऐसा मालूम हुआ कि कुछ क्षणोंमें वह स्थान मेरे सहित उड़कर न मालूम कहाँ जाकर गिरेगा। अब मुझे प्राणरक्षाके लिये अपने स्थानसे भागना आवश्यक हो गया। मुझे वहाँसे हटे हुए मुश्किलसे एक सेकन्ड ही बीता होगा कि बड़े ज़ोरका धड़ाका हुआ और उस विशालकाय गर्तसे उबलते हुए लावाका फव्वारा-सा निकलने

लगा। उस फव्वारेने वायुमें लावाकी सैकड़ों फुट ऊँची धाराएँ उत्पन्न कर दीं। बहुत ऊँचे तक जाकर वह फिर उसी गड्ढेमें गिर पड़ता था, बहुतसा हिस्सा ज्वालामुखीके अन्दर चारों ओर बिखर जाता था और कुछ भाग ८०० फुट ऊँचा उठकर पर्वतकी चोटीको छूता हुआ तीव्र गगनभेदी शब्द उत्पन्न करता हुआ समुद्रमें गिर पड़ता था।

"मुझे उन अग्नि-शिखाओंके बीचमें पूरे तीन घंटे लग गये। विशालकाय कूपोंसे लावा उगलनेके समयका हिसाब लगाकर मैं अपने प्राणोंकी रक्षाके लिये इधर-उधर घूमता फिरता था और बराबर गैसों, ठोस पदार्थों और वहाँ पर पाये जानेवाले खनिज पदार्थोंके नमूने इकट्ठा करता जाता था। मैं अपने कैमरेका प्रयोग भी बराबर करता जाता था तथा कभी न भूलनेवाले दृश्योंका अध्ययन और उनके चित्र आदि लेता जाता था।

"जब मुझे इस तरह कार्य करते हुए काफ़ी देर हो गई और मैं बहुत थकावट अनुभव करने लगा तब मैंने ऊपर अपने सहायकोंको निश्चित संकेत किया। उन्होंने मुझे खींच लिया। ऊपर खींचे जानेमें मुझे जो कष्ट और पीड़ा हुई उसका वर्णन करनेके लिये मेरे पास पर्याप्त शब्द भी नहीं हैं। मेरी दृढ़ता काफ़ूर हो चुकी थी। मजबूरन मुझे गँधकसे परिपूर्ण धुएँमें साँस लेना पड़ रहा था। जैसे जैसे मैं ताज़ी-ताज़ी हवामें ऊपरकी ओर आता गया, मेरे फेफड़ोंने काम करना बन्द कर दिया। ऊपर पहुँचनेसे पहले मैं बिलकुल बेहोश हो गया था और

बिलकुल निर्जीव-सा पड़ रहा। जब मैं अच्छा हुआ तब मुझे पूर्ण शान्ति अनुभव हुई। इतना अधिक परिश्रम करनेके बाद और साक्षात् मृत्युके मुखसे सहीसलामत जिन्दा बच आने पर मेरे लिये खूब प्रसन्न होना बिलकुल स्वाभाविक था। मेरी प्रसन्नता इस बातसे और भी अधिक बढ़ गई थी कि मैंने एक ऐसे साहस और महत्वपूर्ण कार्यमें सफलता प्राप्त की, जिसे उस समय तक सब लोग नितान्त असम्भव समझे हुए थे।"

सवाल

(१) आर्पा फिरनर किस ज्वालामुखीके अन्दर कैसे उतरे? अपनी रक्षाके लिये उन्होंने क्या उपाय किये?

(२) आर्पा फिरनरने ज्वालामुखीके गर्भमें जो देखा उसका वर्णन अपने शब्दोंमें कीजिये।

(३) ऐसे किसी दूसरे साहसके बारेमें लिखें।

पद्य-विभाग

१

पंथी बढ़े चलो !

[श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल]

[आप एक अर्थशास्त्रीकी हैसियतसे मशहूर हैं। आधुनिक राजकारणमें भी आप सक्रिय हिस्सा ले रहे हैं।

आपने गहरे निबन्ध, कवितायें वगैरा लिखी हैं। आपकी शैली मनोरंजक है और दिल पर असर करनेवाली है। आजकल आप कांग्रेसके महामंत्रियोंमें से एक हैं।

आपकी मशहूर कितावें ये हैं — 'रोटीका राग', 'मानव', 'सेगांवका सन्त', 'गांधीवादी आर्थिक योजना', 'गांधीवादी विधान', 'अमर आशा' (काव्यसंग्रह), 'जुगनू' (मनोरंजक लेखसंग्रह) वगैरा।]

पंथी, बढ़े चलो निज पथ पर !
यदि चलते चलते गिर जाओ,
पैरोंमें कांटे चुभ जायें,
अँधियारीमें मार्ग न सूझे,
सघन मेघ अंबरमें छायें !
फिर भी चलना काम हमारा
दृढ़ श्रद्धा उरमें धारण कर,

मंजिल तक चाहे जा पहुँचे
या गिर कर मर जायें पथ पर!
नहीं विफलता चलकर गिरना,
बैठे रहना अधम पाप है!
'अथक यत्न' वरदान देवका,
दीन निराशा घोर शाप है!
हो न निराश कभी तुम पल भर
पंथी, बढ़े चलो निज पथ पर!

२

बसा ले अपने मनमें प्रीत

[श्री हफ़ीज़ जालंधरी]

बसा ले अपने मनमें प्रीत।
मन-मन्दिरमें प्रीत बसा ले,
ओ मूरख ओ भोले भाले,
दिलकी दुनिया कर ले रोशन,
अपने घरमें जोत जगा ले।
प्रीत है तेरी रीत पुरानी,
भूल गया ओ भारतवाले!

भूल गया ओ भारतवाले,
प्रीत है तेरी रीत।
बसा ले अपने मनमें प्रीत।

क्रोध-कपटका उतरा डेरा,
छाया चारों खूंट अँधेरा,
शेख-बरहमन दोनों डाकू,
एकसे बढ़कर एक लुटेरा।
ज़ाहिरदारोंकी संगतमें,
कोई नहीं है संगी तेरा,

कोई नहीं है संगी तेरा,
मन है तेरा मीत,
बसा ले अपने मनमें प्रीत।

भारत-माता है दुखियारी,
दुखियारे हैं सब नर नारी,
तू ही उठा ले सुन्दर मुरली,
तू ही बन जा श्याम-मुरारी।
तू जागे तो दुनिया जागे,
जाग उठें सब प्रेम-पुजारी,

जाग उठें सब प्रेम-पुजारी,
गायें तेरे गीत,
बसा ले अपने मनमें प्रीत।

नफ़रत इक आजार है प्यारे,
इसकी दारू प्यार है प्यारे,
आ जा असली रूपमें आ जा,
तू ही प्रेम-अवतार है प्यारे।

यह हारा तो सब कुछ हारा,
मनके हारे हार है प्यारे,
मनके हारे हार है प्यारे,
मनके जीते जीत,
बसा ले अपने मनमें प्रीत।

३

हमारा वतन

[पं० ब्रजनारायण चकबस्त]

[आपका जन्म सन् १८८२ में और मृत्यु सन् १९२६ में हुई। आपके पुरखे कश्मीरसे आकर लखनऊमें रहने लगे थे। आप लखनऊमें ही पैदा हुए और वहीं वकालत की। बचपनसे ही कविता लिखनेका आपको शौक था। आपकी कविताओंमें वतनकी मुहब्बत और उसके लिये दर्द भरा हुआ होता है। 'सुबह-वतन' आपका मशहूर काव्यसंग्रह है।]

यह हिन्दोस्ताँ है हमारा वतन,
मुहब्बतकी आँखोंका तारा वतन,
हमारा वतन, दिलसे प्यारा वतन।
वह इसके दरख्तोंकी तैयारियाँ,
वह फल, फूल, पौधे वह फुलवारियाँ,
हमार वतन, दिलसे प्यारा वतन।
हवामें दरख्तोंका वह झूमना,
वह पत्तोंका फूलोंका मुंह चूमना,
हमारा वतन, दिलसे प्यारा वतन।

वह सावनमें काली घटाकी बहार,
वह बरसातमें हल्की हल्की फुहार,
हमारा वतन, दिलसे प्यारा वतन ।

वह बाग़ोंमें कोयल वह जंगलमें मोर,
वह गंगाकी लहरें वह जमनाका शोर,
हमारा वतन, दिलसे प्यारा वतन ।

इसीसे है इस जिन्दगीकी बहार,
वतनकी मुहब्बत हो या माँका प्यार,
हमारा वतन, दिलसे प्यारा वतन ।

४

पिंजरेका पंछी

[डॉ० इक़बाल]

[आप अपनी कविता 'सारे जहाँसे अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' से सारे देशमें मशहूर हैं। आपका पूरा नाम शेख मुहम्मद 'इकबाल' है। आप सन् १८७५ में स्यालकोटमें पैदा हुए और सन् १९३७ में मर गये।

आपने फ़ारसीमें भी खूब लिखा है। आप जगप्रख्यात कवि हैं। उर्दू शायरीको आपने पुराने ढर्रेसे निकालकर एक नया रास्ता दिखाया।]

आता है याद मुझको गुज़रा हुआ जमाना,
वह झाड़ियाँ चमनकी, वह मेरा आशियाना ।
वह साथ सबके उड़ना, वह सैर आसमांकी,
वह बाग़की बहारें, वह सबका मिलके गाना ।

पत्तोंका टहनियोंपर वह झूमना खुशीमें,
ठंडी हवाके पीछे वह तालियाँ बजाना।
आजादियाँ कहाँ वह अब अपने घोंसलेकी?
अपनी खुशीसे जाना, अपनी खुशीसे आना।
लगती है चोट दिलपर, आता है याद जिस दम,
शबनमका सुबह आकर फूलोंका मुँह धुलाना।
वह प्यारी प्यारी सूरत, वह कामनी-सी मूरत,
आबाद जिसके दमसे था मेरा आशियाना।
तड़पा रही है मुझको रह रहके याद उसकी,
तक़दीरमें लिखा था पिंजरेका आबदाना।
इस क़ैदका इलाही दुखड़ा किसे सुनाऊँ?
डर है यही, क़फ़समें मैं ग़मसे मर न जाऊँ।
क्या बदनसीब हूँ मैं, घरको तरस रहा हूँ,
साथी तो हैं वतनमें, मैं क़ैदमें पड़ा हूँ।
आई बहार कलियाँ फूलोंकी हँस रही हैं,
मैं इस अँधेरे घरमें क़िस्मतको रो रहा हूँ।
बाग़ोंमें कुन्बेवाले खुशियाँ मना रहे हैं,
मैं दिल-जला अकेला, दुखमें कराहता हूँ।
आती नहीं सदाएँ उनकी मेरे क़फ़समें,
होती मेरी रिहाई ऐ काश मेरे बसमें।
अरमान है यह जीमें उड़कर चमनको जाऊँ,
टहनीपे गुलकी बैठूं, आज़ाद होके गाऊँ।
बेरीकी शाख़पर हो वैसा ही फिर बसेरा,
उस उजड़े घोंसलेको फिर जाके मैं बसाऊँ।

चुगता फिरूँ चमनमें दाने ज़रा ज़रासे,
साथी जो हैं पुराने, उनसे मिलूँ-मिलाऊँ।
फिर दिन फिरें हमारे, फिर सैर हो वतनकी,
उड़ते फिरें खुशीसे, खाएँ हवा चमनकी।
जबसे चमन छुटा है, यह हाल हो गया है,
दिल ग़मको खा रहा है, ग़म दिलको खा रहा है।
गाना इसे समझकर खुश हो न सुननेवाले,
दुखे हुए दिलोंकी फ़रियाद यह सदा है।
आजाद जिसने रहकर दिन अपने हों गुज़ारे,
उसको भला खबर क्या, यह क़ैद क्या बला है?
आज़ाद मुझको कर दे, ओ क़ैद करनेवाले!
मैं बेजबाँ हूँ क़ैदी, तू छोड़कर दुआ ले।

५

विश्व-राज्य

[श्री मैथिलीशरण गुप्त]

[हिन्दीके कवियोंके आप सिरमौर हैं। आप एक ऊँची कोटिके राष्ट्रीय कवि हैं। आप चिरगाँव, जिला झाँसीके रहनेवाले हैं। आपको कविता विरसेमें मिली है।

आपके दिलमें गरीबोंके लिये सहानुभूति और देशके लिये प्रेम भरा है। प्रकृति-वर्णनमें तो आप प्रकृतिका हूबहू चित्र खींच देते हैं। आपकी बड़ी विशाल दृष्टि है। यह कविता आपका ताजा सर्जन है और आपकी विशाल दृष्टिका सबूत है।

आपकी प्रसिद्ध रचनायें ये हैं — 'भारत-भारती', 'साकेत', 'यशोधरा', 'पंचवटी', 'जयद्रथवध', 'किसान' आदि।]

कहो तुम्हारी जन्मभूमिका है कितना विस्तार?
भिन्न भिन्न यदि देश हमारे तो किसका संसार?
धरतीको हम काटें-छांटें
तो उस अम्बरको भी बांटें
एक अनल है एक सलिल है एक अनिल संचार
कहो तुम्हारी जन्मभूमिका है कितना विस्तार?
एक भूमि है, एक व्योम है
एक सूर्य है, एक सोम है
एक प्रकृति है, एक पुरुष है अगणित रूपाकार
कहो तुम्हारी जन्मभूमिका है कितना विस्तार?
ठौर-ठौरका गुण अपना है
ऋतुओंका कँपना तपना है
समशीतोष्ण एकरस हमको होना है अविकार
कहो तुम्हारी जन्मभूमिका है कितना विस्तार?
अलग अलग हैं सभी अधूरे
सब मिलकर ही तो हम पूरे
एक दूसरेका पूरक है एक मनुज परिवार
कहो तुम्हारी जन्मभूमिका है कितना विस्तार?
स्वर्णभूमि यदि अलग तुम्हारी
तो हम भी लौहायुध-धारी

कैसे हो सकता है फिर इस विग्रहका परिहार
कहो तुम्हारी जन्मभूमिका है कितना विस्तार?

परित्राणका एक मन्त्र है
विश्व-राज्य, जो लोकतंत्र है

सब वर्गोंका सब धर्मोंका जहाँ एक अधिकार
कहो तुम्हारी जन्मभूमिका है कितना विस्तार?

एक देहके विविध अंग हम
दुखें-पुखें सब एक संग हम

लगे एकके क्षत पर सबका स्नेह-लेप सौ बार
कहो तुम्हारी जन्मभूमिका है कितना विस्तार?

६

मेरा नया बचपन

[स्व० श्री सुभद्राकुमारी चौहान]

[हिन्दीकी स्त्री-कवियोंमें आपका स्थान बहुत ऊँचा है। आपने बहुत ही सुन्दर कवितायें लिखी हैं। खासकरके स्त्री-हृदय, मातृ-हृदयके भावोंको आप बड़े अनूठे ढंगसे चित्रित करती हैं। आपकी भाषामें सरलता, मधुरता और सचोटता है। 'मुकुल' आपका अच्छा काव्य-संग्रह है। आपको सेक्सरिया पुरस्कार भी मिला था। आपका जन्म सन् १९०५में हुआ और अवसान अभी हाल ही में हुआ है।]

बार बार आती है मुझको
मधुर याद बचपन तेरी।

गया, ले गया तू जीवनकी
सबसे मस्त खुशी मेरी ॥

चिन्ता-रहित खेलना-खाना
वह फिरना निर्भय स्वच्छन्द ।
कैसे भूला जा सकता है
बचपनका अतुलित आनन्द ?

ऊँच-नीचका ज्ञान नहीं था
छुआछूत किसने जानी ?
बनी हुई थी वहाँ झोंपड़ी —
और चीथड़ोंमें रानी ॥

किये दूधके कुल्ले मैंने
चूस अँगूठा सुधा पिया ।
किलकारी किल्लोल मचाकर
सूना घर आबाद किया ॥

रोना और मचल जाना भी
क्या आनन्द दिखाते थे !
बड़े-बड़े मोती-से आँसू
जयमाला पहनाते थे ॥

मैं रोई, माँ काम छोड़कर
आई, मुझको उठा लिया ।
झाड़ – पोंछकर चूम – चूम
गीले गालोंको सुखा दिया ॥

दादीने चन्दा दिखलाया
नेत्र नीर-युत दमक उठे ।
धुली हुई मुसकान देखकर
सबके चेहरे चमक उठे ॥

वह सुखका साम्राज्य छोड़कर
मैं मतवाली बड़ी हुई ।
लुटी हुई, कुछ ठगी हुई-सी
दौड़ द्वार पर खड़ी हुई ॥

लाजभरी आँखें थीं मेरी
मनमें उमंग रंगीली थी ।
तान रसीली थी कानोंमें
चंचल छैल छबीली थी ॥

दिलमें एक चुभन-सी थी
यह दुनिया सब अलबेली थी ।
मनमें एक पहेली थी
मैं सबके बीच अकेली थी ॥

मिला, खोजती थी जिसको
हे बचपन! ठगा दिया तूने ।
अरे! जवानीके फन्दे में
मुझको फँसा दिया तूने ॥

सब गलियाँ उसकी भी देखीं
उसकी खुशियाँ न्यारी हैं ।

प्यारी, प्रीतमकी रंग-रलियों
की स्मृतियाँ भी प्यारी हैं ॥

माना मैंने युवा-कालका
जीवन खूब निराला है ।
आकांक्षा, पुरुषार्थ, ज्ञान का
उदय मोहने वाला है ॥

किन्तु यहाँ झंझट है भारी
युद्ध-क्षेत्र संसार बना ।
चिन्ता के चक्करमें पड़कर
जीवन भी है भार बना ॥

आ जा बचपन ! एक बार फिर
दे दे अपनी निर्मल शान्ति ।
व्याकुल व्यथा मिटानेवाली
वह अपनी प्राकृत विश्रान्ति ॥

वह भोली-सी मधुर सरलता
वह प्यारा जीवन निष्पाप ।
क्या आकर फिर मिटा सकेगा
तू मेरे मनका सन्ताप ॥

मैं बचपनको बुला रही थी
बोल उठी बिटिया मेरी ।
नन्दनवन-सी फूल उठी
यह छोटी-सी कुटिया मेरी ॥

'माँ ओ' कहकर बुला रही थी
मिट्टी खाकर आई थी।
कुछ मुंहमें कुछ लिये हाथमें
मुझे खिलाने लाई थी॥
पुलक रहे थे अङ्ग, दृगोंमें
कौतूहल था छलक रहा।
मुँह पर थी आह्लाद-लालिमा
विजय-गर्व था झलक रहा॥
मैंने पूछा "यह क्या लाई?"
बोल उठी वह "माँ, काओ।"
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशीसे
मैंने कहा—"तुम्हीं खाओ॥"
पाया मैंने बचपन फिर से
बचपन बेटी बन आया।
उसकी मंजुल मूर्ति देखकर
मुझमें नवजीवन आया॥
मैं भी उसके साथ खेलती
खाती हूँ; तुतलाती हूँ।
मिलकर उसके साथ स्वयं
मैं भी बच्ची बन जाती हूँ॥
जिसे खोजती थी बरसों से
अब आकर उसको पाया।
भाग गया था मुझे छोड़कर
वह बचपन फिरसे आया॥

७

साथी ! दुखी हुए क्यों इतने ?

[श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल]

साथी ! दुखी हुए क्यों इतने ?
दुख तो जग का पंथ पुराना
मानव ने दुख झेले कितने ?
साथी ! दुखी हुए क्यों इतने !

भूल गये क्या दुःख राम के,
वन वन भटके चौदह वर्ष,
परम प्रिया सीता भी खोई
उन्हें मिला था क्या चिर हर्ष ?

कृष्ण-चरित में भरा पड़ा है
संकट, युद्ध, सतत संघर्ष;
सारा युग लड़ते ही बीता
उन्हें मिला क्या सुख निष्कर्ष ?

ईसाकी वह करुण कहानी —
राजमुकुट काँटोंका पहना;
सूलीपर आखिर ठुकवाया
कीलोंका कर–पग में गहना !

और मुहम्मद साहब ने भी
खाईं कितनी ईंटें, धक्के;

कितनी सहनी पड़ी यातना
रह न सके अपने घर—मक्के!

इस युगमें बापूको देखो
कितने दुस्तर दुःख सहे हैं,
अपने तनको सुखा सुखा कर
दीन जनोंको जगा रहे हैं!

ये तो हैं अवतार-पुरुष सब,
फिर हम तुम क्यों अश्रु बहावें?
हमसे अधिक दुखी भी जन हैं,
यही सोच संतोष मनावें!

८

घट

[श्री सियारामशरण गुप्त]

[आप काव्यक्षेत्रमें अपने बड़े भाई मैथिलीशरणजीके क़दम पर चल रहे हैं। अपनी कविताओंमें आप मनोवैज्ञानिक भावोंको बड़ी खूबीके साथ रखते हैं। भाषा और भाव पर आपका क़ाबू प्रशंसनीय है। आप केवल कवितायें ही नही लिखते हैं। आपने निवन्ध, कहानियाँ, उपन्यास, नाटक वग़ैरा पर भी कलम चलाई है और सफल रहे हैं। आप एक बड़े रामभक्त भी हैं। आपके प्रसिद्ध ग्रंथ ये हैं— गोद, नारी (उपन्यास); मानुषी, झूठ-सच (कहानियाँ, निवन्ध); मौर्य-विजय, बापू, दूर्वादल, दैनिकी, आर्द्रा (कविता) वग़ैरा।]

कुटिल कंकड़ोंकी कर्कश रज
मल मलकर सारे तनमें,

किस निर्मम निर्दयने मुझको
बांधा है इस बन्धनमें ?

फांसी-सी है पड़ी गलेमें
नीचे गिरता जाता हूँ।
बार बार इस अंध कूपमें
इधर उधर टकराता हूँ।

ऊपर-नीचे अन्धकार है,
बन्धन है अवलम्ब यहाँ,
यह भी नहीं समझमें आता,
गिरकर मैं जा रहा कहाँ ?

कांप रहा हूँ डरके मारे
हुआ जा रहा हूँ म्रियमाण।
ऐसे दुःखमय जीवनसे हा,
किस प्रकार पाऊँ मैं त्राण ?

सभी तरह हूँ विवश करूँ क्या
नहीं दीखता कोई उपाय;
यह क्या ? — यह तो अगम नीर है
डूबा ! अब डूबा मैं हाय !!

भगवन् हाय ! बचा लो अब तो,
तुम्हें पुकारूँ मैं जब तक,
हुआ तुरन्त निमग्न नीरमें
आर्तनाद करके तब तक !

अरे, कहाँ वह गई रिक्तता
डरका भी अब पता नहीं;
गौरववान हुआ हूँ सहसा,
बना रहूँ तो क्यों न यहीं?

पर मैं ऊपर चढ़ा जा रहा
उज्ज्वलतर जीवन लेकर;
तुमसे उऋण नहीं हो सकता
यह नवजीवन भी देकर।

९

उषा

[श्री सूर्यदेवी दीक्षित 'उषा']

[आप हिन्दीकी एक अच्छी कवयित्री मानी जाती हैं। 'निर्झरिणी' काव्यसे आप प्रकाशमें आईं। आपको सेकसरिया पुरस्कार भी मिला है। आपकी कविताओंमें तेज, माधुर्य, भावोंकी व्यापकता, सरल स्वाभाविक चित्रण, ये सभी गुण मौजूद हैं।

आपकी कविताओंका एक संग्रह 'निर्झरिणी' के नामसे प्रकाशित हुआ है।]

आरक्त छटा छिटकायी,
किसने प्राचीमें आकर?
रँग दिया क्षितिजका अंचल,
किसने रोली बिखरा कर!

इस स्वर्ण किरणमें फैली,
किस सुख-सुहागकी लाली?
माणिक-मदिरासे भर दी,
किसने भावोंकी प्याली?

किस गर्वमयी बाला के,
सेंदुरका सुन्दर टीका?
फैला उद्गार सिमट कर,
किस भावमयी के जी का?

या करता प्राण चितेरा
अंकित प्राचीके पट पर–
तारोंकी करुण कहानी,
सुन्दर रक्तिम रँग भर कर।

है विश्व-वाटिका के किस,
कमनीय कुसुमकी लाली?
नित घोल अरुणिमा जिसको,
सींचा करता वनमाली।

रजनीके उर–अन्तर में
जो विरह-व्यथा हिमकरकी;
वह अरुण रूप धर आई,
ज्वाला–सी बन अम्बरकी।

फट गया हृदय रजनी का,
वह चली रुधिर की धारा।

क्या प्रिय वियोगने उसको
है तीव्र दुधारा मारा!

आ सके स्वर्ग से भूपर,
जिसमें ऊषा सुकुमारी।
विधिने निर्मित कर दी क्या,
यह स्वर्ण सड़क अति प्यारी!

या आज गगन-गङ्गा है,
भू पर आकर लहराई,
नन्दन वनके कुसुमोंकी
लालिमा वहाकर लाई।

क्या इसी स्वर्ण धारा से,
धुल गई क्षितिजकी रेखा,
क्रीड़ा करती ऊषाको
जिसमें आ रविने देखा।

अधखुले अरुण नयनोंमें,
कुछ-कुछ मदकी आभा ले,
अपना ऐश्वर्य लुटाकर,
क्या देख रही हो बाले!

नीरव रजनी में जागी,
पथ तकते जीवन-धनका,
इससे नयनों में लाली,
कुछ भेद बताओ मनका।

इस प्रथम किरणमें प्यारी
क्या जादू भर लाई थी ?
यह उछल पड़ा जग सारा,
क्या टोना कर आई थी ?.

इस अरुण छटा पर बोलो,
कितनी हिम-निधियाँ वारूँ ?
किस भाव भरे नयनोंसे,
अपलक में इसे निहारूँ ?

हो मुदित विहंगम कुलने,
स्वागतका गान सुनाया ।
नव नर्तन प्रकृति नटी ने,
है कणकणका दिखलाया ।

भोली कलियाँ मुसुकाईं,
हिम कणका हार पहनकर,
हो मुग्ध कुसुम मय विहँसे
प्रिय अलिके मधुर मिलन पर ।

मंजुल मलयानिल ने भी
तब छेड़ा मस्त तराना ।
तेरा आना सुकुमारी,
इस अखिल विश्वने जाना ।

१०

अपनी अपनी मंज़िल

[श्री कमला चौधरी]

मुझे राहमें रोशनी मत दिखाना —
मैं अपना ही दीपक जलाती चलूंगी।
किधर मेरी मंजिल किधर है किनारा,
नही मुझको लेना किसीका सहारा।
तड़पकर मेरे दिलने मुझको पुकारा
बताया है चुपकेसे कोई इशारा।
बताये नही मुझको कोई किनारा –
मैं दिलको ही साहिल बनाती चलूंगी।
नहीं भाती आँखोंको सजधज ये रौनक,
चकाचौंध जगमग जमानेकी हू हक्।
कि जो कुछ है बातिल है कुछ भी नहीं हक़,
ये नक़्शे नहीं मुझको भाते है मुतलक़
मेरे दिलमें बसती है सरगम जो हरदम
मैं उससे क़दमको मिलाती चलूंगी।
मचलती हैं लहरें ये उनकी है खसलत,
कि जाना और आना बहारोंकी आदत।
जमाने ने दी क्या गुलोंको ये रंगत?
चकोरों ने पाई कहांसे है रग़बत?

सभीमें भरी है अजब एक वहशत–
मैं वहशतको राहत बनाती चलूंगी।
ये गुलशनमें गुञ्चे हैं हँसते चटकते,
गुलाबोंकी रविशें हज़ारे लहकते।
हज़ारों हैं खिलते हज़ारों महकते,
कभी खुश्क होते कभी हैं फफकते।
ये हँसते महकते हैं बनते बिगड़ते —
मैं गुलशन बनाती लुटाती चलूंगी।
बनाये हैं दरिया ने खुद ही किनारे,
पपीहे ने पाये हैं दिलसे ही नारे।
बताओ फ़लक पर हैं किसने उभारे,
ये सलमे-सितारेसे चमके जो तारे।
ये चांद और सूरज ये दिलकश नज़ारे–
मैं अपने नज़ारों पै छाती चलूंगी।
अकेले ही आई अकेले है जाना,
अलग अपनी मंज़िल अलग है ठिकाना।
कि आनेका जानेका लम्बा फ़साना,
बनाया है खुद ही अभी है बनाना।
तुम इसमें नहीं कुछ बढ़ाना-घटाना,
मैं अपना फसाना बनाती चलूंगी।

११

चल पड़ी चुपचाप

[श्री माखनलाल चतुर्वेदी]

[आप हिन्दीके बुजुर्ग कवियोंमें से हैं। राष्ट्रीयता और गांधीवाद का आपके ऊपर असर पड़ा है। 'एक भारतीय आत्मा' के नामसे आप हिन्दी साहित्य जगतमें पहचाने जाते हैं। आप सिर्फ कवि ही नहीं हैं; एक अच्छे पत्रकार भी हैं। आप 'कर्मवीर' नामक साप्ताहिक चला रहे हैं। आजकल आप जनपदीय — देहाती लोकसाहित्य पर काम कर रहे हैं।]

चल पड़ी चुपचाप सन-सन-सन हुआ,
डालियों को यों चिताने-सी लगी,
आँख की कलियाँ, अरी, खोलो जरा,
हिल स्वपत्तियों को जगाने-सी लगी।

पत्तियों की चुटकियाँ
झट दी बजा,
डालियाँ कुछ-
ढुलमुलाने-सी लगी,
किस परम आनन्द-
निधिके चरण पर,
विश्व-साँसें गीत
गाने-सी लगीं।

जग उठा तरु-वृन्द-जग, सुन घोषणा
पंछियों में चहचहाहट मच गई;
वायु का झोंका जहाँ आया वहाँ-
विश्वमें क्यों सनसनाहट मच गई?

१२

कलियोंसे

[श्री हरिवंशराय 'बच्चन']

[आपका जन्म सन् १९०७में हुआ है। आपकी कवितामें एक प्रकारका जोश है। चोटदार भाषामें अपने भावोंको आप व्यक्त करते हैं। यौवनकी मस्ती आपकी कलममें से उमड़ती रहती है। आपके ऊपर उमर खय्यामका काफी असर पड़ा है। आपकी कवितायें आकाश रेडियो पर भी गायी जाती हैं। आजकल आप प्रयाग विश्वविद्यालयमें अंग्रेजीके अध्यापक हैं।

आपकी प्रमुख रचनायें ये हैं—'मधुशाला', 'मधुबाला', 'मधुकलश', 'निशा-निमंत्रण', 'प्रारंभिक रचनायें' वगैरा।]

"अहे! मैंने कलियोंके साथ—
जब मेरा चंचल बचपन था,
महा निर्दयी मेरा मन था—
अत्याचार अनेक किये थे,
कलियोंको दुख दीर्घ दिये थे;
तोड़ इन्हें बागोंसे लाता,
छेद छेदकर हार बनाता।
क्रूर कार्य यह कैसे करता!
सोच इसे हूँ आहें भरता।
कलियो! तुमसे क्षमा माँगते ये अपराधी हाथ।"
"अहे! वह मेरे प्रति उपकार,

कुछ दिनमें कुम्हला ही जाती,
गिरकर भूमि समाधि बनाती,
कौन जानता मेरा खिलना?
कौन नाज़से हिलना-डुलना?
कौन गोदमें मुझको लेता?
कौन प्रेमका परिचय देता?
मुझे तोड़ की वड़ी भलाई,
काम किसीके तो कुछ आयी!
वनी रही दो-चार घड़ी तो किसी गलेका हार!"
"अहे! वह क्षणिक प्रेमका जोश!
सरस सुगंधित थी तू जव तक,
वनी स्नेह-भाजन थी तब तक,
जहाँ तनिक-सी तू मुरझायी,
फेंक दी गयी, दूर हटायी,
इसी प्रेमसे क्या तेरा, हो जाता है परितोप!"
"वदलता पल-पल पर संसार,
हृदय विश्वके साथ वदलता
प्रेम कहाँ फिर लहे अटलता?
इससे केवल यही सोचकर,
लेती हूँ संतोष हृदय भर—
मुझको भी था किया किसीने कभी हृदयसे प्यार।"

१३

राही

[भाई अली अहमद]

[आप एक नौजवान कवि हैं। हिन्दुस्तानी भाषाके आप प्रेमी हैं। आपकी शैली मिली-जुली है। नौजवानोंको प्रेरणा देनेवाली कवितायें आप 'नया हिन्द' में लिखा करते हैं।]

राही! अपनी राह चला जा
पग पग पर हैं सौ सौ धोके, मायाके फैले हैं फंदे
कम हैं फूल, जियादा काँटे, काँटोंको भी फूल समझता
राही! अपनी राह चला जा
रोकेंगे पथ तेरा नाले, टीले बन जाएँगे हिमाले
डसनेको दौड़ेंगे काले, इन कालोंके सीस कुचलता
राही! अपनी राह चला जा
तूफ़ाँ उट्ठे, भूकम्प आये, परबतसे परबत टकराये
धरती चलनेसे रुक जाये, रुकनेका तू नाम न लेना
राही! अपनी राह चला जा
आँखोंके मत ढूंढ़ इशारे, भटका देंगे राह ये तारे
झूटे पीतके सपने सारे, इन सपनोंको झूट समझता
राही! अपनी राह चला जा
तारे आँख झपक सकते हैं, दरिया राह भटक सकते हैं
चाँद और सूरज थक सकते हैं, थकना काम नहीं है तेरा
राही! अपनी राह चला जा

('नया हिन्द' से सादर)

झाँसीकी रानी

[स्व० श्री सुभद्राकुमारी चौहान]

सिंहासन हिल उठे, राजवंशोंने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारतमें भी आयी फिरसे नई जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादीकी क़ीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगीको करनेकी सबने मनमें ठानी थी,

चमक उठी सन सत्तावनमें
वह तलवार पुरानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी॥

कानपूरके नानाकी मुँहबोली बहन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिताकी वह सन्तान अकेली थी,
नानाके सँग पढ़ती थी वह, नानाके सँग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थीं,

वीर शिवाजीकी गाथाएँ
उसको याद जबानी थीं।
बुन्देले हरबोलोंके मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी॥

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरताकी अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारोंके वार,
नकली युद्ध, व्यूहकी रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवार,

महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी
भी आराध्य भवानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी॥

हुई वीरताकी वैभवके साथ सगाई झाँसीमें,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसीमें,
राजमहलमें बजी बधाई खुशियाँ छाई झाँसीमें,
सुभट बुंदेलोंकी विरुदावलि-सी वह आई झाँसीमें,

चित्राने अर्जुनको पाया,
शिवसे मिली भवानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी॥

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलोंमें उजियाली छाई,
किन्तु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलानेवाले करमें उसे चूड़ियाँ कब भाई,
रानी विधवा हुई हाय, विधिको भी नहीं दया आई...

निःसन्तान मरे राजाजी,
रानी शोक-समानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी ॥

बुझा दीप झाँसीका तब डलहौज़ी मनमें हरषाया,
राज्य हड़प करनेका उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फ़ौरन् फ़ौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिसका वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया,

अश्रुपूर्ण रानीने देखा
झाँसी हुई बिरानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी ॥

अनुनय विनय नहीं सुनता है, विकट फिरंगीकी माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौज़ीने पैर पसारे अब तो पलट गई काया,
राजाओं नव्वाबोंको भी उसने पैरों ठुकराया,

रानी दासी बनी; बनी यह
दासी अब महारानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी॥

छिनी राजधानी देहलीकी, लिया लखनऊ बातों-बात,
क़ैद पेशवा था बिठूरमें, हुआ नागपुरका भी घात,
उदैपूर, तञ्जोर, सतारा, करनाटककी कौन बिसात,
जब कि सिन्ध, पंजाब, ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र-निपात,

बंगाले, मद्रास आदि की
भी तो वही कहानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी॥

रानी रोईं रनिवासोंमें बेगम ग़मसे थीं बेज़ार,
उनके गहने-कपड़े बिकते थे कलकत्तेके बाज़ार,
सरे-आम नीलाम छापते थे अंग्रेज़ोंके अखबार,
'नागपूरके ज़ेवर ले लो', 'लखनऊके लो नौलख हार',

यों परदे की इज़्ज़त परदेशी
के हाथ बिकानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुँह
हमने सुनी कहानी थी।

खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी ।।

कुटियोंमें थी विषम वेदना, महलोंमें आहत अपमान,
वीर सैनिकोंके मनमें था, अपने पुरखोंका अभिमान,
नाना धुन्धूपन्त पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीलीने रण-चंडीका कर दिया प्रकट आह्वान,

हुआ यज्ञ प्रारम्भ उन्हें तो
सोई ज्योति जगानी थी ।
बुन्देले हरबोलोंके मुँह
हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी ।।

महलोंने दी आग, झोंपड़ोंने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतन्त्रताकी चिनगारी अन्तरतमसे आई थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थी,
मेरठ, कानपूर, पटनाने भारी धूम मचाई थी,

जबलपूर, कोल्हापुरमें भी
कुछ हलचल उकसानी थी ।
बुन्देले हरबोलोंके मुँह
हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी ।।

इस स्वतन्त्रता-महायज्ञमें कई वीरवर आये काम,
नानाधुन्धूपन्त, ताँतिया, चतुर अजीमुल्ला सरनाम,
अहमदशाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारतके इतिहास-गगनमें अमर रहेंगे जिनके नाम,

लेकिन आज जुर्म कहलाती
उनकी जो कुरबानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी॥

इनकी गाथा छोड़ चलें हम झाँसीके मैदानोंमें,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानोंमें,
लेफ्टिनेण्ट वोकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानोंमें,
रानीने तलवार खींच ली, हुआ द्वन्द्व अ-समानोंमें,

जख्मी होकर वोकर भागा,
उसे अजब हैरानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी॥

रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरन्तर पार,
घोड़ा थक कर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना-तट पर अंग्रेजोंने फिर खाई रानीसे हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार,

अंग्रेज़ोंके मित्र सेंधिया
ने छोड़ी रजधानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी॥

विजय मिली, पर अंग्रेज़ोंकी फिर सेना घिर आई थी,
अबके जनरल स्मिथ सम्मुख था, उसने मुँहकी खाई थी,
काना और मन्दरा सखियाँ रानीके सँग आई थी,
युद्धक्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी,
पर, पीछे ह्यूरोज़ आ गया,
हाय! घिरी अब रानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी॥

तो भी रानी मार-काटकर चलती बनी सैन्यके पार,
किन्तु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतनेमें आ गये सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार-पर-वार,
घायल होकर गिरी सिंहनी
उसे वीर-गति पानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुँह
हमने सुनी कहानी थी।

खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी ।।

रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइसकी थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतन्त्रता नारी थी,

दिखा गई पथ, सिखा गई
हमको जो सीख सिखानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुँह
हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी ।।

जाओ रानी, याद रखेंगे ये कृतज्ञ भारतवासी
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतन्त्रता अविनाशी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाईको चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलोंसे चाहे झाँसी,

तेरा स्मारक तू ही होगी,
तू खुद अमिट निशानी थी ।
बुन्देले हरबोलोंके मुँह
हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी ।।

१५

वर्षा-वर्णन

[मौलाना हाली]

[आपका पूरा नाम है मौलाना अल्ताफ़हुसैन हाली। आपका जन्म पानीपतमें सन् १८२५में हुआ। आपने उर्दू साहित्यको इश्क और शराबमें से छुड़ाया। समाजकी उस वक़्तकी परिस्थितिकी ओर आपने कवियोंका ध्यान खींचा और सामाजिक मसलोंको हल करनेके लिये अपनी कविताका उपयोग किया। आप बड़े नाज़ुक दिलके थे। समाजके, खासकर औरतोंके दुःखोंसे आप बहुत बेचैन रहते थे। आपकी मृत्यु सन् १९१४में हुई।

आपकी मशहूर किताबें ये है—मुक़दमा शेरोशायरी, मुसद्दस हाली, दीवान हाली, चुपकी दाद, मुनाजाते बेवा वगैरा।]

कल शाम तलक तो थे यही तौर।
पर रात से है समाँ कुछ और ॥१॥
पुरवाकी दुहाई फिर रही है।
पछवासे खुदाई फिर रही है ॥२॥
बरसातका बज रहा है डंका।
इक शोर है आस्माँ पै बरपा ॥३॥
है अब्रकी फ़ौज आगे आगे।
और पीछे हैं दलके दल हवाके ॥४॥
हैं रंग बरंग के रिसाले।
गोरे हैं कहीं कहीं हैं काले ॥५॥
है चर्ख पै छावनी सी छाती।
एक आती है फ़ौज एक जाती ॥६॥

जाते हैं मुहिम पै कोई जाने ।
हमराह हैं लाखों तोपखाने ॥७॥

तोपोंकी है जब बाढ़ चलती ।
छाती है ज़मीनकी दहलती ॥८॥

मेंहका है ज़मीन पर दड़ेड़ा ।
गर्मीका डुबो दिया है बेड़ा ॥९॥

बिजली है कभी जो कौंद जाती ।
आंखों में है रोशनी सी आती ॥१०॥

घनघोर घटायें छा रही हैं ।
जन्नतकी हवायें आ रही हैं ॥११॥

कोसों है जिधर निगाह जाती ।
क़ुदरत है नज़र ख़ुदाकी आती ॥१२॥

सूरजने नक़ाब ली है मुंह पर ।
और धूपने तह किया है बिस्तर ॥१३॥

बाग़ोंने किया है गुस्ले सेहत ।
खेतोंको मिला है सब्ज़ खिलअत ॥१४॥

सब्ज़े से कोहो दश्त मामूर ।
है चार तरफ़ बरस रहा नूर ॥१५॥

बटिया है न है सड़क नमूदार ।
अटकलसे हैं राह चलते रहवार ॥१६॥

है संगो हजरकी एक वर्दी ।
आलम है तमाम लाजवरदी ॥१७॥

फूलोंसे पटे हुए हैं कुहसार ।
दूल्हासे बने हुए हैं अशजार ॥१८॥
पानीसे भरे हुए हैं जल थल ।
है गूंज रहा तमाम जगल ॥१९॥
करते हैं पपीहे पीहो ।
और मोर चिंघाड़ते हैं हर सू ॥२०॥
कोयलकी है कूक जी लुभाती ।
गोया कि है दिलमें पैंठी जाती ॥२१॥
मेंढक जो हैं बोलने पै जाते ।
संसारको सर पै हैं उठाते ॥२२॥
हैं शुक्रगुजार तेरे बरसात ।
इन्साँ से लेके ता जमादात ॥२३॥
दुनियाँ में बहुत थी चाह तेरी ।
सब देख रहे थे राह तेरी ॥२४॥
दरिया तुझ बिन सिसक रहे थे ।
और बन तेरी राह तक रहे थे ॥२५॥
दरियाओंमें तूनें डाल दी जाँ ।
और तुझसे वनोंको लग गयी शाँ ॥२६॥
जिन झीलोंमें कल थी ख़ाक उड़ती ।
मिलती नहीं आज थाह उनकी ॥२७॥
दौलत जो जमीनमें थी मखफ़ी ।
आगे तेरे उसने सब उगल दी ॥२८॥

जाते हें मुहिम पै कोई जाने ।
हमराह हें लाखों तोपखाने ॥७॥

तोपोंकी है जब बाढ़ चलती ।
छाती है ज़मीनकी दहलती ॥८॥

मेंहका है ज़मीन पर दड़ेड़ा ।
गर्मीका डुबो दिया है बेड़ा ॥९॥

बिजली है कभी जो कौंद जाती ।
आंखों में है रोशनी सी आती ॥१०॥

घनघोर घटायें छा रही हैं ।
जन्नतकी हवायें आ रही हें ॥११॥

कोसों है जिधर निगाह जाती ।
क़ुदरत है नज़र ख़ुदाकी आती ॥१२॥

सूरजने नक़ाब ली है मुंह पर ।
और धूपने तह किया है बिस्तर ॥१३॥

बाग़ोंने किया है ग़ुस्ले सेहत ।
खेतोंको मिला है सब्ज़ ख़िलअत ॥१४॥

सब्ज़े से कोहो दश्त मामूर ।
है चार तरफ़ बरस रहा नूर ॥१५॥

बटिया है न है सड़क नमूदार ।
अटकलसे हें राह चलते रहवार ॥१६॥

है संगो शजरकी एक वर्दी ।
आलम है तमाम लाजवरदी ॥१७॥

फूलोंसे पटे हुए हैं कुहसार ।
दूल्हासे बने हुए हैं अशजार ॥१८॥
पानीसे भरे हुए हैं जल थल ।
है गूंज रहा तमाम जंगल ॥१९॥
करते है पपीहे पीहो ।
और मोर चिंघाड़ते हैं हर सू ॥२०॥
कोयलकी है कूक जी लुभाती ।
गोया कि है दिलमें पैठी जाती ॥२१॥
मेंढक जो हैं बोलने पै जाते ।
संसारको सर पै है उठाते ॥२२॥
हैं शुक्रगुजार तेरे बरसात ।
इन्सां से लेके ता जमादात ॥२३॥
दुनियां में बहुत थी चाह तेरी ।
सब देख रहे थे राह तेरी ॥२४॥
दरिया तुझ बिन सिसक रहे थे ।
और बन तेरी राह तक रहे थे ॥२५॥
दरियाओंमें तूने डाल दी जां ।
और तुझसे बनोंको लग गयी शां ॥२६॥
जिन झीलोंमें कल थी खाक उड़ती ।
मिलती नही आज थाह उनकी ॥२७॥
दौलत जो जमीनमें थी मखफ़ी ।
आगे तेरे उसने सब उगल दी ॥२८॥

थे रेतके जिस ज़मीं पै अम्वार ।
है बीरवहोटियों से गुलनार ॥२९॥
ज़ोरों पै चढ़ा हुआ है पानी ।
मौजों की हैं सूरतें डरानी ॥३०॥
नावें कि हैं डगमगा रही हैं ।
मौजों के थपेड़े खा रही हैं ॥३१॥
मल्लाहों के उड़ रहे हैं औसाँ ।
वेड़ेका खुदा ही है निगहवाँ ॥३२॥
मँझधार की रौ भी ज़ोर पर है ।
मछलीको भी जानका खतरा है ॥३३॥

१६

खुदाकी तारीफ़

तारीफ़ उस खुदाकी जिसने जहाँ बनाया
कैसी ज़मी बनाई क्या आसमाँ बनाया
पैरों तले विछाया क्या खूब फ़र्श खाकी
और सरपे लाजवर्दी इक सायवाँ बनाया
मिट्टीसे बेलबूटे क्या खुशनुमाँ उगाये
पहनाके सब्ज़ खिल्अत उनको जवाँ बनाया
खुशरंग और खुशबू गुलफूल हैं खिलाये
इस खाकके खँडरको क्या गुलसिताँ बनाया

मेवे लगाये क्या क्या खुश ज़ायका रसीले
चखनेके जिनके हमको शीरींदहाँ बनाया
सूरजसे हमने पाई गरमी भी रोशनी भी
क्या खूब चश्मा तूने ए मेहरबाँ बनाया
सूरज बनाके तूने रौनक़ जहाँको बख्शी
रहनेको ये हमारे अच्छा मकाँ बनाया
प्यासी ज़मीके मुँहमें मेंहका चुवाया पानी
और बादलोंको तूने मेंहका निशाँ बनाया
यह प्यारी प्यारी चिड़ियाँ फिरती हैं जो चहकती
कुदरतने तेरी इनको तस्बीहख्वाँ बनाया
तिनके उठा उठाकर लाई कहाँ कहाँ से
किस खूबसूरतीसे यह आशियाँ बनाया
ऊँची उड़े हवामें बच्चोंको पर न भूलें
उन बेपरोंका उनको रोज़ीरसाँ बनाया
क्या दूध देनेवाली गायें बनाई तूने
चढ़नेको मेरे घोड़ा क्या खुशइना बनाया
रहमतसे तेरी क्या क्या हैं नेमतें मुयस्सर
इन नेमतोंका मुझको क्या क़द्रदाँ बनाया
आबेरवाँके अन्दर मछली बनाई तूने
मछलीके तैरनेको आबेरवाँ बनाया
हर चीज़से है तेरी कारीगिरी टपकती
यह कारखाना तूने कब रायगाँ बनाया

(अंजुमन तरक़्क़ी-ए-उर्दूके सौजन्यसे)

१७

तुकारामके अभंग

[तुकाराम]

[संत तुकारामका जन्म १६०८में पूनाके पास देहूगाममें हुआ था। आपकी गिनती देशके बड़े बड़े सन्तोंमें होती है। इनके पिता इन्हें व्यापारमें डालना चाहते थे, मगर यह उनके पंजेमें नहीं आये। आपने हिन्दीमें भी अभंग लिखे हैं।

महाराष्ट्रमें आपके अभंग घर घरमें गाये जाते हैं।]

राम राम कह रे मन, और सुं नहीं काज।
बहुत उतारे पार आगे, राखी तुकाकी लाज ॥
लोभीके चित धन बैठे, कामनि कै चित काम।
माताके चित पूत बैठे, तुकाके मन राम ॥
तुका बड़ा न मानूं, जिस पास बहु दाम।
बलिहारी उस मुखकी, जिसते निकसे राम ॥
तुका प्रीत राम सुं, तैसी मीठी राख।
पतंग जाय दीप पर रे, करे तनकी खाक ॥
कहे तुका जग भूला रे, कह्या न मानत कोय।
हात परे जब कालके, मारत फोरत डोय ॥
तुका सुरा नहीं शब्दका, जहाँ कमाई न होय।
चोट साहे घनकी रे, हीरा निबरे तोय ॥
चितसुं चित जब मिले, तब तन भंडा होय।
तुका मिलना जिन्हसुं, ऐसा विरला कोय ॥

कहे तुका भला भया, हुआ संतनका दास ।
क्या जानूं केते मरता, न मिटती मनकी आस ।।
जात हीन, बुद्धि हीन, कर्म हीन मेरा ।
सारी लाज छोड़ बना, हूँ में दास तेरा ।।
आओ मेरे मात पिता, पंढरीके राया ।
तेरे बिना थक गया, निर्बल हो काया ।।
दीनानाथ दीनबंधु, तुझे सोहे नाम ।
पतितोंको उवारना, तेरा ही है काम ।।
भले खड़े ईंट पै हो, कटी राख हाथ ।
तुका कहे यही ध्यान, रहे मेरे साथ ।।

१८

संतवाणी

[यहां कबीर, तुलसी, नानक, एकनाथ वगैरा की कुछ प्रसादी दी गई है। ये सब भक्तकवि सारे देशमें आज सैकड़ों साल हो जाने पर भी मशहूर हैं। ये सब अलग अलग प्रान्तके रहनेवाले थे। मगर अपने जीवन और कवितासे सारे देशमें मशहूर हो गये हैं।]

मोको कहा ढूंढ़े बंदे, मैं तो तेरे पासमें
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलासमें ।
अल्ला एक नूर उपजाया, ताकी कैसी निंदा ?
वही नर ते सब जग कीया, कौन भला को मन्दा ।

दयाभाव हिरदै नहीं, ज्ञान कथै बेहद;
ते नर नरकहि जाहिंगे, सुनि-सुनि साखी-सब्द ।
सिंहोंके लेहँड़े नहीं, हंसोंकी नहिं पाँत;
लालोंकी नहिं बोरियाँ, साधु न चलै जमात ।
कथनी मीठी खाँड़-सी, करनी विषकी लोय;
कथनी तजि करनी करै, विषसे अमरत होय ।

(कबीर)

तुलसी साथी विपतके विद्या विनय विवेक ।
साहसु सुकृत सत्यव्रत राम भरोसो एक ॥
आवत ही हर्ष नहीं नैनन नहीं सनेह ।
तुलसी तहाँ न जाइये कंचन बरसे मेह ॥
रैनको भूषन इन्दु है दिवसको भूषन भान ।
दासको भूषन भक्ति है भक्तिको भूषन ज्ञान ॥
ज्ञानको भूषन ध्यान है ध्यानको भूषन त्याग ।
त्यागको भूषन शांति पद तुलसी अमल अदाग ॥

पर उपदेस कुसल बहुतेरे
जे आचरहिं ते नर न घनेरे ।

(तुलसीदास)

दया-धर्म हिरदै बसै, बोलै अमरत बैन;
तेई ऊंचे जानिये, जिनके नीचे नैन ।
कुंजर चींटी पशू नर, सबमें साहिब एक;
काटै गला खुदायका, करै सूरमा लेख ।

(मलूकदास)

मसजिद ही में जो अल्ला खुदा,
तो और स्थान क्या खाली पड़ा?
चारों वक्त नमाजों के,
तो और वक्त क्या चोरोंके?
'एका' जनार्दन का बंदा,
जमीन-आसमान भरा खुदा।

(एकनाथ)

एकै पवन, एक ही पानी, एक ज्योति संसारा;
एक हि खाक गढ़े सब भाँड़े, एक हि सरजनहारा।

(गरीबदास)

कोई राम, कोई अल्लाह सुनावै,
पै अल्लाह-रामका भेद न पावै।

(दादूदयाल)

क्या बकरी क्या गाय है, क्या अपना जाया,
सबका लोहू एक है, साहिब फरमाया।
पीर पैगम्बर औलिया सब मरने आया,
नाहक जीव न मारिये पोषन को काया।

(नानक)

जोग-जग्य तें कहा सरै तीरथ-व्रत-दाना,
ओसै प्यास न भागिहै भजिये भगवाना।

(नामदेव)

कृष्ण करीम, रहीम राम हरि, जब लगि एक न पेखा,
वेद कुतेब कुरान पुराननि, तब लगि भ्रम ही देखा।

(रैदास)

कठिन शब्दोंके अर्थ

[नोट : शब्दोंके अर्थ गुजराती और हिन्दीमें दिये गये हैं।]

गद्य-विभाग

१. कठोर कृपा

खानदान — कुटुम्ब; कुल, वंश

जायदाद — मिल्कत; संपत्ति

हुनरमंद — कुशल, कसबी; निपुण, कलाकुशल

खानदानी इज्जत — कुळनी आबरू; कुलकी प्रतिष्ठा

ज़ेवर–घरेणा, दागीना, गहने

दाम — किंमत; क़ीमत, मूल्य

लाले पड़ना — कोई चीज माटे झखवुं; किसी चीजके लिये तरसना

सहिजन—सरगवो;मुनगा,शोभाजन

सन्नाटा — चुपकी, निरव शांति; खामोशी

कुंजड़ी — काछियण, वकालण; साग-सब्जी बेचनेवाली

गुजर — गुजारो, भरणपोषण; निर्वाह, गुजरान

बहाना लेना — बहानुं काढवुं; किसी बातसे बचनेके लिये झूठ बोलना

दावत—मिजबानी; भोज, खानेका बुलावा

थालियाँ सजाना—थाळी पीरसवी; थाली परोसना

सधा हुआ — साधेल, आगळथी तैयार करेल; तैयार

ताड़ जाना — पामी जवुं, रहस्यमय वात जाणी लेवी; भाँपना किसी छिपी बातको जान लेना

फ़ाका-कशी — उपवास; अनशन

बरामदा — ओसरी; ओसारा दालान

दबे पैर—बिल्ली पगले, खूब धीमे पैरकी आवाज किये बिना

टोकरी — टोपली, सूंडली; बाँसका बना हुआ छोटा बरतन,छाबड़ी

मुनाफा—नफो, फायदो; नफ़ा, ला[भ]

चारपाई — खाटलो; खाट, छो[टा] पलंग

खर्राटा — ऊंघमां थतो नाक[नो] अवाज; नींदमें नाकमें[से] निकलती आवाज

दूरन्देश — लांबी नजरवाळो, ऊंडो विचार करनार; भविष्यका विचार करनेवाला, दीर्घद्रष्टा
बरदाश्त करना — खमवुं, सहन करवुं ते; सहन करना
आहट — पगरव; पाँवकी चाप, वह शब्द जो चलनेसे होता है
पेश्तर — पहेलां; पहले, पूर्व
गायब — गूम, अदृश्य; अलोप, अदृश्य
बुजुर्ग — वडील; बड़ा, वृद्ध
मातम — मरणनो शोक के रोवुं; किसीकी मौतके बादका रोनाधोना
नामिटा — नख्खोदियो; एक प्रकारकी गाली
दावादार — दावो करनार, अपना हक जतानेवाला
तरस आना — दया आववी; किसी पर दया आना
पुश्तैनी — वडीलोपार्जित, वंश-परंपरागत; दादा-परदादाके समयका
बस्ती — वस्ती, प्रदेश; आबादी, जनपद
धनी-मानी — धनवान अने प्रतिष्ठित;धनवान और आबरूदार
कद्रदाँ — कदर जाणनार; क़दर बूझनेवाला
नेकनीयती — भलाई, प्रामाणिकता
नेक-क़दम — सारां पगलांनो, शुकनवाळो
खासी — सारी रीते; अच्छी तरह
खातिरदारी — परोणागत; मेहमान-नवाजी
काहिली — आळस; आलस
बुजदिल — कायर; पुरुषार्थहीन

२. हीरा और कोयला

सीनाजोरी — जबरदस्ती
गोरा-चिट्टा — बहु रूपाळो; खूब गोरे रंगका
काला-कलूटा — खूब काळो, काळो काळो मेश जेवो; बहुत काले रंगका
देन — भेट; बख्शिश
दानव — राक्षस; दैत्य
विदित — जाण, खबर; मालूम
असुर — दानव; राक्षस
निन्दा — टीका, वगोवणी; ऐबजोई
छलना — दगो देवो; धोखा देना, दगा देना
दार्शनिकता — फिलसुफी, तत्त्वज्ञान
करनी — करणी, काम; करतूत, कर्म
घमण्ड — गर्व; अभिमान
न सही — खेर, कंई नहीं (बोलवानी एक रीत); चाहे न हो

आँखें खुल जाना — आंख ऊघडवी, परिस्थितिनु भान थवु; सत्य हक़ीकतका खयाल होना

तबीयत हरी हो जाना — मन खुश थई जवुं; प्रसन्न होना

कंकड़ — कांकरो; पत्थरका छोटा टुकड़ा

खान — खाण, खानि, वह स्थान जहांसे धातु, पत्थर आदि खोदकर निकाले जाते हैं

हीरा-तराश — हीराने कापनार, पहेल-पासा पाडनार; हीरेको काटनेवाला

समस्त — बधाय; सबके सब

शून्य — रहित, विनानु; के बग़ैर

आभा — प्रकाश; ज्योति, रोशनी

गंगा गये गंगादास, जमुना गये जमनादास — तकवादी; अवसरवादी

राज-राजेश्वर — राजाधिराज, राजाओना राजा; महाराजा, राजाओंके राजा

आभूषण — घरेणां; गहने, जेवर

तहस-नहस — नष्ट, खेदानमेदान; बरबाद

धोका — भ्रम; भुलावा

वश — काबू; कब्ज़ा

सहज रमणीयता — स्वाभाविक सुन्दरता; कुदरती सौंदर्य

पानी फेरना — पाणी फेरवुं, बगाडवुं; नष्ट करना, मटिया-मेट करना

राजकोष — सरकारी तिजोरी; सरकारी खज़ाना

मारा-मारा फिरना — दुःखी स्थितिमां आमतेम रखडवुं; दुर्दशामें इधर-उधर घूमना

निधि — भंडोळ; खज़ाना

विनिमय — लेवडदेवड; लेनदेन, आदान-प्रदान

टके सेर — तद्दन सस्तुं; एकदम सस्ता

क्या खूब — वाह!

बन्दी — केदी; क़ैदी

बलिहारी — विशिष्टता; ख़ूबी

दर-दर — घरे घरे; दरवाज़े दरवाज़े, घर घर

पंजाब केसरी रणजीतसिंह — पंजाबके मशहूर सिक्ख राजा रणजीतसिंह जो सन् १७८० से १८३९ में हो गये। वे अपनी न्यायप्रियता, प्रजावत्सलताके कारण सबके प्यारे थे। उन्हें धन-दौलतका जरा भी मोह न था।

जूती — स्त्रियोंका जूता

छोटे मुंह बड़ी बात करना — नाने मोंए मोटी वात करवी,

पोताना अधिकार वगरनी वात करवी; अपनी योग्यतासे अधिक कहना

उत्कर्ष — उन्नति; प्रगति, तरक़्क़ी

विभूति — राख, संपत्ति; भस्म, ऐश्वर्य (दोनों अर्थोंमें)

वज्र — वहुत सख्त, अत्यंत कठोर

बातमें आना—कोईना व्यक्तित्वथी अंजावुं; किसीके प्रभावमें आना

चेताना — चेतववुं; सूचना देना

शीघ्र — तुरत; जल्दी

पूछ न हो—कोई गणत्री न रहेवी; कुछ बिसात न रहना, क़ीमत न रहना

ऊबड़-खाबड़—खाड़ा टेकरा वाळो; गढ़ों और टीलोंवाला

टेढ़ा-मेढ़ा — वांकोचूंको; सर्पाकार, जो सीधा न हो

निर्दिष्ट — नक्की करेल; निश्चित

पद त्याग करना — पोतानुं स्थान छोडवुं; अपना स्थान-अधिकार छोड़ना

अनुज—नानोभाई(पछीथी जन्मेल); छोटा भाई

दैवगति — कर्म, भाग्यनी चाल; नसीब, किस्मत

अग्रज — मोटो भाई; (पहेलो जन्मेल); बड़ा भाई

घटना — सत्य बनाव; हक़ीकत

पारदर्शी — आरपार जोई शके के. शकाय तेवुं; जिससे आरपार देखा जाता है, जो आरपार देख सकता है

अन्ध-हृदय — हैया सूनो; अज्ञानी

असीसना — आशीर्वाद आपवा; आशिष देना, दुआ देना

३. दुनिया कामसे चलती है

अक्सर — घणुं करीने, मोटे भागे; प्राय:

छात्र — शिष्य, विद्यार्थी

तरुणाई — यौवन, जवानी

हट्टा-कट्टा—हृष्ट-पुष्ट; मोटा-ताजा

छैलापन—छेलबटाऊपणुं; मोहकता, बाँकपन, बनाठनापन

राज — कडियो; मेमार, मकान बनानेवाला कारीगर

दिमाग —मेजु, समजशक्ति; बुद्धि, मानसिक शक्ति

तरक़्क़ी — उन्नति, गति

उपेक्षा — घृणा, तिरस्कार, लापरवाही

किताबी — पुस्तकियुं; किताबके आधारका, जो व्यवहारमें न लाया गया हो

अलबत्ता—अलबत्त; बेशक, नि:शंक

लगन — लगनी, प्रेम; लगाव, धुन

कूवत — ताकत, शक्ति, बल
बदौलत — कृपाथी, कारणथी; द्वारा, कृपासे
फूट — भेद; वैर, विरोध
गौर — चिंतन, ध्यान; सोच-विचार, खयाल
तबदीली — फेरफार; परिवर्तन
तरीका – रीत, पद्धति, ढंग

४. अब्बूखाँकी बकरी

बस्ती — रहेठाण; रहनेका मुकाम
नस्ल — जात; वंश
भेड़िया — वरु; कुत्ते जैसा भयकर मांसाहारी पशु
मिजाज — स्वभाव, दिमाग
दाम — क़ीमत
खतरा — भय, डर
कमबख्त — कमनसीब, दुर्भागी
बेबकरी — बकरी वगर; बिना बकरीके
तनहाई — एकांत; सूनापन
दफा — वार, वखत; बार, वक़्त
हिल जाना—हळी जवु, मन लागवु; घनिष्ठ संबंध हो जाना
रुख — ध्यान
आबनूस—अबनूस, सीसम जेवु एक जातनु लाकडु; एक प्रकारकी शीशम जैसी काली लकड़ी
तराशना — कडारवु, कोतरवुं; काटना, कतरना

आशिक़ — प्रेमी
तंग — सांकडुं; छोटा, सँकरा
इन्तज़ाम — प्रबंध, व्यवस्था
खासा जमाना—सारो एवो वख्त काफी वक़्त
यकीन — विश्वास; भरोसा
चारदीवारी — वाडो, चार बाजुथी बांधेल आंगणुं; अहाता, परकोटा
ध्यान बँट जाना — भूली जवुं; भूल जाना, विस्मरण हो जाना
जुगाली — वागोळवु ते; पागुर, चौपायोंकी चारा चबानेकी क्रिया
दास्तान — कथा; क़िस्सा, कहानी
निहायत — खूब, बेहद
घुने दाने–धनेडावाळा दाणा; घुन लगे हुअे दाने (घुन — एक प्रकारका जंतु जो अनाज को लगता है।)
दबोचना—गळेथी दबाववुं; गलेसे पकड़ना
अहसान फरामोश — कृतघ्न, नमकहराम
सेवती — सफेद गुलाब
फाँदना — ओळंगवुं, ठेकवुं; कूदकर लाँघना
हेच—नजीवुं, नकामु; तुच्छ, नाचीज

दोपहर ढलना — मध्याह्न ऊतरवा लागवो; दुपहरीका समय पूरा होना
गल्ला — टोळुं; दल, झुंड
खातिर-तवाज़ा — आगतास्वागता; स्वागत
टप्पा — टपकां; धब्बे
पाबंदी—नियमितता; नियम-बद्धता
कुहरा — धुम्मस; धुंध
दुश्मन-जान — भयंकर दुश्मन
जीमें कुछ आना—मन थवु; इच्छा होना
इत्मीनान — भरोसो; विश्वास
बिसात — विसात, गणत्री; गिनती, हिसाब
रोशनी-सी — प्रकाश जेवु; उजाले जैसा
मुअज्जन — बांग पोकारनार; बाँगी, बाँग पुकारनेवाला
बेदम — निश्चेष्ट, निर्जीव
लिबास — पहेरवेश, कपड़ां; कपड़े, पहिनावा
सुर्ख़ — लाल

५. जेब्रा

चटकीला — चमकदार; चमकीला, जिसका रंग फीका न हो
धारियाँ — चट्टापट्टा, लीटीओ; लकीरें, रेखाएँ
खुर — खरी; सींगवाले पशुओंके पैरकी टाप जो बीचमें फटी होती है
बाघ-घोड़ा — वाघना जेवो घोडो; बाघ जैसा घोड़ा
सुडौल — सुडोळ; सुगठित शरीरवाला
गठन — बंधारण (शरीरनुं); बनावट (शरीरकी)
केपकालोनी — दक्षिण अफ्रीकाका एक प्रान्त
ऑरेंज नदी — दक्षिण अफ्रीकाकी एक नदी
श्वेत — सफेद
पार्श्ववर्ती — पृष्ठभूमिमां रहेनार; पीछे रहनेवाला
विलक्षणता — विचित्रता, विशेषता
सदृश — ना जेवा; की तरह
सहसा—एकदम, एकाएक; यकायक
छन-छनकर — गळाईने; छेदमें से निकलकर
भुनगा — पतंगिया जेवु जीवडुं; कीड़ा, पतंगा
समता — समानता
पर्वतीय — पर्वतनुं, पर्वतने लगतु; पर्वतका, पर्वत-संबंधी
धावा मारना — हूल्लो करवो; हमला करना

चौकन्ना—सावधान; सजग, होशियार

देखते ही बनता है — जोवा जेवुं थाय छे; देखने लायक होता है

चेष्टा — प्रयत्न; कोशिश

उठ जाना — मरी जवु, नाश थवो; खतम हो जाना, मर जाना

भरसक — यथाशक्ति

निन्दित — खराब; घृणित

६. करमसदसे लंदन

मनगढ़त—कपोल-कल्पित, उपजावी काढेल; बेबुनियाद

पहाड़ा — आकनो पाडो

प्रकृति — स्वभाव

पल्लेमें बांधना — मनमां गांठ-वाळवी, हृदयमां उतारवु; गिरहमें बांधना, हमेशाके लिये याद रखना

उधेड़बुन—विचारणा; सोचविचार

पैरा — कडिका, फकरो; पैरेग्राफ

जुर्माना — दंड

तसल्ली — धीरज, आश्वासन

आखिरकार — छेवटे; अन्तमें

खानदान — कुल, कुटुम्ब, वंश

चुनौती — ललकार, आह्वान

मिट्टी पलीद होना — दुर्दशा थवी; दुर्दशा होना

मुराद — इच्छा, अभिलाषा

शाही — बादशाही

अलावा — सिवाय; अतिरिक्त

पहलू — पक्ष; दृष्टिकोण

डिस्ट्रिक्ट प्लीडर — जिल्लाना वकील; जिलेके वकील

कबाड़ी — भाग्या-तूटया मालनो वेपारी; टूटी-फूटी, सड़ी-गली चीजें बेचनेवाला

विधुर — विधुर; जिसकी पत्नी मर गई हो ऐसा पुरुष

उद्दण्ड — उद्धत

मासूम — निर्दोष

दत्तचित्त — एकाग्र

दाँतो तले उँगली दबाना—आश्चर्य-चकित थई जवुं; दंग रह जाना, अचरजमें आना

नहरवा — वाळानो रोग; एक प्रकारका रोग जिसमें एक घावमें से डोरीकी तरहका कीड़ा धीरे धीरे निकलता रहे

७. दया

नींव — पायो; बुनियाद

बल्ली — लाकडानी नानी वळी; शहतीर, लकड़ीका डंडा

खपत—खपत, माग; मालकी बिक्री

बुनना—वणवु; बनाना, तैयार करना

ताना-बाना — ताणोवाणो, गूथणी; बनावट, रचना

जुलाहा — वणकर; कपड़ा बुनने-वाला

दरकिनार — अलग, दूर

औघट घाटी — भयंकर खीण; दुर्गम स्थान

तुर्रा — छोगु; कलगी, गोशवारा

परिखा — खाई, खंदक

महल उठाना — महेल जेवो माळो तैयार करवो; महल जैसा घोंसला तैयार करना

सींका — ताड-मूज वगेरेनी पातळी डाळखी, तणखलुं; किसी घासका महीन डंठल, तिनका

टहनी — डाळी; शाख, डाली

चार्ज — हवालो; कब्जा

दिलचस्प — मनपसन्द, सुन्दर; मनोहर, चित्ताकर्षक

तराना — गीतनी लय; एक प्रकारका चलता गाना

टेढ़ी खीर — कठण काम; मुश्किल, कठिन काम

सूराख — छिद्र, छेद

शमा — मीणबत्ती; मोमबत्ती

शमादान — मीणबत्ती सळगावीने राखवानुं साधन; वह साधन जिसमें मोमबत्ती रखकर जलाते हैं

आमोद-प्रमोद — आनंदप्रमोद; हँसी-खुशी

गोरैया — एक प्रकारनुं जलपक्षी

ठोड़ी — हडपची; चिबुक, दाढ़ी

८. लोहारकी एक

लोहारकी एक — सोनीना सो घा, लोहारनो एक; सौ चोट सुनारकी, एक चोट लोहारकी

पौ फटना — प्रातःकाल होना

करवट — पडखुं, पासुं; हाथके बल लेटनेकी क्रिया

आंखें लगना — ऊँघ आववी, आंख मळवी; नींद आना

दरवाजा पीटा जा रहा है — बारणुं जोरथी खखडाववामां आवे छे; दरवाजा जोरसे खटखटाया जा रहा है

छटा हुआ — बदमाश

पिकनिक पार्टी — उजाणी; वन-भोजन

कमी — उणप, त्रुटि; कमजोरी

हामी भरना — हा पाडवी, तैयार थवुं; हाँ कहना, सम्मति देना

दर्जनके पार — डझन ऊपर; १२ से ऊपर

जिमि . . . विचारी — जैसे दाँतोंके बीच बेचारी जीभ (होती है वैसे)

निर्दिष्ट — निश्चित

सकोरा — सकोरुं; मिट्टीका कटोरा, कसोरा

मट्ठा — छाश; छाछ
सुंघनी— छींकणी; तंबाकूके पत्तेका बारीक चूर्ण जो सूंघा जाता है
भुरकना —भभराववुं; भुरभुराना, छिड़कना
नाराजगी — नाखुशी; नापसन्दगी
खैरियत — खेरियत, राजीखुशी; क्षेम-कुशल
बादामी—बदामी रंगना; बादामके रंगका
पोतना—चोपडवु, लीपवु, चुपड़ना, लीपना
हरकत — तोफान, मस्ती; दुष्ट व्यवहार, शरारत
टिन — डब्बो; डिब्बा
मांड — भातनु ओसामण; पकाए चावलमें से निकला हुआ पानी
चन्दन . . . देता है — किन्ही दो शीतल पदार्थोके घिसनेसे भी अग्नि पैदा हो जाती है। जैसे चंदनके पेड़ आपसमें घिसते हैं तो आग पैदा हो जाती है। शांत आदमी भी बहुत तंग किये जाने पर क्रोधित हो जाता है।
गढ़ना-छीलना — घडवु, गवुं बनाववुं; गर्जन करना, नई चीज बनाना

आजमाइश — उपयोग, प्रयोग, अमल
होनहार — थनार, भावी; जो होनेको है
चीख—चीस, बूम; दुःखकी पुकार
काठ मार जाना — आश्चर्यचकित थई जवुं; दंग रह जाना, ठगा-सा रह जाना
हाथ-पांव फूल जाना—मुझाई जवुं, गभराई जवु; घबरा जाना
सरपट दौड़ — पूरपाट दोड; तेज दौड़
सिविल सर्जन — सरकारी दवाखानेका मुख्य डॉक्टर
घोर श्रान्ति — अतिश्रम, खूब थाक; खूब परिश्रम, थकान
मृतप्राय — मरवानी अणी उपर आवेल; मुर्देके जैसा
धौंकनी — धमण; आग फूंकनेकी लोहारकी फूंकनी
निहायत — अत्यन्त खूब
शरारतन् —दुष्टतायी; दुष्ट हेतुसे
आँखोंसे खा डालना — बहु क्रोधित थवु; बहुत गुस्सा करना
यार लोग — दोस्त, मित्र
निबटना—मायाकूट करवी, निवेडो लाववो; झगड़ा करना, झगड़ना

९. खुशामद

घुलमिल जाना — हळीमळी जवुं; एकरूप, एकरस हो जाना
मिथ्या प्रशंसा — खोटां वखाण; झूठी प्रशंसा
ठकुर-सुहाती — लल्लोचप्पो, खुशामद
प्रयोजन — हेतु, उद्देश
मीठी — मीठी; रसीली, मधुर
करामाती — सिद्ध; चमत्कारी
बन्दा — सेवक; गुलाम
आमद — आर्थिक प्राप्ति, लाभ
गुलछर्रे — अनुचित भोगविलास या स्वेच्छाचार
यार — दोस्त, मित्र
काहेमें — शेमां; किसमें
कड़ा मिजाज — उग्र स्वभाव; सख्त स्वभाव
रूखड़ — शुष्क, नीरस
बयार — हवा, पवन
हातिम — चतुर आदमी, उस्ताद, विशेषज्ञ
लैली — लयला; मजनूकी प्रेमिका
निर्बुद्धि — अकलहीन
निकम्मा — नक्काम; विना कामका
अकुलीन — खराब कुळनो; नीचे कुलका
तिलांजलि देना — छोडवुं; छोड़ना

मीनमेख — शक, संदेह
किस खेतकी मूली — कई वाडीनो मूळो; नगण्य, नाचीज
मोम — मीण, एक चिकना पदार्थ जिससे मोमबत्ती बनती है
दुनियादार — व्यवहारचतुर
उदरभर — स्वार्थी, मात्र पोतानुं पेट भरनार; सिर्फ़ अपना पेट भरनेवाला
रसायन — रसायण; औषध, दवा
चतुराक्षरी — चार अक्षरनो बनेल; चार अक्षरोंका बना हुआ
छार — धिक्कार; लानत
सद्गुणागार — सद्गुणोंका भण्डार
मट्टी ख्वार — खराब हालत; दुर्दशा
मणि — हीरा, रत्न
काठ — लाकडुं; लकड़ी
कुन्दा — लाकडानुं डीमचुं; लकड़ीका विना चिरा हुआ मोटा टुकड़ा
बार पचै . . . कछु न बसाय — बाल, मक्खी और पत्थर चाहे कोई पचा ले (लेकिन खुशामदको पचाना कठिन है)। जो खुशामदको भी पचा लेता है उस पर किसीका वश नहीं चल सकता।
घात — निशान

लच्छेदार — भ्रामक
बहुधा — विशेष करके
एक लेखे—एक रीते; एक दृष्टिसे
नखरा — चाळा; हावभाव
उरद—अडद; एक प्रकारकी दाल
ऐंठ जाना — रीसाई जवुं, अकड़ जाना, नाराज होना
उजड्ड — गमार; गँवार
कुटिल — दुष्ट; खराब
झिड़की — धमकी; डाँट
कुबात — खराब बात
सब तज हर भज — बधु छोडीने हरिने भजो, सब कुछ छोड़कर हरिका भजन करो
भोजपत्र — वल्कल; एक वृक्षकी छाल जो पहननेके काममें ली जाती थी
आला — श्रेष्ठ, अुत्तम
तमीज — विवेक, सभ्यता
मठमुल्ला — थोथा पंडित

१०. स्वमानी — कबा गांधी

आयु — उमर
पौरुष — पुरुषत्व, उद्यम, साहस
तुलना — सरखामणी; मुकाबला
व्यवहार-पटुता—व्यवहार-कुशलता
तराई — खूब पाणीवाळी तळेटी; पानीसे भरपूर तलहटी
चित्ताकर्षक — चित्तने आकर्षे तेवुं; चित्तको आकर्षित करनेवाला
आय — आवक; आमदनी
भ्रष्टाचार—सड़ो; सड़ा, दुर्व्यवहार
अनुशासन—राजवहीवट, राज्य
कार्यदक्षता — कार्यकुशलता
परामर्श — सलाह
बागडोर — लगाम
बरबादी — नाश, विनाश
हस्तक्षेप — दखल
नौबत आना — प्रसंग आववो; वक्त, समय आना
प्रबंध — व्यवस्था
उलाहना — ठपका
प्रत्यक्ष — सीधो; सीधा
सर्वथा — तद्दन, बिलकुल
गल्ला — अनाज
नीलाम — लिलाम; बोली बोल कर बेचना
संतप्त — दुखी, चिन्तित
दरबारगढ़—दरबारगढ़; राजाकी कचहरी
बाध्य — बंधायेल; बँधा हुआ
मन मारकर रह जाना — मन मारीने बेसी रहेवुं; लाचार हो जाना
मध्यस्थता — लवादी; बीच-बचाव
शिकरम — शिगराम गाडी; एक प्रकारकी बंद गाड़ी जिसमें बैल जोड़े जाते हैं

उत्तरदायित्व — जवाबदारी; जिम्मेवारी
त्यागपत्र — राजीनामुं; इस्तीफा
अविचलित — निश्चल, अडिग
बहस — चर्चा, विवाद
दो टूक उत्तर देना — रोकडुं परखाववुं; खरा खरा जवाब देना
बीच बचाव — लवादी; मध्यस्थता

११. सुखवाद

परम — छेवटनुं; अंतिम, आखिरी
लक्ष — ध्येय, हेतु
उत्तेजना — उश्केरणी, आवेश; आवेग, जोश
सराहना — वखाणवुं; प्रशंसा करना
जातीय — जाति (स्त्री या पुरुष) संबंधी
अल्पजीवी — थोडुं जीवनार, जेनुं लांबुं आयुष्य न होय तेवुं; कुछ समय तक जिन्दा रहनेवाला
अभाव — खालीपणुं; कमी, सूनापन
तवारीख — इतिहास
हासिल करना — मेळववुं; प्राप्त करना
वजह — कारण
अत्यंताभाव — अत्यंत अभाव, बिलकुल अभाव

१२. आषाढ़का आकाश

निखरना — स्वच्छ होना, स्पष्ट होना
झिलमिलाना — चमकवुं, टमटमवुं; चमकना, टिमटिमाना
सुहावनी — सोहामणी; आकर्षक, लुभावनी
चौकन्ना — सावधान, जाग्रत, होशियार
एकाक्षी — (आंखें) काणु; एक आँखवाला
जूथ — समूह
डंक — डंख, विच्छूके शरीरका एक भाग
कुहरा — धुम्मस; धुंध
सटकर — अडीने, नजीक; नजदीक, छूकर
कोरी आँख — केवल आंख; नंगी आँख
बावजूद — छतांय; फिर भी
धुंधली — अस्पष्ट
श्रीगणेश — शुरुआत
तुरही — ब्यूगल; बिगुल
फबना — शोभवुं; खिलना, सोहना
मजा किरकिरा हो जाना — आनंद मार्यो जवो, रंगमां भंग पडवो; मजा चूर चूर हो जाना

१३. हिमालयके पार . . .

तिब्बत — टिबेट देश; हिमालय पार आया हुआ एक प्रदेश

ट्रांस — कोई प्रदेश के पर्वतनी वच्चे थईने जतो रस्तो; किसी मुल्क या पर्वतके बीच-मेंसे निकलता रास्ता
बमुश्किल — मुश्केलीपूर्वक; मुश्किलके साथ
तय करना — पसार करवु, ओळंगवु; पार करना
भिक्षु — संन्यासी, बौद्ध संन्यासी
आंखोंमें धूल झोंकना — आंखमां धूळ नाखवी, छेतरवुं; धोखा देना, अज्ञानमें रखना
उद्‌गमस्थान — उत्पत्तिस्थान, उद्भव स्थान
फिजूल — व्यर्थ; निकम्मा
येन केन प्रकारेण — गमे तेम करीने; किसी भी तरहसे
आहुति — बलिदान
झिझकना — अचकावु, खमचावु; संकोच करना, रुकना (शर्म या भयसे)
स्थित — वसेल, रहेता; टिका हुआ, जो रहता है
चोटी — टोच; शिखर
छेद — काणु, छिद्र
लामा — तिब्बतके बौद्धोंका धर्माचार्य
गुफास्थित — गुफामां रहेल; गुफामें रहनेवाला
निर्वाणपद — मुक्ति, मोक्ष
थूक्पा — एक प्रकारका भोजन
इर्द-गिर्द — आसपास; इधर उधर
नाता — रिश्ता, संबंध
ऊब जाना — कंटाळी जवु; किसी चीजके पुनरावर्तनसे मानसिक थकावट होना
मिन्नत — प्रार्थना; आजिजी
मंतव्य — हेतु, अभिप्राय
भलीभांति — सारी रीते; अच्छी तरहसे
जुलूस — सरघस; धूमधामकी सवारी
प्रतिपक्षी — विरोधपक्ष
याक — बैल जेवा पशु
कंडा — छाणु; उपला, जलानेका सूखा गोबर
उत्तरक्रिया — मृत्यु पछी करवामां आवती विधि; मौतके बाद जो धार्मिक क्रिया की जाती है वह
निषिद्ध — प्रतिबंधित
महापातक — भयंकर पाप
नितांत — छेक; बिलकुल
सदमा — आघात
मुस्तैद — तत्पर, सावधान
होमना — होमवुं; यज्ञमें किसी चीजकी आहुति देना
जनाजा — शब, जनाजो; अर्थी
तख्ती — तकती, चकती; छोटा तख्ता, लकड़ीका चोकोर टुकड़ा

लद्दाखी — लद्दाखका वतनी
ऊबड़-खाबड़—खाड़ा टेकरावाळो; गढ़ेवाला
हिमाच्छादित—बरफथी ढंकाएल; बर्फसे ढँका हुआ
नगाधिराज — हिमालय
श्वेत — सफ़ेद
हिमनदियाँ — बर्फ़की नदियाँ
दृष्टिगोचर — देखाय तेवुं; दिखाई देनेवाला
अलौकिक — अद्भुत; अनोखा
नौ — नवुं; नया
आह्वान — पडकार; ललकार
स्वर्गीय – स्वर्गस्थ; स्वर्गमें गया हुआ
कौंधना — चमकना
मासमान — प्रकाशित
स्याह — काळुं; काला
नज़ारा — दृश्य
पोसना — पोषवुं, उछेरवु
भीषणकाय—बहु भारे शरीरवाळु; महाकाय, भीमकाय, बड़े भारी शरीरवाला
सहचरी — सखी, मित्र
हिमक्षेत्र — बर्फ़का मैदान

१४. समुद्र और उसकी मछलियाँ

तिगुना — त्रणगणुं; तीन गुना, तीन बार अधिक
गहराई — ऊंडाण; गहरापन
थाह — ताग, माप; नाप, अंत, पार
कामयाबी — सफलता
औसत — सरेराश; सामान्य
रेगिस्तान—रण; मरुभूमि, रेतीला मैदान
खूंखार — क्रूर, भयकर
क़िस्म — जात; प्रकार
मालूम होना — जाणवा मळवु; पता चलना, ज्ञान होना
आम तौर पर—सामान्यतः, साधारणतया
फेफड़ा — फेफसु; छातीके नीचेका वह अग जिससे सास लेते हैं
खुश्की — शुष्क स्थल
दुम — पूछडी; पुच्छ, पूंछ
घडियाल — मगर; ग्राह, बड़ा हिंसक जलचर
झील — सरोवर
बरदाश्त करना — सहन करना
तह — सपाटी; तल, ऊपरी भाग
भीतरी—अदरनु; अदरका,अंदरूनी
सागरप्रवाह—समुद्रका प्रवाह, गति
भाना — गमवुं; पसंद करना
झालर — झूल, कोर; किनारके आकारकी लटकती हुई कोई चीज
पख — पांख; पंख
लुभावनी — मोहक, आकर्षक
विराटकाय — मोटा शरीरवाळी; बड़े डीलवाली

जबड़ा — जडबुं; मुंहके अंदरकी
वे हड्डियाँ जिनमें दाढ़ें जड़ी
होती हैं

चौड़ा — पहोळुं; लंबाका उल्टा

गैलन — गेलन; प्रवाहीका एक माप

तलवा — मोढानुं ताळवुं; तालू

फी — दर; प्रत्येक, हरएक

टन — एक वजन - क़रीब ५६ मन

प्राणोंकी बाज़ी लगाना — प्राण
होडमां मूकवा; जानको
खतरेमें डालना

नोकदार — अणीदार; तीक्ष्ण, नुकीला

एहतियात — सावधानी, खबरदारी

जहाजको झोंटा देना — वहाण,
स्टीमरने ऊंधी वाळी देवी;
जहाजको उल्ट देना

तह — तळियुं; तल, पेंदा

दबोचना — गळेथी पकडवुं; गलेसे
पकड़ना

प्राणोंसे हाथ धोना — जीव
गुमाववो; जान गँवाना

सबूत — पुरावो; प्रमाण

आविष्कार — शोध, खोज, प्रक
करण; ईजाद

अथाह — अपार, अमर्याद

विकीरण — (किरणोने) छू
पाडवानी क्रिया; (किरणोंको)
अलग करनेकी क्रिया

केलविन — योरपके नामांकि
भौतिकशास्त्री, जिन्होंने शा
बोसके संशोधनकी प्रशं
की है

डिटेक्टर — शोधी काढनार;
ढूंढनेवाला, खोजनेवाला

वायरलेस — तार विनानुं; बेतार
का तार

सिद्ध — प्राप्त

विरल — अनोखी

विभूति — महान् व्यक्ति

प्रचंड — भयंकर, महान्

द्रव्य — पदार्थ

प्रतिक्रिया — प्रत्याघात

वरना — नहीं तो
आलेखित — नोंधाएल, लखाएल; लिखा हुआ
दाँतों तले उँगली दबाना — आश्चर्यचकित थई जवुं; अचंभेमें पड जाना
संचालनशीलता — वाहकता, उत्तेजना लई जवानी क्रिया; उत्तेजना ले जानेकी क्रिया
संकुचन — संकोचावानी क्रिया; सिकुड़नेकी क्रिया
प्रसरण — विस्तार
स्पंदनशीलता — धडकाट थवानो गुण; कंप, धड़कनेका गुण
जारी — चालू
सुप्तावस्था — अजाग्रत अवस्था
अंजलि — मान, सम्मान

१६. ज्वालामुखीके गर्भमें

उगलना — ओकवुं, पेटमांथी मों वाटे बहार काढवुं; कै करना, पेटमें गई वस्तुको मुँहसे बाहर निकालना
रहस्यका उद्घाटन होना — रहस्यनुं प्रगट थवुं; रहस्यका प्रगट होना
प्रकाशस्तम्भ — तेजःपुंज, प्रकाशका समूह
विगत — वीती गयेल; वीता हुआ
आयोजन — योजना
अभूतपूर्व — कदी न थयुं होय तेवुं; अपूर्व, अनोखा
पास फटकना — नजीक आववुं; नजदीक आना
सिहरना — ध्रूजवुं; काँपना
प्रज्वलित — सळगी उठेल; जलता हुआ, धधकता हुआ
रस्सा — दोरडुं; बहुत मोटी डोरी
इस्पात — पोलाद; फौलाद
शिरस्त्राण — युद्धमां पहेरातो लोढानो टोप; युद्धमें पहनी जानेवाली लोहेकी टोपी
दास्तान — कथा
विषैली — झेरीली; जहरीली
सुगमतापूर्वक — सरळताथी; आसानीसे
तनिक — जराय; जरा भी
अटना — सिसिलीका एक ज्वालामुखी
विसूवियस — इटलीके उत्तरका ज्वालामुखी
गिर्री — गरगडी; गड़गड़ी
अपर्याप्त — अपूरतुं; अधूरा, नाकाफ़ी
ठोस — नक्कर; दृढ, मजबूत
चट्टान — पत्थर, शिला
लावा — ज्वाळामुखी पर्वतमांथी नीकळतो धगधगतो प्रवाही पदार्थ; ज्वालामुखीमें से निकलता गरम प्रवाही पदार्थ

आच्छादित — छवाएल; छाया हुआ
तापक्रम — गरमीका माप
हरारत — गरमी, उष्णता
व्यास — घेरावो; विस्तार, फैलाव
खौलना — उकळवुं; उबलना, खूब गरम होना
तरल — प्रवाही

विक्षुब्ध — क्षोभ पामेल; जिसमें क्षोभ उत्पन्न हुआ हो
गर्त — खाड़ो; गड्ढा
पर्याप्त — पूरतु; काफी
काफ़ूर होना — छू थई जवुं; गायब हो जाना
मजबूरन — पराणे; हठात्, जबरदस्ती

पद्य-विभाग

१. पंथी बढ़े चलो!

चुभना — भोंकावुं; धँसना, गड़ना
सघन — घेरां; घना
अंबर — आकाश; आसमान
विफलता — असफळता; निष्फलता, नाकामयाबी
अथक — वण थाक्ये, अविरत; विना थके, विना रुके

२. बसा ले अपने मनमें प्रीत

रोशन — प्रकाशमय, प्रकाशित
जोत — ज्योति; लौ
डेरा — पडाव; मुकाम
चारोंखूंट — चोतरफ; चारों ओर
शेख — मुसलमानोना धर्मगुरु; इस्लाम धर्मका आचार्य
बरहमन — ब्राह्मण
जाहिरदार — ढोंगी; झूठा दिखावा करनेवाला
संगी — साथी; साथीदार
मीत — मित्र; दोस्त
श्याम-मुरारी — कृष्ण भगवान
नफरत — तिरस्कार; घृणा
आज़ार — रोग; बीमारी
दारू — इलाज, औषध; दवा

३. हमारा वतन

आँखोंका तारा — बहु वहालो; बहुत प्यारा
दरख्त — वृक्ष; पेड़
तैयारियाँ — शोभाशणगार; सजावट
झूमना — डोलवुं; खुशीसे हिलना
सावन — श्रावण मास
फुहार — पाणीनी झीणी छांट, फोरां; पानीके महीन छींटे
लहर — लहेर, मोजां; जलकी हिलोर, मौज

४. पिंजरेका पंखी

गुज़रा हुआ — वीती गयेल; बीता हुआ
जमाना — समय; वक़्त
आशियाना — माळो; घोंसला
टहनी — डाळी; पेड़की शाखा
शबनम — झांकळ बिंदु; ओसकण
कामनी-सी — कामिनी जेवी, सुन्दर स्त्री जेवी; सुंदर औरतके जैसी
मूरत — मूर्ति
आबाद — वसेलुं; बसा हुआ
दम — श्वास; साँस
तड़पना — झूरवुं; किसी चीजके लिये तड़पना
आब — पाणी; पानी, जल
दाना — अन्न; अनाज
इलाही — ईश्वर; खुदा
क़फ़स — पींजरुं; पिंजरा
बदनसीब — भाग्यहीन; कमनसीब
कुनबा — कुटुम्ब
दिल-जला — दुखी दिलवाळो; जिसके दिलमें दर्द भरा हो
कराहना — कणसवुं; दुखसे आह करना
सदा — अवाज, प्रतिध्वनि; पुकार, आवाज
रिहाई — मुक्ति; छुटकारा
काश — 'ईश्वर करे आम थाय' एवो उद्गार; यदि यह संभव हो
अरमान — इच्छा, अभिलाषा
चमन — बाग
गुल — फूल
बेरी — बोरडी; बेरका पेड़
दिन फिरना — नसीब फरवुं; क़िस्मत अच्छी होना
गम — दुःख, शोक
बला — आपत्ति, दुःख; आफत, मुसीबत
बेज़बाँ — मूंगुं; मूक, गूँगा
दुआ — आशिष; आशीर्वाद

५. विश्व-राज्य

विस्तार — फेलावो; फैलावा
काट-छाँट करना — कापकूप करवी; कम करना, टुकड़े करना
अनल — अग्नि
सलिल — पाणी; जल
अनिल — पवन; हवा
संचार — प्रसार, चालवुं ते; फैलना, चलना
व्योम — आकाश
सोम — चन्द्र
पुरुष — आत्मा
रूपाकार — रूप और आकार
ठौर-ठौर — दरेक ठेकाणे; जगह-जगह
बँधना तपना — परिवर्तन, फेरफार

समशीतोष्ण — समान ठंडी गरमी वाळुं; एकसी ठंड और गरमी-वाला
अविकार — विकार-रहित
मनुज — मनुष्य
स्वर्णभूमि — सोना जेवी किमती धरती; सोनेके जैसी मूल्य-वान जमीन
लोहायुध — (लौह + आयुध) लोखंडना शस्त्र; लोहेके हथियार
विग्रह — युद्ध
परिहार — अंत; निराकरण, निव-टारा
परित्राण — रक्षण, बचाव; हिफा-ज़त, रक्षा
दुखें-सुखें — दुःख-सुख पाएँ
क्षत — जखम; घाव
लेप — मलम; मरहम

६. मेरा नया बचपन

अतुलित — जेनी तुलना न थई शके; अनोखा, बेजोड़
चीथड़ा — चीथरूं; फटापुराना कपडा
कुल्ला — कोगळो; गरारा, मुँहमें पानी लेकर फेंकनेकी क्रिया
सुधा — अमृत
किलकारी — हर्षध्वनि; खुशीकी आवाज

मचलना — हठ करना
झाड़ना-पोंछना — धूलको साफ करना
गीला — भीनुं; भीगा हुआ
नीर-युत — पाणी, आंसु भरेल पानीसे, आँसूसे भरे
दमकना — प्रकाशवुं; चमकना
धुली हुई — साफ़, स्वच्छ
मुसकान — मंद हास्य
छैल-छबीली — अलबेली, अनोखी सुन्दर
मतवाली — मस्त
अलबेली — छेलछबीली; अनोखी, सुन्दर
पहेली — कोयडो; उलझन
फन्दा — बंधन, जाळ; पाश, जाल, घेरा
न्यारी — अनोखी; निराली
रंग-रलियाँ — खुशी, आनंद
प्राकृत — कुदरती, नैसर्गिक, स्वा-भाविक
विश्रान्ति — आराम
दृग — नयन, आँख, दृष्टि
आह्लाद — आनंद, खुशी
मंजुल — सुन्दर, मनोहर
तुतलाना — कालुं कालुं बोलवुं (बाळक बोले तेवुं); बालककी तरह टूटे-फूटे शब्द बोलना

७. साथी! दुखी हुए क्यों इतने ?

झेलना — सहन करवुं; बरदाश्त करना, सहन करना
चिर — कायमी; चिरंतन, शाश्वत
सतत — अविरत, वण अटक्ये; हरोज, हमेशा
संघर्ष — द्वंद्व, उथल-पुथल
निष्कर्ष — निश्चित रूपे; अंतमें, वास्तवमें
ईसा — जीसस; ईसु ख्रिस्त
ठुकवाना — ठोकाववुं; गड़वाना
कील — खीला; लोहेकी खूंटी
गहना — घरेणुं; आभूषण, अलंकार
मुहम्मद — मुहम्मद पैगम्बर
यातना — दुःख, कष्ट
मक्का — मुसलमानोंका तीर्थस्थान जो अरबस्तानमें है
दुस्तर — विकट, मुश्केलीथी पार कराय तेवुं; कठिन, जिसे पार करना कठिन हो
अवतार पुरुष — देवनाई पुरुष; दैवी अंशवाला मनुष्य

८. घट

कुटिल — दुष्ट; खराब
कंकड़ — कांकरो; पत्थरका छोटा टुकड़ा
कठोर — कठोर; निर्दय
रज — धूल
मलना — घसवुं, मसळवुं; मांजना, रगड़ना
निर्मम — निर्दय, निष्ठुर
कूप — कूवो; कुआं
टकराना — अथडावुं, भटकावुं; टक्कर खाना
अवलम्ब — आधार
म्रियमाण — अधमुओ; मरेके बराबर
त्राण — छुटकारो; मुक्ति, रिहाई
विवश — लाचार; बेवश, पराधीन
अगम — अमाप, अथाग; अथाह, बहुत गहरा
निमग्न — लीन, एकतार, डूबेल; डूबा हुआ, तन्मय
आर्तनाद — दुखनो पोकार; पीड़ामें निकली हुई आवाज
रिक्तता — एकलवायापणु; खाली-पन, सूनापन
सहसा — एकाएक; एकदमसे
उज्ज्वलतर — वधारे उजळुं, विशेष कीर्तिवाळुं; अधिक साफ, ज्यादा कीर्तिमय
जीवन — पानी, जिन्दगी
उऋण — ऋणमुक्त

९. उषा

आरक्त — रक्तवर्णी; लाल
छिटकाना — फेलाववुं, छाटवुं; चारों ओर फैलाना, [illegible]

प्राची — पूर्व दिशा
अंचल — पालव, छेडो (साडीनो); साड़ीका पल्ला, छोर
रोली — कंकु; कुमकुम
बिखेरना — छांटवु; इधर उधर फैलाना, छिड़कना
स्वर्ण — सोनेरी; सुनहला, सोनेके रंगका
माणिक — लाल रंगका एक रत्न
मदिरा — दारू; शराब
सेंदुर — कंकु; सिंदूर, कुमकुम
टीका — चांल्लो; तिलक
सिमटना — संकोचावु, शरमावुं; लज्जित होना, सिकुड़ना
चितेरा — चित्रकार
अंकित — दोरेल; खींचा हुआ
रक्तिम — लाल रंगका
वाटिका — बाग, उद्यान
कमनीय — सुन्दर, मनोहर
घोलना — घोळवुं, ओगाळवु; मिलाना
अरुणिमा — लालिमा; सुर्खी
हिमकर — चंद्रमा
दुधारा — बेधार, जिसमें दोनों ओर धार हो
निर्मित — बनावेल; रचित, बनाई हुई
गगन-गंगा — आकाश गंगा
लहराना — वहेवु; बहना
क्रीड़ा — रमत; खेल
अरुण — लाल
आभा — प्रकाश, रोशनी, तेज
टोना — कामण; जादू
निधि — भंडार, खज़ाना
अपलक — आंखनो पलकारो कर्या वगर, निर्निमेष; बिना पलक झपकाए, टकटकी लगाए
निहारना — जोवुं; देखना
मुदित — प्रसन्न; खुश
विहंगम — पक्षी
कुल — समुदाय; झुंड
नव नर्तन — नया नृत्य
मुसुकाना — हसवुं; मुस्कुराना
विहँस — हँसकर
अलि — भ्रमर; भौंरा
मलयानिल — मलय पर्वत तरफथी आवतो पवन, सुगंधित पवन; मलय पर्वतकी ओरसे आनेवाली वायु, सुगंधित वायु
तराना — गावानी एक रीत; गानेका एक ढंग

१०. अपनी अपनी मंज़िल

सहारा — मदद, आधार
तड़पना — तडफडवु; छटपटाना, वेदनासे व्याकुल होना
साहिल — किनारा
भाना — गमवुं; अच्छा लगना

सजधज — सजावट, शोभा

रौनक़ — शोभा

चकाचौंध — आंखने आंजे तेवो प्रकाश; आँखोंको चमका देनेवाली रोशनी

हू हक् — शोरबकोर; शोरगुल

बातिल — बातल, रद; निकम्मा, मिथ्या

हक़ — उचित

नक़शा — निशान, चित्र

मुतलक — जरा पण; जरा भी

सरगम — संगीतकी सा-रे-ग-मकी सुरावली

हरदम — हमेशा

मचलना — रिसावु, रढ लेवी; अड़ना, हठ करना

खसलत — स्वभाव, आदत

रगत — मजा, आनंद

रगबत — इच्छा, ख्वाहिश

वहशत — अधीरता

गुलशन — बाग

गुञ्चा — फूलकी कली

रविश — रीत, ढग

हजारा — एक प्रकारका पीला फूल

खुश्क — निरस; शुष्क

कलपना — उदास थवु; ग़मगीन होना

बिगड़ना — नष्ट थवु; बरबाद होना

नारा — पुकार; आवाज़

फलक — आसमान, स्वर्ग

उभारना — उत्तेजित करवुं; बहकाना, उकसाना

सलमा — सोना चाँदीका तार

दिलकश — मनमोहक; दिलको लुभानेवाला, मोहनेवाला

नज़ारा — दृश्य

फसाना — कल्पित कथा

११. चल पड़ी चुपचाप

चिताना — चेतववु; सावधान करना, होशियार करना

स्वपत्ती — पोतानी पांदडी; अपनी पत्ती

चुटकी — चपटी; दो उँगलियोंसे पैदा हुई आवाज़

झुलमुलाना — डोलवुं; झूमना

विश्व-सांस — संसारने जीवाडनार हवा; दुनियाको जीवन देनेवाली वायु

तरु — वृक्ष

वृन्द — झुंड

घोषणा — पुकार; जाहिरात

चहचहाहट — कलरव; पक्षियोंके आनंदका शोर

१२. कलियोंसे

दीर्घ — लांबु; बड़ा

आह — निःश्वास

कुम्हलाना — चीमळावुं;

नाज़ — हावभाव; नखरे

जोग — आवेग
भाजन — पात्र; आधार
मुरझाना — करमावुं; कुम्हलाना
परितोष — संतोष, तृप्ति
लहना — मेळववु; प्राप्त करना
अटलता — स्थिरता, स्थायित्व

१३. राही

फंदा — जाल, बंधन
जियादा — वधारे; ज्यादा, विशेष
नाला — पाणीनु नाळुं; छोटी बरसाती नदी
टीला — टिंबो, टेकरो; मिट्टीका बड़ा ढेर
हिमाले — हिमालय
सीस — माथुं; सर
कुचलना — कचडवुं; पैरोंसे रौंदना
टकराना — अथडावु; धक्का या ठोकर खाना
पीत — प्रीत, प्रेम
झपकना — आखनु मटकुं मारवुं; पलकका गिरना
राह भटकना — आडे रस्ते जवु, खोटे रस्ते जवु; उल्टे रास्ते जाना, रास्ता भूल जाना

१४. झांसीकी रानी

भृकुटी तानना — कोपायमान थवुं; क्रोध करना
गुमी हुई — गुमावेल, खोवायेल; खोई हुई
फिरंगी — योरपके पुर्तगाल देशके रहनेवाले
ठानना — निर्धारवुं; निर्णय करना
सन् सत्तावन — सन् १८५७; इस सालमें अंग्रेजोंके सामने भारतीय राजाओंने राजकीय क्रांति की थी जो निष्फल रही
बुन्देला — बुन्देलखंडके रहनेवाले
हरबोला — पुरानी वीरताकी कहानियाँ गाके सुनानेवाले
मर्दानी — बहादुर, वीर
कानपूरके नाना — इनका मूल नाम धुन्धूपंत था। बाजीराव दूसरेने इन्हें गोद लिया था।
मुंह बोली बहन — धर्मनी बहेन; सगीबहन न होने पर किसीको बहनके तौर पर अपनाना
छबीली — सुन्दर; मोहक
गाथा — कथा
दुर्गा — देवी, शक्ति
स्वयं — पोते; खुद
पुलकित — आनंदित
वार — प्रहार; हमला
दुर्ग — किला
खिलवार — रमत; खेल
महाराष्ट्र-कुलदेवी — मराठोंके कुलकी देवी
आराध्य — पूज्य; उपास्य
भवानी — दुर्गा, देवी; शक्ति

बधाई — वधामणी; शुभ समाचार
सुभट — अच्छा सैनिक
बिरदावलि — यशगाथा, कीर्तिगाथा
चित्रा — चित्रांगदा, अर्जुनकी पत्नी
भवानी — पार्वती
उदित — प्रकट; जाहिर
मुदित — प्रसन्न; खुश
कर — हाथ
भाना — गमवुं; पसंद होना
निःसंतान — बाळक विना, वारस-दार विना; जिसे बालक न हो, बेवारिस
रानी सोकसमानी थी — रानी शोकसे भरी हुई थी
डल्होजी — लार्ड डल्होजी जो करीब सन् १८४९ से १८५५ तक हिन्दुस्तानके गवर्नर जनरल रहे
हरखाना — हर्ष पामवुं; खुश होना
हड़प करना — गळी जवुं, पडावी लेवुं; छीन लेना, अनधिकार कब्जा करना
लावारिस — वारसदार वगर; बे-वारिस, जिसका कोई वारिस न हो
विरानी — वेरान; निर्जन
अनुनय — प्रार्थना; विनती
विकट — भीषण; भयंकर
पैर पसारना — पग पहोळा करवा, जबरदस्तीथी कब्जो जमाववो; अनधिकार कब्जा करना
बिठूर — कानपुरके पासका एक देहात
घात — पतन
ब्रह्म — ब्रह्मदेश; बरमा
गम — दुख-शोक
बेजार — दुखी
सरेआम — जाहेरमां; जाहिरमें, खुल्लमखुल्ला
बिकानी थी — वेचाती हती; बिक रही थी
विषम — भयंकर, असह्य
आहत — घायल
पुरखा — पूर्वज
रणचण्डी — युद्धकी देवी
सोई ज्योति जगानी थी — (स्वतं-त्रतानो) बुझाई गएल दीपक प्रगटाववो हतो; (आजादी का) बुझा हुआ दीपा फिरसे जलाना था
अन्तरतमसे — ठेठ हृदयसे
लखनऊ छावनी गायी थी — लखनौ अग्निनी ज्वाळाओथी घेराई गयु; लखनऊ अग्निकी ज्वालाओंसे घिर गया
उकसाना — उश्केरवु; उत्तेजित करना

वीरवर — बहादुर सैनिक
तातिया — पूरा नाम तातिया टोपे, धुन्धूपन्तका साथी
अज़ीमुल्ला — अयोध्याके आस-पासका एक क्रान्तिकारी
सरनाम — मशहूर
अहमदशाह मौलवी — १८५७ के क्रांतिकारियोंको मदद करनेवाला एक आदमी
ठाकुर कुँवरसिंह — बिहारके एक ठाकुर जिन्होंने १८५७ के ग़दरमें हिस्सा लिया था
अभिराम — सुन्दर
गगन — आसमान, आकाश
जुर्म — अपराध; गुनाह
लेफ्टिनेन्ट वोकर — झाँसीका एक अंग्रेज अफसर
हैरानी — हेरानी; परेशानी, आश्चर्य
कालपी — कानपुरके पासकी एक जगह
सिधारना — सिधाववु, जवु; जाना, प्रस्थान करना
जनरल स्मिथ — एक अंग्रेज सेनापति
मुँहकी खाना — धूळ चाटता थवुं, मान भंग थवुं; बेइज्जत होना, दुर्दशा होना
मार मचाना — कतल चलाववी; मारकाट करना
ह्यू रोज — एक अंग्रेज सेनापति
बहुतेरे — घणाय; बहुतसे
वार पर वार — प्रहार पर प्रहार
दिव्य — अलौकिक, भव्य
सँवारना — सजवु, रचवुं; रचना, सजाना
कृतज्ञ — आभारवश
अविनाशी — चिरंजीव; कायमी, जिसका नाश न हो
मदमाती — मस्त
अमिट — शाश्वत; कायमी, जिसका नाश न हो

१५. वर्षा-वर्णन

तलक — सुधी; तक
तौर — हाल, स्थिति
समाँ — समय; वक़्त
पुरवा — पूर्वकी ओरसे आनेवाली हवा
दुहाई — आण; प्रभाव
पछवा — पश्चिमकी ओरसे आनेवाली हवा
खुदाई — ईश्वरता; ख़ुदाकी शान
पै — ऊपर; पर
बरपा — व्यापेल, मचेल, उठा हुआ, मचा हुआ
अब्र — बादल
रंग बरंग — रंग बेरंगी; अनोखे रंगके

रिसाला — रसालो; घुड़सवारोंकी सेना
चर्ख — आसमान, आकाश
छावनी — छावणी; डेरा
मुहिम — लडाई, चडाई; आक्रमण, युद्ध
हमराह — सार्थीदार, साथे चाल-नार; साथी, साथ चलनेवाला
बाढ़ — मारो; लगातार चलना
दहलना — भयथी थडकवु; भयसे कांप उठना
दड़ेड़ा — घोध; ज़ोरकी धारा
बेड़ा डुबोना — पायमाल करवु; नाश करना, खत्म करना
कौंधना — झबकवुं; चमकना
जन्नत — स्वर्ग
कोस — गाउ; दो मीलका अन्तर
निगाह — नजर, दृष्टि
नक़ाब — घूंघट
तह करना — समेटवु, वाळी लेवुं; मोड़कर समेटना
गुस्ल — स्नान
सेहत — तंदुरस्ती
गुस्ले सेहत करना — लांबी मांदगी पछी पहेली वार स्नान करवुं, ताजा थवुं; बीमारीसे अच्छा होना, ताजा होना
सब्ज़ — लीलुं; हरा
खिलअत — सिरपाव, मानने पोशाक; राजाकी ओरसे दी जाती सम्मान-सूचक पोशाक
कोह — पहाड; पर्वत
दश्त — जंगल
मामूर — छवाएल, पूर्ण; छाया हुआ, ढँका हुआ
नूर — ज्योति, प्रकाश
बटिया — केडी; राही, पगदंडी
नमूदार — जाहेर, सरियाम; प्रगट
रहवार — पथिक, मुसाफिर; राह चलनेवाला
संग — पत्थर
शजर — वृक्ष
वर्दी — गणवेश; युनिफार्म
आलम — दुनिया, संसार
लाजवर्द — घेरो आसमानी रंग; गहरा नीला रंग
पटे हुए — भरपूर; छाए हुए
कुहसार — पहाड़ या पहाड़ी प्रदेश
दूल्हा — वर, पति
अशजार — (शजरका ब०व०) वृक्ष
चिंघाड़ना — बोलना, चिल्लाना
हर सू — हर तरफ
गोया — जाणे के; मानो
पैठना — पेसवुं; दाखिल होना
सर पै उठाना — उधम मचाववो; तंग करना
शुक्र गुज़ार — आभारी

ता — सुधी; तक
जमादात — पत्थर, मिट्टी वगैरा पदार्थ
सिसकना — डूसका भरवा; हिचकियाँ लेना
जाँ — जान, जीव
शाँ — शान, शोभा
झील — सरोवर
खाक — धूल
थाह — ताग, अत, पार
मखफी — छिपा, गुप्त
उगलना — ओकवु, पेटमाथी बहार काडवु; कै करना, पेटमें से बाहर निकालना
अम्बार — ढगलो; ढेर
वीरबहूटियाँ — इन्द्रगोप जीवडु; छोटा लाल रंगका कीड़ा, इन्द्रवधू
गुलनार — दाडमनुं फूल, अनारका फूल
मौज — पाणीनु मोजुं; पानीकी तरंग
डरानी — भयानक, डरावनी
थपड़ — थप्पड़; चपत, मार
मल्लाह — नाविक; केवट, माँझी
औसाँ — होश-कोश; सुध-बुध
निगहबाँ — रक्षक
मँझधार — प्रवाहकी मध्य धारा
रौ — गति, वेग
खतरा — भय; डर

१६. खुदाकी तारीफ़

तारीफ़ — वखाण; प्रशंसा
तला — तळियुं; किसी वस्तुकी नीचेकी सतह
फ़र्श — बिछानु; बिछावन
खाकी — खाखी (रंग); मिट्टीके रंगका
लाजवर्द — घेरो आसमानी रंग; गहरा नीला रंग
सायबाँ — छाछंटियुं; मकानके आगे छायाके लिये बनाई गई छाजन या छप्पर
बेलबूटे — फूल अने वेल; फूल और लता
खुशनुमाँ — सुंदर
सब्ज — लीलु; हरा
खिलअत — सिरपाव, मानतो पोशाक; राजाकी ओरसे दी जाती सम्मान-सूचक पोशाक
जवाँ — युवान, जवान
खुशरंग — सुंदर रंगका
खुशबू — सुवासित; अच्छी गंधवाले
खाक — धूल
खंडर — खंडेर; खँडहर
गुलसिताँ — बाग
खुश जायका — स्वादिष्ठ
शीरींदहाँ — सुंदर मुँह (जीभ) वाला
चश्मा — झरणुं; सोता, झरना
मेहरबाँ — कृपावंत; दयालु
मकाँ — मकान
चुवाया — वरसाव्यु; टपकाया, बरसाया

चहकना — कलरव करवो; आनंदसे (पक्षियोंका) आवाज करना
तस्बीहख़्वाँ — गुणगान करनेवाली
आशियाँ — माळो; आशियाना, घोंसला
पर — पाँख; पंख
रोज़ीरसाँ — भरणपोषण करनार; गुज़ारा करनेवाली
खुशइना — सारी लगामवाळो; अच्छी बागवाला
रहमत — कृपा, दया
नेमत — दुर्लभ; क़ीमती चीज
मुयस्सर — प्राप्त, उपलब्ध, सुलभ
क़द्रदाँ — कदरदान, गुणग्राही; कदर करनेवाला, गुणग्राही
आब — पानी
रवाँ — प्रवाह
आबेरवाँ — पानीका प्रवाह
रायगाँ — व्यर्थ; निकम्मा

१७. तुकारामके अभंग

औरगूं — बीजाथी; अन्य किसीसे
काज — काम
कामिनीके — स्त्रीना; स्त्रीके
वित — धन, वित्त
पूत — पुत्र; लड़का
जिगते — जेनाथी; जिससे
निकसे — निकले
कहया — कहेवुं; कहना
हात पड़ना — मळवुं, पकडाई जवुं; मिलना, पकड़ा जाना

मारत — मारे छे; मारता है
फोरत — फोडे छे; फोड़ता है
डोय — मस्तक; सिर
सुरा — स्वर, ध्वनि
साहे — सहन करे
निवरे तोय — हीरो त्यारे ज मळे; हीरा तभी प्राप्त हो
भंडा — सार्थक
जिन्हसुं — जेनाथी; जिनने
बिरला — विरल, सोमाथी कोई एकाद; सौ में से कोई एक
केते — क्यां; कहाँ
सोहे — सारुं लागे छे, शोभे छे; अच्छा लगता है
उबारना — उद्धार करवो; उद्धार करना
कटी — कमर

१८. संतवाणी

कबीर

मोको — मने; मुझको
देवल — मंदिर
काबा — मुसलमानोंका तीर्थस्थान
नूर — सुन्दरता
ताकी — तेनी; उसकी
को — कोण; कौन
मन्दा — हलकट; ओछा, नीच
हिरदे — हृदयमें
कयैं — कहेता फरे; कहते फिरें
नरकहिं जाहिंगे — नर्कमां ज जशे; नर्कमें ही जावेंगे

लेहेंड़े — टोळुं, समूह; झुण्ड, टोली
पाँत — हार; लाइन, पंक्ति, क़तार
लाल—एक जातनुं रत्न; रत्न विशेष
बोरियाँ — कोथळा; बड़ी थैलियाँ
जमात — संगठन
लोय — लूओ; टुकड़ा, लोया

तुलसीदास

कुसल — कुशल, चतुर; होशियार
जे आचरहिं — जे आचरण करे छे; जो आचरण करते हैं
न घने रे — घणाय नथी, बहुतसे नहीं हैं

मलूकदास

हिरदै — हृदयमें
तेई — एने ज; उन्हें ही
कुंजर — हाथी
पसू — जानवर, पशु
साहिब — परमात्मा
सूरमा लेख — वीरता भर्या काम; बहादुरीके काम

एकनाथ

'एका' — एकनाथ
जनार्दन — एकनाथना इष्ट देव; एकनाथके आराध्य देव, भगवान

गरीबदास

एकै — एक ज; एक ही
गढ़े सब भांड़े — बधा वासण घडयां; सब बरतन बनाये

सरजनहारा — बनावनार, सरजनहार; बनानेवाला

दादूदयाल

पै — पण; लेकिन

नानक

जाया — जन्म आपेल; पैदा किया हुआ
औलिया — फकीर; धर्मगुरु
नाहक — व्यर्थ
पोषनेको काया — शरीरने पोषण आपवा माटे; शरीरको मोटा बनानेके लिये

नामदेव

जोग-जग्य — योगविद्या अने यज्ञ वगेरेथी; योगविद्या, यज्ञ आदिसे
कहा सरै — शुं वळे; शुं अर्थ सरे; क्या काम बनता है
ओसों प्यास न भागिहै — झांकळना पाणीथी तरस नहीं छीपे; ओससे प्यास नहीं दूर होगी

रैदास

जब लगि — ज्यां सुधी; जब तक
एक न पेखा — बधाने एक नजरे, समान भावे न जोवा; सबको एक नजरसे न देखना
वेद, पुराण—हिन्दुओंके धार्मिक ग्रंथ
कुतेब, कुरान — मुसलमानोंकी धार्मिक पुस्तकें